हिंदी

कक्षा – 8

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

संस्करण : 2016

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : आर. एस. टी. बी. वाटरमार्क
80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2-2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाऐगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोगः
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

प्राक्कथन

बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन होना जरूरी है, तभी विकास की गति तेज होती है। विकास में सहायक कई तत्वों के अलावा शिक्षा भी एक प्रमुख तत्व है। विद्यालयी शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यचर्या को समय–समय पर बदलना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण क्रियाओं में 'विद्यार्थी' केन्द्र के रूप में है। हमारी सिखाने की प्रक्रिया इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर समझ कर ज्ञान का निर्माण करे। उसके सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्यादा स्वतंत्रता दी जाए, इसके लिए शिक्षक एक सहयोगी के रूप में कार्य करे। पाठ्यचर्या को सही रूप में पहुँचाने के लिए पाठ्यपुस्तक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः बदलती पाठ्यचर्या के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन कर राज्य सरकार द्वारा नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार कराई गई है।

पाठ्यपुस्तक तैयार करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक सरल, सुगम, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य एवं आकर्षक हो, जिससे विद्यार्थी सरल भाषा, चित्रों एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात् कर सकें। साथ ही वह अपने सामाजिक एवं स्थानीय परिवेश से जुड़े तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ एवं निष्ठा बनाते हुए एक अच्छे नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित कर सके।

शिक्षकों से मेरा विशेष आग्रह है कि इस पुस्तक को पूर्ण कराने तक ही सीमित नहीं रखें, अपितु पाठ्यक्रम एवं अपने अनुभव को आधार बनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करें कि बालक को सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें एवं विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर पाठ्यपुस्तक विकास में सहयोग के लिए उन समस्त राजकीय एवं निजी संस्थानों, संगठनों यथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राज्य सरकार, बिहार सरकार, उत्तराखण्ड सरकार, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, विद्याभवन उदयपुर का पुस्तकालय एवं लेखकों,समाचार पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है जिन्होंने पाठ्यपुस्तक निर्माण में सामग्री उपलब्ध कराने एवं चयन में सहयोग दिया। हमारे प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्था, संगठन और वेबसाइट का नाम छूट गया हो तो हम उनके आभारी रहते हुए क्षमा प्रार्थी हैं। इस संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर आगामी संस्करणों में उनका नाम शामिल कर लिया जाएगा।

पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु श्री कुंजीलाल मीणा, शासन सचिव, प्रारंभिक शिक्षा, श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा एवं आयुक्त राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, श्री बाबूलाल मीणा, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं श्री बी. एल. जाटावत, आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर,

राजस्थान सरकार का सतत् मार्गदर्शन एवं अमूल्य सुझाव संस्थान को प्राप्त होते रहे हैं। अतः संस्थान हृदय से आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसमें सेम्युअल एम., चीफ यूनिसेफ राजस्थान जयपुर, सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ एवं यूनिसेफ से संबंधित अन्य सभी अधिकारियों के सहयोग के लिए संस्थान आभारी है। संस्थान उन सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों का, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य संपादन में सहयोग रहा है, उनकी प्रशंसा करता है।

मुझे इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और अध्ययन–अध्यापन एवं विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी।

विचारों एवं सुझावों को महत्त्व देना लोकतंत्र का गुण है। अतः राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर सदैव इस पुस्तक को और श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेगा।

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक :	विनीता बोहरा, निदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
मुख्य समन्वयक :	नारायण लाल प्रजापत, उपनिदेशक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर
समन्वयक :	दीपिका पंड्या, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर
लेखकगण :	डॉ. विमलेश कुमार पारीक, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि., तेजावाला, सांगानेर, जयपुर **(संयोजक)**
	जगजितेंद्र सिंह, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., गेगा का खेड़ा, भीलवाड़ा
	डॉ. मूलचंद बोहरा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., सियाणा, बीकानेर
	बद्रीविशाल व्यास, प्रधानाध्यापक, रा.उ.प्रा.वि., बड़ाबाग, जैसलमेर
	नरेंद्र वासु, वरिष्ठ अध्यापक, रा.मा.वि., जेठवाई, जैसलमेर
	सीताराम शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., लूलवा, मसूदा, अजमेर
	विद्याराम गुर्जर, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., केकींदड़ा, पाली
	नरेश कुमार जैन, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. कासीमपुर, धौलपुर
	डॉ. सुजाता शर्मा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., चाकसू, जयपुर
	रणछोड़ लाल डामोर, व्याख्याता, रा.वरि.उपा.संस्कृत विद्यालय, बडला खेरवाड़ा, उदयपुर
	डॉ. मदन गोपाल लढा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., लूणकरनसर, बीकानेर
	विमलेश कुमार शर्मा, अध्यापक, रा.प्रा.वि., ढाणी रामगढ़, सवाई माधोपुर
आवरण एवं सज्जा:	डॉ. जगदीश कुमावत, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर
चित्रांकन :	जगदीश नन्दवाना, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., राजसमंद
	किशोर मीणा, सहा. प्रो. अमिठी विश्वविद्यालय, जयपुर
तकनीकी सहयोग :	हेमन्त आमेटा, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर
कम्प्यूटर ग्राफिक्स :	सिमेटिक्स माइनिंग प्रा.लि., देहरादून, (उत्तराखण्ड)

शिक्षकों से...

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुःगुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

समय के साथ बदलाव स्वाभाविक है। समय–समय पर आए शैक्षिक सुधारों के सुझावों को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक तैयार की गई है। यह पारंपरिक भाषा शिक्षण की कई सीमा से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इसलिए पाठ्यसामग्री का चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री चयन में राजस्थानी परिवेश को प्रधानता दी गई है। सामग्री चयन करते समय संवैधानिक मूल्यों, जेंडर संवेदनशीलता, विशेष योग्यजन, स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि मुद्दों को भी ध्यान में रखा गया है। पाठों के माध्यम से देशभक्ति, जीवदया, जल संरक्षण, प्रकृति प्रेम, मानवीय संवेदना, स्वावलंबन, नैतिक मूल्यों, पर्यावरण संरक्षण आदि को विकसित करने की कोशिश की गई, जिनसे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। पाठ्यपुस्तक में हिंदी की कविता, कहानी, प्रेरक प्रसंग, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य, जीवनी, एकांकी, पत्र, आत्मकथा आदि विधाओं का समावेश किया गया है। बच्चों के स्तर व रुचि को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध लेखकों–कवियों की स्थापित रचनाएँ ली गई हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त रोचक सामग्रियाँ भी दी गई हैं जो बच्चों में पढ़ने के प्रति ललक, पुस्तकालय से जुड़ाव, विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली हैं जो 'केवल पढ़ने के लिए' शीर्षक से दी गई हैं। उक्त सामग्री मूल्यांकन प्रक्रिया से मुक्त है। शिक्षण के क्रम में पाठ्यसामग्रियों की चर्चा अवश्य की जानी चाहिए।

गतिविधियाँ इस प्रकार से बनाई गई हैं कि जिससे बच्चों को रटने की अपेक्षा समझने, करके सीखने, ज्ञान के अन्य बाह्य स्रोतों (अभिभावक, जन प्रतिनिधि, विषयवेत्ता, पुस्तकालय, समाज, आधुनिक तकनीकी) से सीखने हेतु प्रेरित किया गया है। कई अभ्यास प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि विषयों में विद्यार्थी की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। पाठ पर केंद्रित अभ्यास प्रश्नों में प्रश्नों के विविध प्रकारों का समावेश किया गया है जो जगत को समझने, बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से रूबरू कराने तथा विषयवस्तु को समझने में मदद करते हैं।

'भाषा की बात' में व्याकरण के विभिन्न बिंदुओं को सहज, सरल और व्यावहारिक रूप में बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। साथ ही भाषा की बारीकियों को भी समझाने का प्रयास किया गया है। बच्चे स्वयं रचना कर सकें इसलिए सृजनात्मक गतिविधियों को भी 'सृजन' स्तम्भ में जोड़ा गया है।

पाठ से आगे विषयवस्तु से संबद्ध अतिरिक्त ज्ञान, ज्ञान को व्यवहार में उतारना, कौशल विकास आदि को समाहित किया गया है। बच्चे को पाठ्यपुस्तक से परे समाज व दुनिया से जोड़ने की कोशिश की गई है। कल्पना, चिंतन, विश्लेषण व निर्णय लेने की क्षमता बच्चे में विकसित हो सके, ऐसी गतिविधियों का भी समावेश है। भाषा के बदलते रूपों का भी परिचय करवाया गया है।

भाषा का दायित्व चिंतन, मनन, विश्लेषण, तर्क, निर्णय लेना आदि कौशल विकसित करना ही नहीं बल्कि नैतिक, चरित्रवान, सुयोग्य नागरिक तैयार करना भी है। इसके लिए पाठ के अंत में एक–दो विचार दिए गए हैं जो एन.सी.एफ की भावनानुसार बहुभाषिकता को बढ़ावा देने एवं विषयों की दीवार को नीचा करने की ओर बढ़ाया गया एक कदम है।

पाठ्यपुस्तक की अपनी सीमाएँ हैं। पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियाँ संकेत रूप में हैं। ऐसी गतिविधियाँ और बनाएँ तथा अपने अनुभवों से नई गतिविधियाँ बनाकर बच्चों के ज्ञान को समृद्ध करें। व्याकरण में भाषा का जो बिंदु उठाया गया है, उस बिंदु को शिक्षक पूरा पढ़ाएँ, जैसे– विशेषण के किसी एक भेद पर बात की गई है तो वहाँ विशेषण से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी दी जाए, ऐसी आप से अपेक्षा की जाती है।

आप से अनुरोध है कि इस पाठ्यपुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि अथवा सुझाव ध्यान में आए तो निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर को भिजवाएँ ताकि आगामी संस्करणों को और बेहतर बनाया जा सके।

अनुक्रमणिका

क्र. स.	पाठ का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	समर्पण (कविता)	रामावतार त्यागी	1
	हम करें राष्ट्र आराधन (केवल पढ़ने के लिए)		4
2.	सुभागी (कहानी)	प्रेमचंद	5
3.	रणथंभौर की यात्रा (यात्रा वृत्तांत)		12
4.	सुदामा चरित (सवैये)	नरोत्तम दास	19
	हम पृथ्वी की संतान (केवल पढ़ने के लिए)	प्रभु नारायण	22
5	महाराणा प्रताप (कविता)		24
6.	संत कँवरराम (जीवनी)	गोपीचन्द सिंधी	28
7.	भक्ति पदावली (पद)	मीराँबाई	33
	सोनै री चिड़कली रै (केवल पढ़ने के लिए)		36
8.	मिसाइल मैन (साक्षात्कार)		37
9.	जैसलमेर की राजकुमारी (कहानी)	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	43
10.	सुभाषचंद्र बोस का पत्र (पत्र)	सुभाषचंद्र बोस	50
11.	गो संरक्षण से ग्राम विकास (निबंध)		55
	हार नहीं होती (केवल पढ़ने के लिए)	हरिवंश राय बच्चन	60
12.	कुंडलियाँ छंद (कुंडलियाँ)	गिरधर कविराय	61
13.	अपराजिता (कहानी)	शिवानी	64
14.	जीप पर सवार इल्लियाँ (निबंध)	शरद जोशी	70
15.	शक्ति और क्षमा (कविता)	रामधारीसिंह 'दिनकर'	75
	नरेंद्र से विवेकानंद (केवल पढ़ने के लिए)		78
16.	हमारी भी सुनो (एकांकी)		80
17.	हूंकार की कलंगी (लोककथा)	लक्ष्मीकुमारी चूंडावत	89

पाठ 1

समर्पण

मन समर्पित तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती,
तुझे कुछ और भी दूँ।।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन।
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना, वह समर्पण,
मन समर्पित, प्राण अर्पित
रक्त का कण–कण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।
माँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।
तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे द्वार घर–आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।
ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।।

रामावतार त्यागी

शब्दार्थ

तृण	–	तिनका	घनेरी	–	सघन, गहरी
भाल	–	ललाट, मस्तक	अकिंचन	–	गरीब
सुमन	–	फूल, पुष्प			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कवि किसके प्रति समर्पित होने की बात कह रहा है?
2. 'भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी' से क्या तात्पर्य है?
3. कवि किस–किस से क्षमा माँगता है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. समर्पण कविता के माध्यम से कवि हमें संदेश देना चाहता है–

   (क) सर्वस्व समर्पण का (ख) स्वाभिमान का

   (ग) परोपकार करने का (घ) स्वावलंबन का ( )

2. कविता के अनुसार हम ऋणी हैं–

   (क) मातृभूमि के (ख) साहूकार के

   (ग) डॉक्टर के (घ) किसान के ( )

3. थाल में भाल सजाकर लाने की बात कही है–

   (क) प्राप्ति के लिए (ख) स्वार्थ के लिए

   (ग) शील के लिए (घ) समर्पण के लिए ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

1. माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं ....। (अकिंचन / निवेदन)
2. मन समर्पित .... अर्पित, रक्त का कण–कण समर्पित। (धरती / प्राण)
3. तोड़ता हूँ .... का बंधन। (मोह / क्षमा)
4. ....का तृण–तृण समर्पित। (सुमन / नीड़)

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता में किसके चरण की धूल भाल पर मलने की बात कही है?
2. कवि 'माँ' का ऋण कैसे उतारना चाहता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए

(क) मन समर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित।

(ख) ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित।

(ग) स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित।

2. कविता में कवि मातृभूमि पर क्या–क्या न्योछावर कर देना चाहता है? अपने विचार विस्तार से लिखिए।

भाषा की बात

1. नीचे लिखे पदों में समास का नाम बताइए–
   क्षण–क्षण, मोह–बन्धन, घर–आँगन
2. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–
   तलवार, धरती, सुमन, चमन
3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–
   निवेदन, अर्पित, भाल, क्षमा
4. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए–
   आशिस, सपन, अरपित, रिण

पाठ से आगे

1. हमारे लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि है। हम ऐसे क्या कार्य कर सकते हैं, जिनसे हमारे राष्ट्र का विकास हो सके, लिखिए।
2. देश की सेवा में हम सब क्या–क्या कर सकते हैं? समूह में चर्चा कर लिखिए।

सृजन

'मेरा संकलन' में देशभक्ति गीतों को लिखिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"जहाँ समर्पण की वृत्ति होती है, वहाँ अंतःकरण शुद्ध होता है। समर्पण जितना बढ़ता है – जीवन में सौम्यता, सरलता, शुद्धता, निर्मलता उतनी ही आती रहती है।

केवल पढ़ने के लिए

हम करें राष्ट्र आराधन

हम करें राष्ट्र आराधन,
तन से, मन से, धन से,
तन, मन, धन, जीवन से,
हम करें राष्ट्र आराधन।

अंतर से, मुख से, कृति से,
निश्चल हो निर्मल मति से,
श्रद्धा से, मस्तक नति से,
हम करें राष्ट्र अभिवादन।।

अपने हँसते शैशव से,
अपने खिलते यौवन से,
प्रौढ़ता पूर्ण जीवन से,
हम करें राष्ट्र का अर्चन।।

अपने अतीत को पढ़कर,
अपना इतिहास उलटकर,
अपना भवितव्य समझकर,
हम करें राष्ट्र का चिंतन।।

हैं याद हमें युग–युग की,
जलती अनेक घटनाएँ,
जो माँ की सेवा पथ पर,
आयीं बनकर विपदाएँ।

हमने अभिषेक किया था,
जननी का अरि–षोणित से,
हमने श्रृंगार किया था,
माता का अरि–मुण्डों से।।

पाठ 2

सुभागी

तुलसी महतो अपनी लड़की सुभागी से बहुत प्यार करते थे। छोटी उम्र में भी वह घर के काम में चतुर और खेती–बाड़ी के काम में निपुण थी। उसका भाई रामू जो उम्र में बड़ा था, बड़ा ही कामचोर और आवारा था।

तुलसी ने सुभागी और रामू दोनों की शादी कर दी। थोड़े दिन बीते। अचानक एक दिन बड़ी आफ़त आ गई। सुभागी बहुत छोटी उम्र में ही विधवा हो गई। सुभागी के दुःख की तो सीमा ही न थी। बेचारी को अपना जीवन पहाड़ जैसा लगने लगा था।

कुछ साल बीते। लोग तुलसी महतो पर दबाव डालने लगे कि लड़की की कहीं दूसरी शादी कर दो। आज कल कोई इसे बुरा नहीं मानता है, तो क्यों सोच–विचार करते हो?

तुलसी ने कहा, ''भाई मैं तो तैयार हूँ, लेकिन सुभागी भी तो माने। वह किसी तरह राज़ी नहीं होती।''

हरिहर ने सुभागी को समझाकर कहा, ''बेटी, हम तेरे ही भले के लिए कहते हैं। माँ–बाप अब बूढ़े हो गए हैं, उनका क्या भरोसा। तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी?''

सुभागी ने सिर झुकाकर कहा, ''आपकी बात समझ रही हूँ, लेकिन मेरा मन शादी करने को नहीं कहता। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ। जो काम आप कहो, वह सिर–आँखों के बल करूँगी मगर शादी के लिए मुझसे न कहिए।''

उजड्ड रामू बोला, ''तुम अगर सोचती हो कि भैया कमाएँगे और मैं बैठी मौज़ करूँगी, तो इस भरोसे न रहना।''

सुभागी ने गर्व से भरे स्वर में कहा, ''मैंने आपका आसरा भी नहीं किया और भगवान ने चाहा तो कभी करूँगी भी नहीं।'' अब सुभागी उनके साथ ही रहने लगी।

उसने घर का सारा काम सँभाल लिया। बेचारी पहर रात से उठकर कूटने–पीसने में लग जाती, चौका–बरतन करती, गोबर थापती, खेत में काम करने चली जाती। दोपहर को आकर जल्दी–जल्दी खाना पकाकर सबको खिलाती।

रात को कभी माँ के सिर में तेल लगाती तो कभी उसकी देह दबाती। जहाँ

तक उसका बस चलता, माँ–बाप को कोई काम न करने देती। हाँ, भाई को न रोकती। सोचती, यह तो जवान आदमी है, ये काम न करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी?

मगर रामू को यह बुरा लगता। अम्मा और दादा को तिनका तक नहीं उठाने देती और मुझे पीसना चाहती है। यहाँ तक कि एक दिन वह आपे से बाहर हो गया। सुभागी से बोला, ''अगर उन लोगों से बड़ा मोह है, तो उनको लेकर अलग क्यों नहीं रहती हो! तब सेवा करो तो मालूम हो कि सेवा कड़वी लगती है या मीठी। दूसरों के बल पर वाहवाही लेना आसान है। बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे।''

सुभागी ने तो कुछ जवाब न दिया। बात बढ़ जाने का भय था। मगर उसके माँ–बाप बैठे सुन रहे थे। महतो से न रहा गया। बोले, ''क्या है रामू, उस गरीबन से क्यों लड़ते हो?''

रामू पास आकर बोला, ''तुम क्यों बीच में कूद पड़े, मैं तो उसको कह रहा हूँ।''

तुलसी–''जब तक मैं ज़िंदा हूँ, तुम उसे कुछ नहीं कह सकते। मेरे पीछे जो चाहे करना। बेचारी का घर में रहना मुश्किल कर दिया है।''

रामू–''आपको बेटी बहुत प्यारी है, तो उसे गले में बाँधकर रखिए। मुझसे तो नहीं रुका जाता।''

तुलसी–''अच्छी बात है। अगर तुम्हारी यह मर्जी है, तो यही होगा। मैं कल गाँव के आदमियों को बुलाकर बँटवारा कर दूँगा। तुम चाहे अलग हो जाओ, सुभागी अलग नहीं होगी।''

रात को तुलसी लेटे तो वह पुरानी बात याद आई। जब रामू के जन्मोत्सव में उन्होंने रुपये कर्ज़ लेकर जलसा किया था और सुभागी पैदा हुई, तो घर में रुपये रहते हुए भी उन्होंने एक कौड़ी तक खर्च न की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय!

दूसरे दिन महतो ने गाँव के आदमियों को इकट्ठा करके कहा, ''पंचो, अब रामू का और मेरा एक घर में निर्वाह नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग इंसाफ़ से जो कुछ मुझे दे दो, वह लेकर अलग हो जाऊँ। रात–दिन की बहस अच्छी नहीं।''

गाँव के मुखिया बाबू सजनसिंह बड़े सज्जन पुरुष थे। उन्होंने रामू को बुलाकर पूछा, ''क्यों भाई, तुम अपने बाप से अलग रहना चाहते हो? तुम्हें शर्म नहीं आती, माँ–बाप को अलग किए देते हो? राम! राम!''

रामू ने ढिठाई के साथ कहा, ''जब एक साथ गुज़र न हो, तो अलग हो जाना ही अच्छा है।''

यह कहता हुआ रामू वहाँ से चलता बना।

तुलसी–''देख लिया आप लोगों ने इसका मिज़ाज? भगवान ने बेटी को दुख दे दिया, नहीं तो मुझे खेती–बाड़ी लेकर क्या करना था। जहाँ रहता, वहीं कमाता खाता। भगवान ऐसा बेटा बैरी को भी न दें। लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय।''

सहसा सुभागी आकर बोली, ''दादा, यह सब बँटवारा मेरे ही कारण तो हो रहा है, मुझे क्यों नहीं अलग कर देते?''

तुलसी ने कहा, ''बेटी, हम तुम्हें न छोड़ेंगे। चाहे संसार छूट जाए।''

गाँव में जहाँ देखो सबके मुँह से सुभागी की तारीफ़ हो रही थी। लड़की नहीं, देवी है। दो मर्दों का

काम भी करती है। उस पर माँ–बाप की सेवा भी किए जाती है। सजनसिंह तो कहते, यह इस जन्म की देवी है।

मगर शायद महतो को यह सुख बहुत दिनों तक भोगना न लिखा था।

सात–आठ दिन से महतो को बहुत तेज़ बुख़ार हुआ है। लक्ष्मी पास बैठी रो रही है। अभी एक क्षण पहले महतो ने पानी माँगा था पर जब तक वह पानी लाए, तब तक उनके हाथ–पाँव ठंडे हो गए। सुभागी उनकी यह दशा देखते ही रामू के घर गई और बोली, ''भैया! चलो, देखो आज दादा न जाने कैसे हुए जाते हैं। सात दिन से बुख़ार नहीं उतरा।''

रामू ने चारपाई पर लेटे–लेटे कहा, ''तो क्या मैं डॉक्टर–हकीम हूँ कि देखने चलूँ? जब तक अच्छे थे, तब तक तो तुम उनके गले का हार बनी हुई थीं। अब जब मरने लगे तो मुझे बुलाने आई हो?''

सुभागी ने फिर उससे कुछ न कहा, सीधे सजनसिंह के पास गई।

उधर सजनसिंह ने ज्यों ही महतो की हालत के बारे में सुना, तुरंत सुभागी के साथ भागे चले आए। वहाँ पहुँचे तो महतो की दशा और भी ख़राब हो चुकी थी। नाड़ी देखी तो बहुत धीमी थी। समझ गए कि ज़िंदगी के दिन पूरे हो गए। सजल नेत्र होकर बोले, ''अब कैसी तबीयत है?''

महतो जैसे नींद से जागकर बोले, ''बहुत अच्छी है भैया! अब तो चलने की बेला है। सुभागी के पिता अब तुम्हीं हो। उसे तुम्हीं को सौंपे जाता हूँ।''

सजनसिंह ने रोते हुए कहा, ''भैया महतो, घबराओ मत, भगवान ने चाहा तो तुम अच्छे हो जाओगे। सुभागी को तो मैंने हमेशा अपनी बेटी ही समझा है और जब तक जिऊँगा, ऐसा ही समझता रहूँगा। तुम निश्चिंत रहो। कुछ और इच्छा हो तो वह भी कह दो।''

महतो ने विनीत नेत्रों से देखकर कहा, ''और नहीं कहूँगा, भैया! भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।''

सजन–''रामू को बुलाकर लाता हूँ। उससे जो भूल–चूक हुई, क्षमा कर दो।''

महतो–''नहीं भैया, उस पापी का मुँह मैं नहीं देखना चाहता।''

इसके बाद गोदान की तैयारी होने लगी। रामू को गाँव भर ने समझाया पर वह अंत्येष्टि करने पर राज़ी न हुआ। कहा, ''जिस पिता ने मरते समय मेरा मुँह देखना स्वीकार न किया, वह न मेरा पिता है, न मैं उसका बेटा हूँ।''

लक्ष्मी ने दाह क्रिया की। सुभागी ने सारी व्यवस्था की। इन थोड़े से दिनों में सुभागी ने न जाने कैसे रुपये जमा कर लिए थे। जब तेरहवीं का सामान आने लगा तो गाँव वालों की आँखें खुल गईं।

तेरहवीं के दिन सारे गाँव के लोगों का भोज हुआ। चारों तरफ़ वाहवाही मच गई।

पिछले पहर का समय था। लोग भोजन करके चले गए थे। लक्ष्मी थककर सो गई। केवल सुभागी बची हुई चीज़े उठा–उठाकर रख रही थी कि ठाकुर सजनसिंह ने आकर कहा, ''अब तुम भी आराम करो बेटी, यह सब काम सवेरे कर लेना।''

सुभागी ने कहा, ''अभी थकी नहीं हूँ दादा! आपने जोड़ लिया? कुल कितने रुपये ख़र्च हुए?''

सजन–''वह पूछकर क्या करोगी बेटी?''

सुभागी–''कुछ नहीं, यों ही।''

सजनसिंह–''कोई तीन हज़ार रुपये होंगे।''

सुभागी ने सकुचाते हुए कहा, ''मैं इन रुपयों की देनदार हूँ।''

पति के देहांत के बाद से ही लक्ष्मी का दाना–पानी छूट गया। सुभागी के आग्रह पर चौके में जाती, मगर निवाला गले से नीचे न उतरता। पचास वर्ष हुए, एक दिन भी ऐसा न हुआ कि पति के बिना खाए उसने खुद खाया हो। अब उस नियम को कैसे तोड़े।

आख़िर उसे खाँसी आने लगी। दुर्बलता ने जल्द ही खाट पर डाल दिया। सुभागी अब क्या करे? ठाकुर साहब के रुपये चुकाने के लिए दिलोज़ान से काम करने की ज़रूरत थी। यहाँ माँ बीमार पड़ गई। अगर बाहर जाए तो माँ अकेली रहती है। उनके पास बैठे तो बाहर काम कौन करे! माँ की दशा देखकर सुभागी समझ गई कि इनका अंतिम समय भी आ पहुँचा है। महतो को भी तो यही बुख़ार हुआ था।

गाँव में और किसे फ़ुर्सत थी कि दौड़–धूप करता। सजनसिंह दोनों वक्त आते। लक्ष्मी की दशा बिगड़ती जा रही थी। यहाँ तक कि पंद्रहवें दिन वह भी संसार से विदा ले गई। उसने अपने अंतिम समय में सुभागी को आशीर्वाद दिया, ''तुम्हारे जैसी बेटी पाकर मैं तर गई। मेरा क्रिया–कर्म तुम्हीं करना। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।''

माता के देहांत के बाद सुभागी के जीवन का केवल एक लक्ष्य रह गया–सजनसिंह के रुपए चुकाना। तीन साल तक सुभागी ने रात को रात और दिन को दिन न समझा। उसकी कार्य–शक्ति और हिम्मत देखकर लोग दाँतों तले अँगुली दबाते थे। दिन भर खेती–बाड़ी का काम करने के बाद वह रात को आटा पीसती। तीसवें दिन तीन सौ रुपये लेकर वह सजनसिंह के पास पहुँच जाती। इसमें कभी नागा न पड़ता।

अब चारों ओर से उसकी शादी के पैगाम आने लगे। सभी उसको अपने घर की बहू बनाना चाहते थे। जिसके घर सुभागी जाएगी, उसके भाग्य फिर जाएँगे। सुभागी यही जवाब देती, ''अभी वह दिन नहीं आया।''

जिस दिन सुभागी ने आख़िरी किस्त चुकाई, उस दिन उसकी खुशी का ठिकाना न था। आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो गया।

वह चलने लगी तो सजनसिंह ने कहा, ''बेटी, तुमसे एक प्रार्थना है। कहो कहूँ, या न कहूँ, मगर वचन दो कि मानोगी।''

सुभागी ने कृतज्ञ भाव से देखकर, ''दादा, आपकी बात न मानूँगी तो किसकी बात मानूँगी?''

सजन–''मैंने अब तक तुमसे इसलिए कुछ नहीं कहा क्योंकि तुम अपने को मेरा देनदार समझ रही थी। अब रुपये चुका दिए। मेरा तुम्हारे ऊपर कोई एहसान नहीं है। बोलो कहूँ?''

सुभागी–''आपकी जो आज्ञा हो।''

सजन–''देखो इनकार न करना, नहीं तो मैं तुम्हें अपना मुँह फिर कभी न दिखाऊँगा।''

सुभागी–''क्या आज्ञा है?''

सजन–''मेरी इच्छा है कि तुम मेरे घर की बहू बनकर मेरे घर को पवित्र करो। मैं जात–पाँत में विश्वास करता हूँ, मगर तुमने मेरे सारे बंधन तोड़ दिए। मेरा लड़का तुम्हारे नाम का पुजारी है। तुमने उसे देखा है। बोलो, मंज़ूर करती हो?''

सुभागी–''दादा, इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।''

सजन–''तुम्हारा सम्मान भगवान कर रहे हैं बेटी! तुम साक्षात भगवती का अवतार हो।''

सुभागी–''मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए ही करेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?''

सजनसिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा, ''बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ–सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?''

प्रेमचंद

शब्दार्थ

गोदान	–	गाय का दान	निवाला	–	कौर
सुहाग	–	सौभाग्य	व्रत	–	प्रण
विनीत	–	विनम्र	अंत्येष्टि	–	अंतिम क्रिया
मिज़ाज	–	तबीयत, स्वभाव	उजड्ड	–	गँवार, बे–लगाम
नागा	–	अंतर			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. तुलसी मेहतो के कितने बच्चे थे?
2. तुलसी मेहतो अपनी बेटी सुभागी से बहुत प्यार करते थे, क्यों?
3. तुलसी मेहतो ने गाँव वालों को क्यों इकट्ठा किया था?
4. सजनसिंह ने सुभागी को अपनी पुत्र वधू के रूप में क्यों चुना?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. सुभागी ने सम्भाल रखा था–
   (क) व्यापार का सारा काम (ख) घर का सारा काम
   (ग) समाज का सारा काम (घ) गाँव का सारा काम ( )
2. "बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे"–यह कहा–
   (क) तुलसी ने (ख) रामू ने
   (ग) सजनसिंह ने (घ) सुभागी ने ( )
3. गाँव के मुखिया सजनसिंह पुरुष थे–
   (क) कठोर (ख) सज्जन
   (ग) धनवान (घ) अक्खड़ ( )

निम्नलिखित वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर सही वाक्य पर (✓) और गलत वाक्य पर (✗) का निशान लगाइए–

1. रामू ने घर का सारा काम–काज संभाल रखा था। ( )
2. रामू ने कहा–"जब एक साथ गुज़र न हो, तो अलग हो जाना ही अच्छा है।" ( )
3. तुलसी ने कहा "बेटी, हम तुम्हें न छोड़ेंगे। चाहे संसार छूट जाए।" ( )
4. लक्ष्मी ने कहा "अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।" ( )
5. "दादा इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।" सुभागी ने कहा। ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभागी ने घर का क्या–क्या काम संभाल रखा था?
2. "लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय" यह किसने और क्यों कहा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. "रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय।" तुलसी ने ऐसा क्यों सोचा?
2. तुलसी महतो ने अंतिम समय सजनसिंह से क्या बात कही?
3. लक्ष्मी ने अंतिम समय सुभागी को क्या आशीर्वाद दिया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभागी के जीवन का कठोर व्रत क्या था और उसने उसे कैसे पूरा किया?
2. कहानी 'सुभागी' का सार अपनी भाषा में लिखिए।

भाषा की बात

1. उसकी कार्य शक्ति और हिम्मत देख लोग दाँतों तले ऊँगली दबाते थे। रेखांकित वाक्यांश एक मुहावरा है, जिसका अर्थ आश्चर्य करना है। आप भी निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   1. लाल–पीला होना। 2. नौ–दो ग्यारह होना।
   3. दुःख की सीमा न रहना। 4. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए–
   तुलसी देख लिया आप लोगों ने इसका मिज़ाज भगवान ने बेटी को दुख दे दिया नहीं तो मुझे खेती बाड़ी लेकर क्या करना था जहाँ रहता वहीं कमाता खाता भगवान ऐसा बेटा बैरी को भी न दे लड़के से लड़की भली जो कुलवंती होय

पाठ से आगे

1. तुलसी महतो और लक्ष्मी अगर सुभागी को घर से अलग कर देते तो क्या होता?
2. अगर सुभागी अपने माता–पिता की सेवा न करती तो उसके माता–पिता का जीवन कैसा होता?

चर्चा करें

1. 'परिश्रम सफलता की कुंजी है', कैसे? आपस में चर्चा कीजिए।
2. मृत्युभोज सामाजिक कुरीति है। हमारे समाज में ऐसी अनेक कुरीतियाँ हैं। उनकी सूची बनाकर एक–एक कुरीति पर एक–एक विद्यार्थी कक्षा में अपने विचार प्रकट करें।
3. हमारे समाज में अनेक अच्छी प्रथाएँ हैं, जैसे संयुक्त परिवार प्रथा आदि। ऐसी अच्छी प्रथाओं पर चर्चा कीजिए।

यह भी करें–

सजनसिंह व सुभागी के संवाद को आधार बनाकर बाल–सभा में मंचन कीजिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"कायर व्यक्ति अपनी मृत्यु से पहले कई बार मर चुकते हैं; किंतु वीर पुरुष जीवन में एक ही बार मरते हैं।"

पाठ 3

रणथंभौर की यात्रा

हठीले हम्मीर की पुण्य धरा रणथंभौर का स्मरण आते ही सभी के मन में इस धरा को देखने की स्वतः ही इच्छा होती है। अब यह क्षेत्र वन्य क्षेत्र के रूप में विकसित है। अरावली एवं विंध्याचल की सुरम्य पर्वतमाला के मध्य स्थित विश्व प्रसिद्ध रणथंभौर बाघ अभयारण्य को देखने की परिवार के सदस्यों की तीव्र उत्कण्ठा हुई सभी ने मिलकर रणथंभौर के भ्रमण का कार्यक्रम तैयार किया। हम सभी 9 अक्टूबर रात्रि 11.00 बजे जयपुर से रेल द्वारा सवाईमाधोपुर के लिए रवाना हुए। एकाएक मेरी बेटी ने पूछा, ''पिताजी यहाँ से सवाईमाधोपुर कितनी दूरी पर है।'' मैंने बेटी को बताया कि रेलमार्ग द्वारा जयपुर से सवाईमाधोपुर की दूरी लगभग 132 किलोमीटर है। हम रात्रि 2.30 बजे सवाईमाधोपुर पहुँचे। वहाँ हमने रेलवे स्टेशन के पास ही एक होटल में कमरा लिया और कुछ समय आराम किया।

प्रातः 5.00 बजे उठकर सभी जल्दी–जल्दी स्नानादि से निवृत्त हो बुकिंग खिड़की के लिए चल पड़े। बुकिंग खिड़की हमारे होटल से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर थी और बुकिंग खिड़की से प्रथम पारी में भ्रमण का टिकिट लेना था। बुकिंग खिड़की से ही उद्यान भ्रमण के लिए जिप्सी या केंटर मिलते हैं, जिसके द्वारा उद्यान का भ्रमण करवाया जाता है। हम सभी प्रातः 6.00 बजे बुकिंग खिड़की पर पहुँच गए। वहाँ से हमने पाँच टिकिट लिए और केंटर में बैठकर प्रातः 6.00 बजे रणथंभौर के लिए निकल पड़े।

मैं आपको बता दूँ कि रणथंभौर भ्रमण के लिए आए पारिवारिक सदस्यों में, मैं, मेरी पत्नी, मेरी दो बेटियाँ शिवांगी व श्रेया तथा एक बेटा शुभम इस प्रकार कुल पाँच सदस्य थे। हम पाँचों केंटर पर सवार होकर रणथंभौर अभयारण्य की ओर निकल पड़े। रणथंभौर बाघ अभयारण्य क्षेत्र की शुरुआत खिलचीपुर ग्राम पंचायत के गणेशधाम तिराहे से होती है, जिसकी दूरी सवाईमाधोपुर रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर है। यहाँ अभयारण्य में प्रवेश के लिए चेक पोस्ट बनी हुई है।

हम बातों ही बातों में गणेशधाम तिराहे पर कब पहुँच गए, पता ही नहीं चला। सच पूछो तो इसके दो कारण थे–एक तो रणथंभौर के प्रति हमारी उत्सुकता और दूसरी ओर बच्चों द्वारा पूछे जा रहे नए–नए प्रश्न।

वैसे तो रणथंभौर की हरीतिमा सवाईमाधोपुर नगर से निकलते ही प्रारंभ हो जाती है, लेकिन गणेशधाम तिराहे के पश्चात् घने जंगल की शुरुआत होती है। हमने साथ में एक गाइड भी लिया था जो हमें नई–नई जानकारियाँ दे रहा था।

ज्यों ही हमने हरियाली से आच्छादित क्षेत्र में प्रवेश किया, उस सुरम्य दृश्य को देखकर सभी रोमांचित हो गए और सभी के चेहरे खिल उठे। सर्वप्रथम हमने मिश्रदरा दरवाज़ा देखा। वहाँ कल–कल करते बहते झरने व गोमुख से गिरता पानी देखा। बहुत ही मनोहारी दृश्य था।

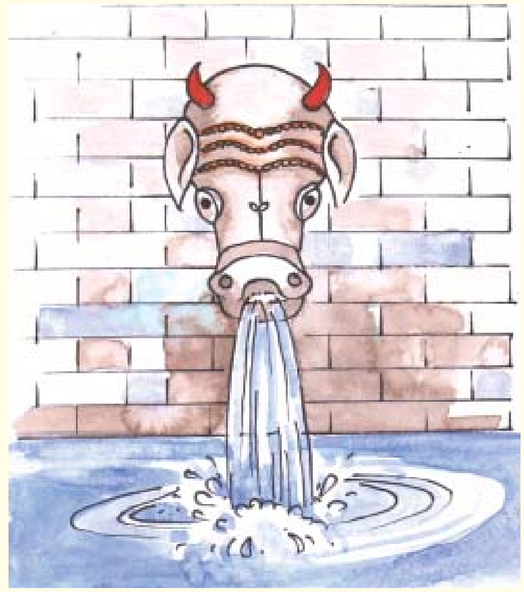

मेरी बेटी शिवांगी ने गाइड से बातों ही बातों में जानकारी ली –

शिवांगी – भैया! यहाँ पानी कहाँ से आ रहा है?

गाइड – पहाड़ों के ऊपरी छोर पर एकत्र पानी बहकर झरने के रूप में यहाँ आ रहा है।

शिवांगी – भैया! यह अभयारण्य क्षेत्र कितने वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है?

गाइड – पूर्व में रणथंभौर बाघ आरक्षित क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 1334.6 वर्ग किलोमीटर था। बाघों की बढ़ती संख्या एवं बाघों के परस्पर टकराव होने की आशंका के कारण इस अभयारण्य क्षेत्र को 1700 वर्ग किलोमीटर तक बढ़ाया गया है।

शिवांगी – बाघों की बढ़ती संख्या एवं बाघों के परस्पर टकराव से क्या तात्पर्य है?

गाइड – पूर्व में बाघों का शिकार हो जाने के कारण बाघों की संख्या घट गई थी। केंद्र व राज्य सरकार तथा वन विभाग के प्रयासों से बाघों के शिकार पर रोक लगी और बाघों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी। बाघ अपना एक निर्धारित क्षेत्र बनाते हैं, जिसका क्षेत्रफल लगभग 2 वर्ग किलोमीटर होता है। उस क्षेत्र में दूसरे बाघ के प्रवेश करने पर उनमें टकराव की स्थिति बन जाती है।

शिवांगी – इस क्षेत्र में लगभग कितने बाघ होंगे?

गाइड – वर्तमान में यहाँ लगभग 55 से 60 बाघ हैं।

इस प्रकार बातें करते हुए और रणथंभौर की छटा को निहारते हुए हम रणथंभौर बाघ अभयारण्य के मुख्य प्रवेश द्वार पर जा पहुँचे।

प्रातः 7.00 बजे ज्यों ही मुख्य द्वार खुला, हमारा केंटर सघन वन क्षेत्र में आगे बढ़ा। बीच–बीच में पड़ने वाले झरने और नाले मोहक दृश्य उपस्थित कर रहे थे। जैसे–जैसे गाड़ियाँ आगे बढ़ती जाती थीं हमारी उत्सुकता भी वैसे–वैसे बढ़ती जा रही थी। धोक के सघन झाड़ीदार वन बाघों के लिए अच्छी आश्रय स्थली है। बाघ खुले में रहना कम पसंद करते हैं।

सबसे पहले हम मलिक तालाब पर पहुँचे। तालाब के किनारे हरिणों का झुंड दिखाई दिया। हरिणों के झुंड में छोटे–छोटे मृग–छौने भी थे। सुनहरी त्वचा पर चकते और अजीब से शृंगों वाले हरिणों के झुंड ज्यों ही हमारी गाड़ी उनके पास पहुँची, वे चौकड़ियाँ भरने लगे ऐसा अद्भुत नजारा पहले कभी नहीं देखा था। मैंने उत्सुकतावश बच्चों की ओर देखा तो बच्चे हरिणों के चित्र कैमरे में कैद करने में मशगूल थे। गाइड ने हरिणों की जानकारी देते हुए कहा कि इन हरिणों को चीतल कहते हैं।

गाइड के निर्देश पर गाड़ी को दाहिनी ओर बढ़ाया गया। यह रास्ता कुछ पथरीला और

ऊबड़–खाबड़ था। गाड़ियों की कूदा–फाँदी और ऊपर नीचे की चाल ने सभी को हिलाकर रख दिया। लगभग 500 मीटर आगे चलने पर एक तालाब दिखाई दिया। उस तालाब में तैरते मगरमच्छों को देखकर बच्चों का मन गद्गद् हो गया। इस तालाब पर विचरण करते सांभर, नीलगाय आदि वन्य प्राणी भी देखे साथ ही विभिन्न प्रकार के पक्षियों की कलरव ध्वनि भी मनमोहक थी। गाइड ने बताया कि इन पक्षियों की चहचहाहट से यह पता लग जाता है कि बाघ किस क्षेत्र में दिखाई दे सकता है। गाइड ने बताया कि सबसे प्रमुख कोल बंदर की मानी जाती है। जब बाघ उस क्षेत्र में आने वाला होता है तो बंदर अजीब प्रकार की आवाज़ निकालकर सभी को सावचेत कर देता है।

गाइड के निर्देश पर हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। थोड़ा आगे चलकर हमारी गाड़ी अचानक रुक गई। गाड़ी के बिलकुल सामने, झरने के किनारे एक बाघ और बाघिन धूप सेकते दिखाई दिए। प्रातःकाल की गुन–गुनी धूप में दोनों मस्त हो बैठे थे। बाघिन बाघ के बालों को अपनी जीभ से साफ कर रही थी। गाइड ने बताया कि इस स्थान का नाम चिड़ीखोह है तथा ये दोनों बाघ बाघिन माँ–बेटे हैं। बाघिन का नाम नूर और बाघ का नाम सुल्तान है। यहाँ रणथंभौर अभयारण्य में बाघों को नाम व नंबर दिए हुए हैं जिससे इनकी पहचान होती है। बाघ–बाघिन की अठखेलियाँ हमने लगभग आधे घंटे तक निहारी। क्या मनमोहक दृश्य था। धूप उनके बदन की चमक को बढ़ा रही थी। काली धारियाँ और सफेद रंग की झाँई ने उनके सुनहरे शरीर की शोभा को कई गुना बढ़ा दिया था। बाघ बहुत सावधान और चौकन्ना वन्य प्राणी होता है। पानी के किनारे पसरे बाघों को हमारा वहाँ जमे रहना अच्छा नहीं लगा होगा। वे दोनों आराम से उठे, अपनी रोबिली मुद्रा में पूँछ उठाई और धीरे–धीरे झाड़ियों के झुरमुट में हमारी नजरों से ओझल हो गए। गाइड के निर्देश पर हमारी गाड़ी आगे बढ़ गई। हमने जंगल में अनेक जंगली जानवर देखे, जिनमें चिंकारा, बघेरा, भालू, लंगूर, बंदर, जंगली बिल्ली व अनेक प्रकार के पक्षी भी थे। गाइड ने बताया कि इस जंगल में लगभग 300 प्रकार के पक्षी हैं।

भ्रमण की समय सीमा नजदीक आ जाने के कारण हम मुख्य द्वार की ओर बढ़े और लगभग 10.30 बजे हम रणथंभौर के ऐतिहासिक दुर्ग के मुख्य द्वार पर पहुँच गए। रणथंभौर दुर्ग को देखते ही जान पड़ता है कि यह इतिहास में बहुत प्राचीन और अभेद्य दुर्ग है। गाइड ने बताया कि इस दुर्ग के निर्माण का कहीं कोई इतिहास नहीं मिलता है। सन् 1300 ईस्वी में यहाँ के प्रतापी राजा राव हम्मीर हुए थे। अतः माना जाता है कि इस दुर्ग का निर्माण 1300 ईस्वी से पूर्व हुआ था।

मेरी बेटी श्रेया ने गाइड से राव हम्मीर के बारे में पूछा। गाइड ने बताया कि राव हम्मीर महान् प्रतापी और शरणागत वत्सल राजा थे। उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के भगोड़े सैनिक माहिमशाह को शरण दी और मरते दम तक उसकी रक्षा की। गाइड ने बताया कि राव हम्मीर चौहान वंशीय शासक जैत्र सिंह के छोटे पुत्र थे।

इस प्रकार जानकारी लेते हुए हम पैदल ही आगे बढ़ रहे थे। चलते–चलते हम दुर्ग के प्रथम द्वार पर पहुँचे। क्या विशाल दरवाज़ा था। देखते ही हमारी आँखें फटी की फटी रह गईं। इसे नोलखा दरवाज़ा कहते हैं। नोलखा दरवाज़े में प्रवेश कर हम दुर्ग में आगे की ओर बढ़े। आगे हम हाथीपोल दरवाज़े पर पहुँचे। यहाँ से दुर्ग की दीवार बिल्कुल सीधी है। कहते हैं कि यहाँ हम्मीर का घोड़ा हम्मीर को लेकर सीधा दुर्ग पर चढ़ा था। हम घोड़े के खुर के निशान देखकर आश्चर्यचकित रह गए।

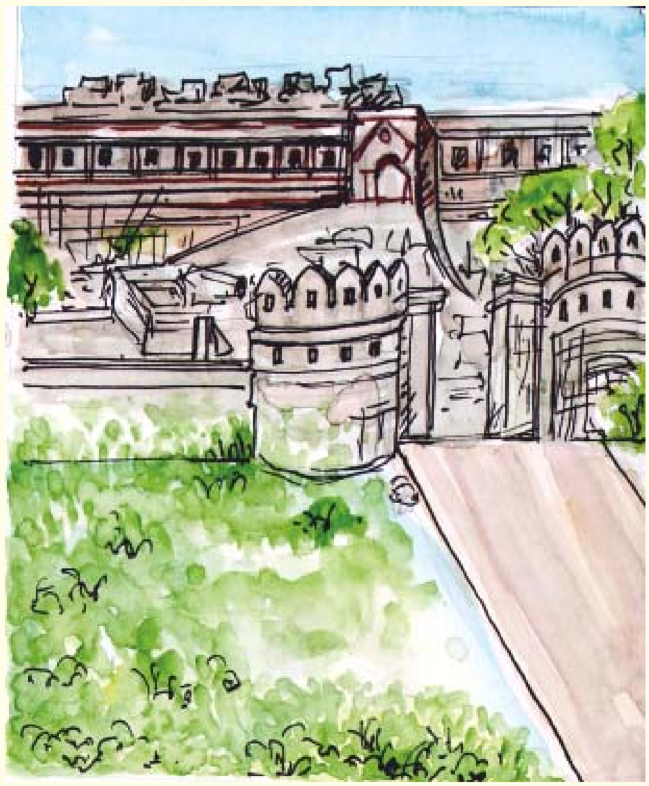

दुर्ग का मनोहारी दृश्य देखते–देखते हम अंधेरी दरवाज़े पर पहुँचे। यहाँ एक साथ तीन दरवाज़े हैं तथा इन दरवाज़ों में अंधेरा रहता है। अंधेरी दरवाज़े को पार कर हम दुर्ग के ऊपरी छोर पर जा पहुँचे। वहाँ से चारों ओर दृष्टि डालने पर हरियाली से आच्छादित जंगल बहुत ही सुंदर दिखाई दे रहा था।

यहाँ से थोड़े आगे बढ़ने पर हमें बत्तीस खंभ की छतरी दिखाई दी। लगभग एक किलोमीटर की दुर्ग की दुर्गम चढ़ाई चढ़ने के पश्चात् हम इस बत्तीस खंभों की छतरी में जाकर बैठे तो वहाँ शीतल बयार बह रही थी। हमने वहाँ सुकून का अनुभव किया तथा पसीना सुखाया। यहाँ बैठने से हमारी संपूर्ण थकावट उड़न छू हो गई।

गाइड ने बताया कि दुर्ग के सपाट मैदान पर निर्मित यह छतरी राव हम्मीर के शासन काल में चारों ओर से हवाखोरी, सभा, दरबार, विचार–विमर्श, विश्राम व आमोद–प्रमोद की जगह थी जिसका उपयोग अब भी पर्यटक इन कामों के लिए करते हैं। हमने इस छतरी पर लगभग आधे घंटे विश्राम किया।

विश्राम पश्चात् हम आगे बढ़े। सपाट मैदान में एक और राव हम्मीर का महल अविचल खड़ा दिखाई दिया। लेकिन हम इस महल को अंदर से नहीं देख पाए क्योंकि पुरातत्व विभाग ने इसे पर्यटकों के लिए बंद कर रखा है। थोड़ा आगे बढ़ने पर हमें दो तालाब दिखाई दिए। रास्ते के बाएँ ओर ''पद्मला'' तालाब तथा रास्ते के दाएँ ओर थोड़ा पीछे आने पर रानीहोद तालाब है। पद्मला तालाब बहुत बड़े क्षेत्र में फैला है तथा

इसमें अथाह पानी है। कहा जाता है कि राव हम्मीर की पुत्री पद्मावती इस तालाब में पारस पत्थर लेकर कूद गई थी। पद्मावती के आत्म बलिदान के कारण इस तालाब का नाम पद्मला पड़ा। इस तालाब के पानी से किले में जलापूर्ति की जाती थी।

हमने रानीहोद तालाब को देखा। काली मंदिर के नजदीक स्थित अथाह गहराई वाला यह तालाब रानियों के स्नान करने के लिए था। लेकिन राव हम्मीर के हार की गलत सूचना पाकर यहाँ की सभी रानियों ने इस तालाब में छलाँग लगाकर जल–जौहर किया था।

यहाँ से हम आगे बढ़े और लगभग मध्याह्न 12.00 बजे त्रिनेत्र गणेशजी के मंदिर पहुँचे। वहाँ ढप–ढोल और मृदंग के साथ श्रृंगार आरती हो रही थी। हम सभी आरती में खड़े हुए, आँखें बंदकर प्रथम पूज्य गणेशजी की आराधना की, त्रिनेत्र गणेशजी की मनोहारी छवि के दर्शन कर हम धन्य हो गए। मंदिर में पहुँचने पर हमें अपार शांति का अनुभव हुआ। गणेश मंदिर के पुजारी जी से जानकारी ली तो पुजारी जी ने बताया कि यह त्रिनेत्रधारी गणेशजी का एक मात्र मंदिर है जो विश्व प्रसिद्ध है। पुजारी जी ने बताया कि इस मूर्ति की यह खासियत है कि यह स्थापित मूर्ति न होकर भूमि से स्वउद्भव मूर्ति है। विवाह आदि शुभ कार्यों के अवसर पर लोग प्रथम पूज्य गणेशजी को सर्व कार्य सिद्धि बाबत् न्योता देने आते हैं। जो व्यक्ति स्वयं नहीं आ सकते हैं उनकी निमंत्रण पाती आती है, जिसे गणेशजी को सुनाया जाता है।

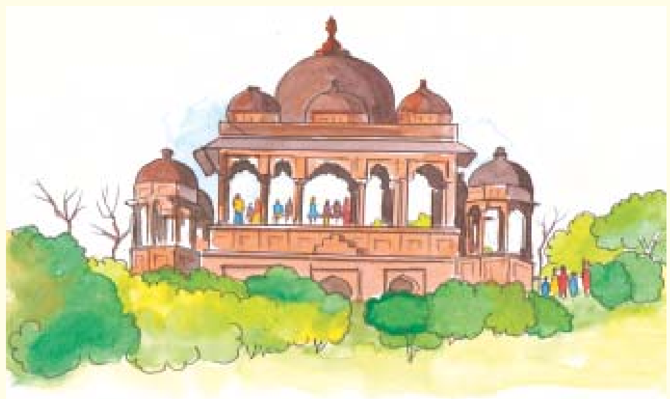

गणेश दर्शन के पश्चात् हमने दुर्ग में स्थित रघुनाथ जी का मंदिर, जैन मंदिर, मस्जिद, महल, गुप्त गंगा, जौरा–भौरा आदि दर्शनीय स्थलों को देखा।

रणथंभौर में और भी कई दर्शनीय स्थान हैं, लेकिन हमारे पास समय का अभाव होने से उन स्थानों को नहीं देख पाए। दुर्ग में शेष रहे ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा को अधूरी छोड़ गाड़ी में बैठकर सवाईमाधोपुर आ गए। वहाँ होटल में सभी ने खाना खाया व सायं 5.00 बजे रेल द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान किया। रणथंभौर की प्राकृतिक छटा, वन्य जीवों का स्वछंद विचरण, दुर्ग के पुरातात्विक स्थलों को देख मन गद्गद् हो गया। बच्चों के चेहरे खिल उठे। बच्चों की प्रसन्नता को देख मुझे अपार सुख की अनुभूति हुई।

शब्दार्थ

पुण्य – पवित्र		सुरम्य – सुंदर	
निवृत्त	मुक्त	उत्सुकता	उत्साह
हरीतिमा	हरियाली	आच्छादित	ढका हुआ
रोमांचित	प्रसन्न	सावचेत	सावधान
श्रृंग	सींग	बयार	हवा
अठखेलियाँ	मस्ती	दुर्गम	कठिन
मृग छौने	हरिण के बच्चे	आश्रय स्थली	रहने का स्थान
मनोहारी	मन को हरने वाला, सुंदर		

पाठ से

अभ्यास कार्य

सोचें और बताएँ

1. रणथंभौर कौन–कौनसी पर्वतमालाओं के मध्य है?
2. अभयारण्य में कितने प्रकार के पक्षी हैं?
3. क्या कारण है कि लेखक घोड़े के खुर देखकर आश्चर्यचकित रह गया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. रेलमार्ग से जयपुर से सवाईमाधोपुर की दूरी है–
   (क) 140 कि.मी. (ख) 165 कि.मी.
   (ग) 132 कि.मी. (घ) 150 कि.मी. ( )
2. घने जंगल की शुरुआत होती है–
   (क) गणेशधाम तिराहे के बाद (ख) सवाईमाधोपुर नगर के बाद
   (ग) मिश्रदरा से (घ) कहीं से नहीं ( )

कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. सर्वप्रथम हमने .... दरवाजा देखा। (मिश्रदरा/नोलखा)
2. सबसे पहले हम .... तालाब पर पहुँचे। (पदमला/मलिक)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजा हम्मीर की पुण्य धरा कौनसी है?
2. गौमुख में पानी कहाँ से आता है?
3. बाघ के आने पर अजीब–सी आवाज़ कौन निकालता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजा हम्मीर कौन थे?
2. रणथंभौर बाघ अभयारण्य में लेखक ने कौन–कौनसे वन्य प्राणी देखे?
3. रणथंभौर दुर्ग के मुख्य दरवाज़े कौन–कौनसे हैं? लिखिए।

4. बत्तीस खंभों की छतरी की विशेषता बताइए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. रणथंभौर दुर्ग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

1. आपने पिछली कक्षा में संधि के बारे में पढ़ा है, नीचे कुछ संधि विच्छेद दिए गए हैं, आप संधि कर नए शब्द बनाइए–

जैसे : अभय + अरण्य – अ + अ = आ – अभयारण्य

शरण + आगत –

सदा + एव –

नर + ईश –

पर + उपकार –

परि + आवरण –

2. (क) हम गाइड <u>के साथ</u> चल रहे थे।

(ख) शेरनी अपने बच्चों <u>के साथ</u> चल रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में लिंग और वचन का भेद है। इसी कारण इनकी क्रिया के रूप में परिवर्तन हुआ है। 'के साथ' वाक्यांश दोनों में समान है। इसके साथ ही इसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। ऐसे शब्दों को अविकारी या अव्यय शब्द कहते हैं।

अव्यय शब्द पाँच प्रकार के होते हैं –

1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक 5. निपात

पाठ में आए अविकारी शब्दों को छाँटकर लिखिए।

पाठ से आगे

1. आप भी कहीं न कहीं घूमने अवश्य गए होंगे। एक यात्रा का वर्णन नीचे लिखे बिंदुओं के आधार पर कीजिए–

स्थान चयन, यात्रा की तैयारी, प्रस्थान, स्थानों का वर्णन, अनुभव, वापसी।

2. यदि आपको बाघ दिखाई दे, तो आप बचाव में क्या करेंगे?

यह भी करें–

1. रणथंभौर वन्य अभयारण्य है। देश में स्थित अन्य वन्य अभयारण्यों की जानकारी प्राप्त कर सूची बनाइए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

द्वारा, उद्यान, अभेद्य, पद्मावती, उत्तर

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

शरीर जल से, मन सत्य से, आत्मा धर्म से और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है।

पाठ 4

सुदामा चरित

सवैये

सुदामा–''द्वारिका जाहुजू, द्वारिका जाहुजू, आठहुँ याम यही जक तेरे।
जो न कह्यो करिये तो बड़ो दु:ख, जायें कहाँ अपनी गति हेरे।
द्वार खड़े छड़िया प्रभु के, जहाँ भूपति जान न पावत मेरे।
पाँच सुपारि विचारु तू देखिके, भेंट को चारि न चाउर मेरे।1।''

द्वारपाल– ''सीस पगा न झगा तन पै प्रभु,
जाने को आहि, बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी–सी लटी दुपटी अरु,
पाँव उपानहुँ की नहीं सामा।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक,
रहयो चकि सो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम,
बतावत आपनो नाम सुदामा।2।''

कैसे बिहाल, बिवाइन सौं भये, कंटक जाल गड़े पग जोये।
हाय महा दु:ख पायो सखा तुम, आये इतै न कितै दिन खोये।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुणा करिके करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सौं पग धोये।3।

नरोत्तम दास

शब्दार्थ

जाहुजू – जाइए		पगा – पगड़ी	
याम – प्रहर		झगा – कपड़ा (ढीला कुरता)	
छड़िया – पहरेदार		आहि – आए हैं	
भूपति – राजा		बिहाल – बेहाल	
अभिरामा – सुंदर		दुपटी – अंगोछा, गमछा	
सखा – मित्र		उपानहु – जूता	
करुणा – दया		द्विज – ब्राह्मण	
छुयो – छुआ		वसुधा – पृथ्वी	
सौं – से			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. सुदामा के मित्र कौन थे?
2. किसके कहने पर सुदामा द्वारिका गए थे?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. पाठ में 'वसुधा' शब्द आया है—

   (क) श्रीकृष्ण के लिए (ख) पृथ्वी के लिए

   (ग) सुदामा की पत्नी के लिए (घ) अंगोछा के लिए ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. श्रीकृष्ण कहाँ के राजा थे?
2. सुदामा श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप क्या ले गए थे?
3. द्वारपाल ने सुदामा का चित्रण किसके सामने किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. द्वारपाल ने सुदामा के आगमन की सूचना किसको तथा क्या दी?
2. श्रीकृष्ण ने सुदामा के पाँव कैसे धोए? उक्त क्रिया वाली पंक्तियाँ सवैया में से छाँटकर लिखिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखत पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

   "पाँच सुपारि विचारु तू देखिके,

   भेंट को चारि न चाउर मेरे।।

2. सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या स्थिति हुई? लिखिए।
3. श्रीकृष्ण—सुदामा के मिलन का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता और क्रिया पदों को छाँटकर लिखिए—

(क) सुदामा कृष्ण से मिलने जा रहे थे।

(ख) सुदामा अपने साथ चावल की पोटली लेकर गए।

(ग) सेवक ने सुदामा के बारे में कृष्ण को बताया।

(घ) कृष्ण सुदामा का नाम सुनकर दौड़े आए।

2. दिए गए वाक्यों में क्रिया सकर्मक है या अकर्मक। वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर क्रिया का भेद लिखिए।

   1. द्वारपाल बोला।

2. कृष्ण ने चावल खाए।
3. कृष्ण ने सुदामा के पैर धोए।

पाठ से आगे

1. सुदामा कृष्ण से मिलने बहुत पहले भी जा सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कारण जानिए और लिखिए।
2. जे गरीब पर हित करे, ते रहीम बड़ लोग।
   कहाँ सुदामा बापुरौ, कृष्ण मितायी जोग।।
   उपर्युक्त दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
3. आपने कभी अपने मित्र की मदद की होगी, उस घटना का वर्णन कीजिए।

संकलन

श्रीकृष्ण–सुदामा मित्रता की कहानी है। ऐसी कहानियों का संकलन कीजिए।

यह भी करें–

निम्नलिखित संवाद को आगे बढ़ाइए–

द्वारपाल – महाराज की जय हो। महाराज द्वार पर एक ब्राह्मण खड़ा है। आप से मिलना चाहता है।

श्रीकृष्ण – मुझसे मिलना चाहता है मगर क्यों? क्या नाम है उसका और कहाँ से आया है?

द्वारपाल –

श्रीकृष्ण –

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

द्वारिका, कह्यो, द्विज, द्वार, रह्यो

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''शील दरिद्रता का, बुद्धि अज्ञान का और भक्ति भय का नाश करती है।''

हम पृथ्वी की संतान

प्रकृति एक विशाल पारिस्थितिकी तंत्र है जिसमें दो प्रकार के प्रमुख घटक शामिल हैं–जैविक और अजैविक। जैवमंडल का निर्माण भूमि, गगन, अनिल (वायु), अनल (अग्नि), जल नामक पंचतत्वों से होता है जिसमें हम छोटे–बड़े एवं जैव–अजैव विविधताओं के बीच रहते आए हैं। इसमें पेड़, पौधों एवं प्राणियों का निश्चित सामंजस्य और सहअस्तित्व है, जिसे समन्वयात्मक रूप में पर्यावरण के विभिन्न अवयव कहते हैं। पर्यावरण शब्द 'परि' और 'आवरण' इन दो शब्दों के योग से बना है। 'परि' और 'आवरण' का सम्यक अर्थ है–वह आवरण जो हमें चारों ओर से ढके हुए है, आवृत किए हुए है।

प्रकृति और मानव के बीच का मधुर सामंजस्य बढ़ती जनसंख्या एवं उपभोगी प्रवृत्ति के कारण घोर संकट में है। यह असंतुलन प्रकृति के विरुद्ध तीसरे विश्वयुद्ध के समान है। विश्वभर में वनों का विनाश, अवैध एवं असंगत उत्खनन, कोयला, पेट्रोल, डीजल के उपयोग में अप्रत्याशित अभिवृद्धि और कल–कारखानों के विकास के नाम पर विस्तार ने मानव सभ्यता को महाविनाश के कगार पर ला खड़ा कर दिया है। विश्व की प्रसिद्ध नदियाँ, जैसे–गंगा, यमुना, नर्मदा, राइन, सीन, मास, टेम्स आदि भयानक रूप से प्रदूषित हो चुकी हैं। इनके निकट बसे लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल के स्ट्रटोस्फियर में ओजोन गैस की एक मोटी परत है। यह धरती के जीवन की रक्षा कवच है जिससे सूर्य से आने वाली हानिकारक किरणें रोक ली जाती हैं। किंतु पृथ्वी के ऊपर जहरीली गैसों के बादल बढ़ते जाने के कारण सूर्य की अनावश्यक किरणें बाह्य अंतरिक्ष में परावर्तित नहीं हो पातीं जिसके कारण पृथ्वी का तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) बढ़ता जा रहा है। इससे छोटे–बड़े सभी द्वीपसमूहों एवं महाद्वीपों के तटीय क्षेत्रों के डूब जाने का खतरा बढ़ गया है। इसे 'ग्रीन हाउस प्रभाव' कहते हैं। यही स्थिति रही तो मुंबई जैसे महानगर प्रलय की गोद में समा सकते हैं। पृथ्वी पर बढ़ते तापमान के कारण विश्व सभ्यता को अमृत एवं पोषक जल प्रदान करने वाले ग्लेशियर या तो लुप्त हो गए हैं या लुप्त होने की

ओर बढ़ते जा रहे हैं। अमृतवाहिनी गंगा अपने उद्गम गंगोत्री के मूल स्थान से कई किलोमीटर पीछे खिसक चुकी है।

प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी के कारण लाखों लोग शरणार्थी बन चुके हैं। विशेषकर अपने भारत में ही बाँधों, कारखानों, हाइड्रोपॉवर स्टेशनों के बनने के कारण लाखों वनवासी भाई–बहन बेघर होकर शरणार्थी बने हैं।

पर्यावरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता प्राचीन काल से ही मिलती है। अथर्ववेद में लिखा है–'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात् भूमि माता है, हम पृथ्वी के पुत्र हैं। एक जगह यह भी विनय किया गया है कि 'हे पवित्र करने वाली भूमि! हम कोई ऐसा काज न करें जिससे तेरे हृदय को आघात पहुँचे।' हृदय को आघात पहुँचाने का अर्थ है पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्रों अर्थात् पर्यावरण के साथ क्रूर छेड़छाड़ करना। हमें प्राकृतिक संसाधनों के अप्राकृतिक एवं बेतहाशा दोहन से बचना होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के तमाम राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के गंभीर खतरे को लेकर आपसी मतभेद भुला दें और अपनी–अपनी ज़िम्मेदारी ईमानदारीपूर्वक निभाएँ, ताकि समय रहते सर्वनाश से उबरा जा सके। विश्वविनाश से निपटने के लिए सामूहिक एवं व्यक्तिगत प्रयासों की जरूरत है। इस दिशा में अनेक आंदोलन हो रहे हैं। अरण्य रोदन के बदले अरण्य संरक्षण की बात हो रही है। सचमुच हमें आत्मरक्षा के लिए पृथ्वी की रक्षा करनी होगी, 'भूमि माता है और हम उसकी संतान' इस कथन को चरितार्थ करना होगा।

प्रभु नारायण

पाठ 5

महाराणा प्रताप

वह मातृभूमि का रखवाला
आन–बान पर मिटने वाला,
स्वतंत्रता की वेदी पर
जिसने सब कुछ था दे डाला।

स्वाभिमान का अटल हिमाला
कष्टों से कब डिगने वाला,
जो सोच लिया कर दिखलाया
ऐसा प्रताप हिम्मत वाला।

थे कई प्रलोभन, झुका नहीं,
आँधी तूफां में रुका नहीं,
आज़ादी का ऐसा सूरज
उजियारा जिसका चुका नहीं।

वह नीले घोड़े का सवार
वह हल्दीघाटी का जुझार,
वह इतिहासों का अमर पृष्ठ
मेवाड़ शौर्य का वह अंगार।

धरती जागी, आकाश जगा
वह जागा तो मेवाड़ जगा,
वह गरजा, गरजी दसों दिशा
था पवन रह गया ठगा–ठगा।

हर मन पर उसका था शासन
पत्थर–पत्थर था सिंहासन,
महलों से नाता तोड़ लिया
थी सारी वसुधा राजभवन।

वह जन–जन का उन्नायक था
वह सबका भाग्य विधायक था,
सेना थी उसके पास नहीं
फिर भी वह सेनानायक था।

जंगल–जंगल में वह घूमा
काँटों को बढ़–बढ़ कर चूमा,
जितनी विपदाएँ प्रखर हुईं
उतना ही ज्यादा वह झूमा।

सब विपक्ष में था उसके
बस, सत्य पक्ष में था उसके,
समझौता उसने नहीं किया
जाने क्या मन में था उसके।

वह सत्यपथी, वह सत्यकृती,
वह तेजपुंज, वह महाधृती,
वह शौर्यपुंज, भू की थाती
वह महामानव, वह महाव्रती।

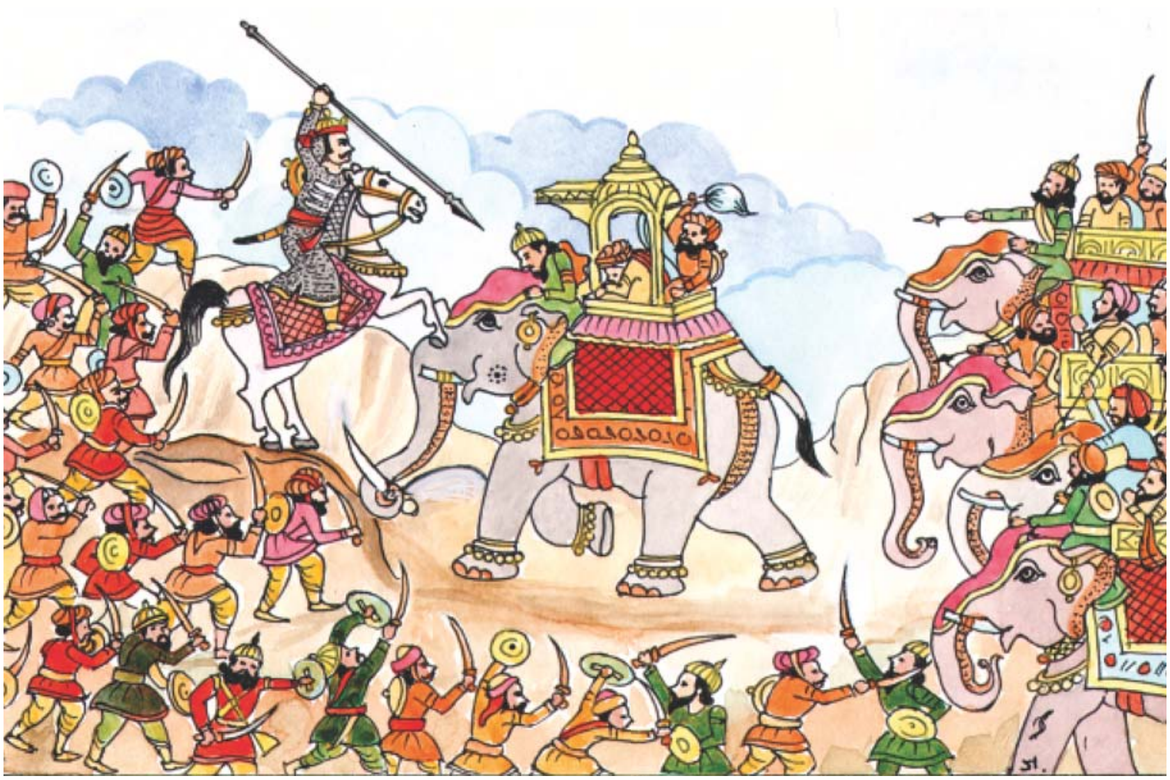

शब्दार्थ

रखवाला	–	रक्षा करने वाला	प्रखर	–	तेज
अंगार	–	अंगारा	शौर्य	–	शूरता, पराक्रम
महाधृती	–	महान् धैर्यवान	विधायक	–	विधान करने वाला
आन–बान	–	गौरव की भावना	वेदी	–	धार्मिक कार्य हेतु बनाया हुआ स्थल
महाव्रती	–	महान् व्रत का पालन करने वाला			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. धरती जागी, आकाश जगा
   वह जागा, तो मेवाड़ जगा।
   उक्त पंक्तियों का अर्थ बताइए।
2. प्रताप को मातृभूमि का रखवाला बताया गया है, क्यों?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रताप के स्वाभिमान को बताया है–
   (क) अपार सिंधु–सा (ख) अटल हिमालय–सा
   (ग) वन की आग–सा (घ) चंद्र की किरणों–सा ( )
2. महाराणा प्रताप के पक्ष में था–
   (क) सत्य (ख) असत्य
   (ग) प्रलोभन (घ) समझौता ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''आँधी तूफाँ में रुका नहीं'' पंक्ति में आँधी तूफान किसके प्रतीक हैं?
2. सेना के अभाव में भी प्रताप को सेनानायक क्यों कहा गया है?
3. प्रताप को कवि ने किन–किन उपमाओं से उपमित किया है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. इस कविता में कवि ने प्रताप के चरित्र की किन–किन विशेषताओं का चित्रण किया है?
2. निम्न पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–
   (क) वह इतिहासों का अमर पृष्ठ
   मेवाड़ शौर्य का वह अंगार।
   (ख) सब विपक्ष में था उसके
   बस, सत्य पक्ष में था उसके।

भाषा की बात

1. नीचे एक शब्द का वर्ण विश्लेषण दिया गया है, इसे समझकर दिए गए शब्दों का वर्ण विश्लेषण कीजिए—
   मातृभूमि — म् + आ + त् + ऋ + भ् + ऊ + म् + इ
   प्रलोभन, शौर्य, महाधृती
2. निम्न शब्दों में से शुद्ध शब्द का चयन कर लिखिए—
   (क) सत्यकति, सतकति, सत्यकृति
   (ख) विधायक, विदायक, विधायिक
   (ग) सौर्य, शौर्य, शोर्य
3. निम्नलिखित शब्द समूहों के लिए एक शब्द लिखिए—
   (क) जिसे टाला न जा सके
   (ख) जो शांत न हो
   (ग) कभी न मरता हो
4. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए—
   मातृभूमि, प्रलोभन, शौर्य, राष्ट्र, उन्नायक, काँटा, स्वाभिमान, हिम्मतवाला, गंभीर

पाठ से आगे

1. यदि महाराणा प्रताप अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेते, तो क्या होता?
2. महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था। मातृभूमि के लिए सब कुछ न्योछावर करने वाले प्रताप की जीवनी का अध्ययन कीजिए।
3. प्रताप से संबंधित अन्य कविताओं एवं गीतों का संकलन कर बाल सभा में सुनाइए।

यह भी पढ़ें

1. शेष नाग सिर सहस्र पै, धर धारी खुद आप।
   इक भाला की नोक पै, थैं ढाबी परताप।।
   (हे प्रताप! ईश्वर के अवतार शेषनाग ने अपने सहस्र फणों पर पृथ्वी को थाम रखा है ; किंतु आपने तो भाले की एक नोक पर (मातृभूमि की रक्षा करते हुए) उसे थामे रखा है।)
2. सिर दे दै नहँ दै धरा, यो भड़पण अणमाप।
   नहँ सिर दै, नहँ दै धरा, सो बाजै परताप।।
   (राजस्थान के वीरों की परंपरा रही है कि वे सिर दे देते हैं ; किंतु धरती पर दूसरों का अधिकार नहीं होने देते हैं। यह उनके अद्भुत शौर्य का उदाहरण है किंतु जो न तो सिर देता है और न ही धरती देता है, वह प्रताप कहलाता है।)

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''मेरे हृदय में केवल एक ही अभिलाषा बाकी है कि मैं अपनी मातृभूमि का रज कण बनूँ''

पाठ 6

संत कँवरराम

सनातन काल से भारतवर्ष के संत–महात्माओं, ऋषि–मुनियों, योगी–वैरागियों ने अपने कर्म–धर्म व साधना से सृष्टि का न केवल श्रृंगार किया अपितु मानवता के कल्याण के अद्‌वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए। भारत भूमि और उस पर स्थापित हमारे समाज ने उनका अनुसरण करते हुए सभ्य, संस्कारित व सर्व हितकारी जीवन यापन करने के अवसर प्राप्त किए हैं। भारत भूमि को संत और संतत्व की ईश्वर प्रदत्त अनूठी देन है जिसके रहते ही भारत विश्व गुरु के रूप में स्थापित हो सका।

'संत' एक अभूतपूर्व व्यक्तित्व–कृतित्व से भरे–पूरे होते हैं जो अपने जीवन में अर्जित ज्ञान, तपस्या, साधनामय शरीर समाज और उसके जरूरतमंद हिस्सों को समर्पित करना ही जीवन का लक्ष्य मानते हैं, ऐसे ही एक संत अखंड भारत के सिंध प्रांत में प्रतिष्ठित रहे हैं जिनका नाम था–संत कँवरराम।

सिंध प्रांत के सक्खर जिले में जरवारन गाँव में 13 अप्रेल, 1885 को माता तीरथ बाई और पिता ताराचंद के घर जन्मे कँवरराम बाल्यकाल से ही साधु स्वभाव के थे। उन्होंने संगीतज्ञ गुरु हासाराम से गायन–वादन की शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की। कालांतर में कँवरराम अपने गुरु सतराम दास के सान्निध्य में रहे। उनकी सेवा–शुश्रूषा से उनके व्यक्तित्व में अनोखे बदलाव से संतत्व उतर आया। वे सादगी, सेवा, परोपकार व विनम्रता की प्रतिमूर्ति बन गए। संत अपनी झोली में आई धन–सामग्री गरीब विधवाओं व विशेष योग्यजनों में बाँटते और जनहित में ही खर्च करते थे। वे दूसरों के बारे में ही सोचते रहते थे। अपने जीवन का गुजारा चलाने के लिए वे प्रतिदिन माँ के हाथों से बने कुहर (उबले चने, मूँग, चावल) बेचते थे।

इससे प्राप्त आमदनी से अपना व परिवार का भरण–पोषण करते थे। इनका विवाह मधराझ गाँव के जमींदार नोतूमल की सुपुत्री काकनि बाई के साथ सन् 1903 में संपन्न हुआ। संत कँवरराम के जीवन आदर्शों से प्रभावित होकर काकनि बाई भी समाज सेवा में संलग्न हो गई। काकनि बाई की कोख से एक पुत्र पेसूराम और दो पुत्रियों ने जन्म लिया। लगभग छब्बीस वर्षों तक काकनि बाई ने इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा कार्य किया। भोजन–भंडारे की व्यवस्था काकनि ही संभालती थी। सन् 1929 में निमोनिया हो जाने के कारण काकनि

बाई की मृत्यु हो गई। भंडारे की व्यवस्था बिगड़ने लगी। दो वर्ष बाद सन् 1931 में मीरपुर के श्री सामाणामला जी की पुत्री गंगा बाई के साथ संत कँवर ने लोगों के आग्रह से दूसरा विवाह किया। गंगा बाई भी श्रद्धा के साथ साधु–संतों की सेवा करती थी। गंगा बाई की कोख से तीन संतानें हुईं।

गरीबों, अनाथों और मोहताजों के कल्याण में अपने जीवन को समर्पित करने वाले कँवरराम ने अपने समस्त कार्यों को मात्र उपदेशों तक सीमित नहीं रखा है, वे अपने हाथों से काम करना पहली प्राथमिकता में रखते थे।

एक बार रहड़की में दरबार की सेवा का काम चल रहा था। कँवरराम भी सत्संगियों के साथ गारे की तगारी उठाकर सेवा में लगे थे, तभी उनके दर्शन करने दो स्नेही वहाँ आए। उन दोनों स्नेहियों ने पहले कभी कँवरराम को देखा ही नहीं था सिर्फ उनके बारे में नाम व बातें ही सुन रखी थीं। दरबार की सेवा में काम करने वालों से पूछते–पूछते एक सत्संगी से कँवरराम के बारे में पूछा तो इशारा करके उन्होंने बताया कि वे कँवरराम हैं। उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। वे विचार में पड़ गए। इतने में कँवरराम तगारी खाली कर वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने मेहमानों से पूछा, ''आपको क्या चाहिए?'' उन स्नेही मेहमानों ने कहा कि ''हमें कँवरराम जी के दर्शन करने हैं और यह आदमी हमसे मज़ाक कर रहा है कि आप ही संत कँवरराम हैं। भला कोई संत तगारी कैसे उठा सकते हैं?'' कँवरराम हँसकर बोले–''कँवर इस मिट्टी के पुतले का ही नाम है, दरबार की सेवा ही परमात्मा की सेवा है, जो बगैर तगारी उठाए कैसे पूरी हो सकती है। खैर! अब आप बताओ मेरे लिए क्या हुकुम है?'' आगंतुक कँवरराम की सादगी, सरलता, सहजता और विनम्रता देख दंग रह गए। वे पैरों में गिरकर आशीर्वाद की प्रार्थना करने लगे। उनकी संत प्रकृति के कारण ही आज भी उनका का नाम बड़े आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

एक बार की घटना है। संत कँवरराम सुबह शिकारपुर शहर के शाहीबाग में भजन में मग्न थे। अचानक एक महिला ने रेशमी कपड़े में लिपटे हुए अपने मृत बालक को संत के हाथों में देते हुए विनती की ''साईं कृपा कर इस बालक को लौरी दीजिए।'' लौरी देते समय ही उन्हें ज्ञात हुआ कि बालक में हरकत नहीं है। उन्होंने कपड़ा उठाकर देखा बालक जीवित नहीं है। संत बालक को लौरी देते हुए ईश्वर आराधना में लीन हो गए। कुछ देर पश्चात् आँखें खोली। बच्चा ऊँआ–ऊँआ करके रोने लगा। संत ने बच्चा माँ को देते हुए कहा–''माता ऐसी परीक्षा नहीं लिया करें।''

इस प्रकार की एक घटना सिंध के कुंभलेमन ग्राम में भजन सुनाते हुए घटी। भजन में हजारों की संख्या में हिंदू–मुसलमान उपस्थित थे। वर्षा हो रही थी जिसके कारण लोग परेशान होने लगे। एक जमींदार ने संत की शक्ति परखने के लिए हो रही वर्षा को बंद करने के लिए कहा। संत जैसे ही सोरठ राग गाने लगे, तो देखते ही देखते आसमान से बादल बिखरने लगे और आसमान साफ हो गया।

एक बार जेकवाबाद शहर में भजन करते समय एक श्रद्धालु ने सारंग राग गाने का अनुरोध किया। संत ने कहा, ''भाई सारंग राग से वर्षा होगी व आपको बहुत कष्ट होगा, भोजन व्यवस्था चौपट हो जाएगी।''

श्रद्धालु ने अपना आग्रह नहीं छोड़ा। इस पर संत ने सारंग राग गाना प्रारंभ किया। चारों ओर से उमड़–घुमड़ कर बादल आने लगे तभी मूसलाधार वर्षा होने लगी। लोगों ने प्रार्थना की और संत ने गाना बंद कर दिया।

इस प्रकार संत के चमत्कारों से सिंध का संपूर्ण समाज उनसे अधिक प्रभावित होता गया। संत कँवरराम का व्यक्तित्व और कृतित्व जीवन में प्रेरणास्पद रहा है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन गरीबों, अपाहिजों व विधवाओं की सेवा में लगा दिया। अनाथ और बेसहारा बालिकाओं की शादी करवाने के लिए जीवन पर्यंत सार्थक प्रयास किए। संत कँवरराम के उन्हीं भागीरथी प्रयासों का परिणाम है कि आज भी उनकी प्रेरणा से बड़ी संख्या में विद्यालय, अस्पताल, धर्मशालाएँ, विधवा विवाह और अनाथ बालक–बालिकाओं को संबलन देने के धर्मार्थ कार्य में हज़ारों लोग जुड़कर समाजोत्थान का कार्य कर रहे हैं।

संत कँवरराम के सतगुरु सतरामदास के स्वर्ग सिधारने के बाद वे अकेले ही समाजोत्थान के साथ सत्संग में लगे रहते। अपनी मधुर वाणी व भजनों से जन–जन में प्रेम–भक्ति का संदेश देते। उनके संगीतमय भजनों के माधुर्य के साथ–साथ पीड़ितों का दर्द भी बया होता था। उनकी आवाज़ पर हज़ारों लोग मोहित हो जाते थे। पैरों में घुंघरुओं की पायल, कानों में कुंडल, सर पर लाल जाफ़रानी रंग की पगड़ी, तन पर श्वेत जामा और कमर पर बाँधनी बांध कर संगीत की मस्ती में झूमने की छटा देखते ही बनती थी। संत कँवर राम को अपनी मृत्यु का आभास सात दिन पूर्व हो गया था। उन्होंने दादू में अपना अंतिम भजन मारू राग में समाप्त किया। मारू राग शोक के समय गाया जाता है। 1 नवम्बर, 1939 को संत अपनी टोली के साथ सक्खर जाने के लिए रुक स्टेशन पहुँचे। हमेशा की तरह डिब्बे में खिड़की के पास यात्रा के लिए बैठे। ज्यों ही इंजन ने सीटी बजाई कातिलों ने संत पर गोलियाँ चलाईं। एक गोली संत के माथे पर लगी। उनके मुँह से अंतिम शब्द निकला 'हरे राम।' 'हरे राम' की आवाज अनंत में विलीन हो गई। गाड़ी में हा–हाकार मच गया। गाड़ी दस मिनिट में आराई पहुँची तब तक संत के प्राण–पखेरू उड़ चुके थे। संत की अंतिम सात रातों को ''सात रातों'' के नाम से पुकारा जाता है। उनके भक्ति गीत हैं–

''राम सुमर प्रभात मेरे मन''

''नाले अलख जे बेड़ो तारि मुहिंजो''

कीअं रीझाया कीअ परिचायां

''या थियां हिंदु, पायां पेश जामो

या थियां मोमिन पढ़ा बुत खानो''

(कैसे रिझाऊं तुझे कैसे मनाऊँ तरीका कोई बताओ...

या तो बनूँ हिंदू पढ़ गीता

या तो बनूँ मोमिन पढ़ूँ कुरान शरीफ

हे ईश्वर मैं तुझे किस तरह मनाऊँ, प्रसन्न करूँ।)

संत के भजन आज भी विभिन्न शहरों, गाँवों एवं ढाणियों में प्रेम, एकता और सर्वधर्म सद्भाव का संदेश दे रहे हैं।

गोपीचंद सिंधी

शब्दार्थ

मोहताजों	–	जरूरत मंदों /लाचारों	बेड़ो	–	नैया/नाँव
कीअं	–	कैसे	तारि	–	पार
रीझाया	–	रीझाऊँ	मुहिंजो	–	पार लगा देना
परिचाया	–	मनाऊँ	अलख	–	ईश्वर
नाले	–	नाम के	कुहर	–	उबले हुए चने, मूँग व चावलों का मिश्रण
जामो	–	कपड़े	मोमिन	–	मुसलमान

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पाठ के अनुसार भारत विश्वगुरु किस कारण बना?
2. संत कँवरराम का जन्म कब हुआ?
3. संत कँवरराम की अंतिम सात रातों को किस नाम से पुकारा जाता है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. संत कँवरराम का जन्म हुआ था–

   (क) कराची में (ख) क्वेटा में

   (ग) जरवारन में (घ) शिकारपुर में ( )

2. अखंड भारत का प्रांत था–

   (क) सक्खर (ख) जरवारन

   (ग) काबुल (घ) सिंध ( )

3. संत कँवरराम अपना गुजारा करते थे–

   (क) भिक्षा से (ख) भजन करने से

   (ग) चने बेचकर (घ) परिश्रम करके ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. संत कँवरराम के माता–पिता का क्या नाम था?

2. संत कँवरराम ने गायन विद्या किससे सीखी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. संत कँवरराम ने अपना जीवन किन लोगों को समर्पित किया?
2. संत कँवरराम को दोनों आगंतुक क्यों नहीं पहचान पाए?
3. सद्गुरु सतराम दास के स्वर्गवास पश्चात् भी संत कँवरराम क्या करते रहे?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. अपनी भाषा में सरलार्थ कीजिए–

   कीअं रीझाया कीअ परिचायां

   या थिपा हिन्दु पायां पेश जायो

   या पिया मोमिन पढ़ा बुत खानो।
2. संत कँवरराम स्वावलंबी व्यक्ति थे, उदारण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. संत कँवरराम ने समाजोत्थान के कौन–कौनसे कार्य किए? वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1. ''मोहताजों के कल्याण के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया'' वाक्य में 'मोहताजों' उर्दू भाषा का शब्द आया है, जिसका अर्थ होता है 'लाचारों।' आप भी पाठ के आधार पर उर्दू शब्दों की सूची बनाकर अर्थ लिखिए।
2. पाठ में 'योगी–वैरागियों' शब्द आए हैं, योजक चिहन का लोप होने पर योगी और वैरागी बनता है यह द्वंद्व समास का उदाहरण है। पाठ में आए द्वंद्व समास के अन्य उदाहरणों को छाँटकर विग्रह कीजिए।
3. पाठ में समाजोत्थान शब्द आया है, जिसका संधि विच्छेद समाज+उत्थान होता है। यह गुण संधि स्वर संधि का एक भेद है। स्वर संधि के प्रकारों को उदाहरण सहित लिखिए।

पाठ से आगे

1. संत कँवरराम के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? लिखिए।
2. संत कँवरराम का जीवन स्वावलंबन से ओत–प्रोत था। 'स्वच्छ भारत अभियान' भी हमें स्वावलंबन का संदेश देता है। आपने भी समाज में स्वावलंबन से पूर्ण कार्यों को होते देखा है। ऐसे कार्यों को सूचीबद्ध कर लिखिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''धर्म सचमुच बुद्धि ग्राह्य नहीं है, ह्रदय ग्राह्य है।''

पाठ 7

भक्ति पदावली

(1)

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोर–मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुन तिलक सोहे भाल।
मोहनि मूरति, साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर–सुधा–रस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
छुद्र घंटिका कटि–तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

(2)

हरि, तुम हरो जन की पीर।
द्रौपदी की लाज राखी, तुरत बढ़ायो चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि, धार्‌यो आप सरीर।
हिरणाकुश कुँ मारि लीन्हों, धार्‌यो नाहीं धीर।
बूढ़तो गजराज राख्यौ, करियो बाहर नीर।
दासी मीरा लाल गिरिधर, चरण–कँवल पै सीर।।

(3)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा करि अपनायो।
जन्म–जन्म की पूँजी पाई, जग में सभी गँवायो।
खरचैं नहिं, कोई चोर न लेवै, दिन–दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख–हरख जस गायो।।

मीराँबाई

शब्दार्थ

मकराकृत	–	मगर या मछली जैसी आकृति वाला	अरुन	–	अरुण, लाल
बिसाल	–	विशाल/बड़ा	राजति	–	शोभित है
छुद्र	–	क्षुद्र, छोटा	रसाल	–	मधुर

नूपुर–सबद	– घुंघरुओं की झनकार	धीर	–	धैर्य
चरण–कँवल	– चरण रूपी कमल	अमोलक	–	अमूल्य
नरहरि	– नृसिंह, विष्णु के एक अवतार	गँवायो	–	खो दिया
भव–सागर	– संसार रूपी समुद्र	हरख–हरख	–	हर्षित होकर
भगत–बछल	– भक्त–वत्सल, भक्तों को प्यार करने वाला			
बैजंती माल	– वैजयंती माला, पाँच रंगों के मोतियों की माला जिसे विष्णु या कृष्ण धारण करते हैं			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. मीराँ अपनी आँखों में किसे बसाना चाहती थी?
2. द्रौपदी की लाज किसने बचाई?
3. मीराँ को सतगुरु से कौनसी वस्तु मिली?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मीराँ ने पीर को हरने वाला किसे बताया?
2. प्रह्लाद को बचाने के लिए हरि ने कौन–सा रूप धारण किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. श्री कृष्ण के किस रूप को मीराँ अपनी आँखों में बसाना चाहती है?
2. मीराँ ने राम नाम रूपी धन को अमूल्य क्यों बताया?
3. मीराँ ने संसार को पार करने का क्या उपाय बताया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मीराँ ने 'हरि तुम हरो जन की पीर' पद में कृष्ण की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए–
   (क) सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तर आयो।
   (ख) अधर–सुधा–रस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
3. मीराँ ने संसार को पार करने का क्या उपाय बताया?

भाषा की बात

1. 'मोहनि मूरति', 'साँवरि–सूरति' में प्रथम वर्ण की आवृत्ति हुई है, 'म–म' तथा 'स–स।' इस प्रकार काव्य में वर्णों की आवृत्ति जहाँ होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अलंकार का शाब्दिक अर्थ

है–सुंदरता को बढ़ाने वाला कारक। काव्य (कविता) में जो कारक उसके सौंदर्य में वृद्धि करते हैं, अलंकार कहलाते हैं। पाठ में आए अन्य अलंकारों के बारे में अध्यापक जी की सहायता से जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. पाठ में से निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप को छाँटकर लिखिए –
   मूर्ति, विशाल, क्षुद्र, शब्द, वत्सल, कृपा, रत्न, हर्ष
3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों के उचित भेद अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए–
   (क) बसो मेरे नैनन में <u>नंदलाल</u>।
   (ख) हरि! तुम हरो <u>जन</u> की पीर।
   (ग) <u>हरक–हरक</u> जस गायो।
   (घ) <u>द्रौपदी</u> की लाज राखी।

पाठ से आगे

1. मीराँ के इन पदों को बालसभा में गाकर सुनाइए।
2. मीराँ के जीवन में आए कष्टों को जानिए और समस्याओं से लड़ने और समाधान खोजने पर चर्चा कीजिए।

यह भी करें

1. हमारे समाज में मीराँ–सी भक्तिन व विदुषी और भी कई महिलाएँ हुई हैं, उनकी जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. अंतर्कथाएँ जानिए –
   (क) द्रौपदी का चीर बढ़ाना (ख) भक्त प्रह्लाद की रक्षा (ग) गजराज की ग्राह से रक्षा।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

भक्ति, व्यक्ति, शक्ति, सिद्धि,

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"किसी के पाँव का काँटा निकाल कर देखो, तुम्हारे दिल की जलन भी जरूर कम होगी"

केवल पढ़ने के लिए

सोनै री चिड़कली रै

सोनै री चिड़कली रै, प्यारो म्हारो देसड़ो,
नर वीराँ री खान जगत अगवाणी रै।।
दूध दही री अठै नदियाँ बहती, रिध सिध साथै नव निध रहती,
होती अठै मोकळी गायां, रहती फळफूलां री छायां,
करसा अन्न घणो निपजाता, बांनैं देख देव हरषाता,
सस्य श्यामला रै भारत भोम है,
ईं' रो अन्नपूर्णा रूप, दुनियां जाणी रै।। सोनै री।।1।।

आ' धरती नर नाहर जाया, नार्‌यां भी रण में हाथ दिखाया,
सूरा लड़ता सीस कट्योड़ा, देख्या पीछै नहीं हट्योड़ा,
रण में सदा विजय ही पाई सारै धरम धजा फहराई,
आ' तो करम भौम है रै, श्री भगवान री,
लियो बार–बार अवतार, अमर कहाणी रै।। सोनै री।।2।।

आ' धरती है रिषि मुनियां री, चिन्ता करती सब दुनियां री,
गूंजी अठै वेद री वाणी, गीता रण में पड़ी सुणाणी,
विकस्यो हो विज्ञान अठै ही, जलमी सारी कळा अठै ही?
आ' तो जगत गुरु ही रै, भारत–भारती,
अब तन मन जीवण वार, बा' छवि ल्याणी रै।। सोनै री।।3।।

पाठ 8

मिसाइल मैन

(रामेश्वरम (तमिलनाडु) के एक अल्प शिक्षित परिवार में सन् 1931 में जन्मे प्रो. अबुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम ने रक्षा वैज्ञानिक के रूप में ख्याति अर्जित की। उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। कलाम का व्यक्तित्व जीवन तपस्या से भरा रहा था। दिन में अट्ठारह घंटे काम करने के बीच वे वीणा बजाने का अभ्यास भी करते थे। वे अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने शिक्षकों को देते थे। वे बच्चों और युवाओं की आँखों में विकसित भारत की तसवीर देखते थे।)

प्रश्न : वह कौनसी घटना थी, जिसने आपके जीवन को एक नई दिशा दी? आपको एक महान् इंजीनियर और वैज्ञानिक बनने का मार्ग दिखाया?

डॉ. कलाम : ये घटना उस समय की है, जब मैं दस वर्ष का था और पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। मेरे अध्यापक श्री शिवसुब्रह्मण्यम अय्यर हमें चिड़िया के उड़ने का सिद्धांत समझा रहे थे। उन्होंने श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) पर चित्र बनाकर लगभग बीस मिनट तक हमें समझाया कि चिड़िया कैसे उड़ती है। पंख फड़फड़ाने और संतुलन बनाने के लिए उसकी पूँछ कैसे काम करती है। पूरा समझाकर उन्होंने हमसे पूछा कि 'समझ में आया?' मैंने और कई अन्य बच्चों ने कहा कि हमें समझ में नहीं आया। इस पर क्रोधित होने के बदले वे हमें समुद्र तट पर ले गए। वहाँ हमने अनेक पक्षियों को उड़ते हुए देखा। वहाँ पक्षियों की उड़ान भरने की प्रक्रिया मुझे अच्छी तरह समझ में आ गई। पैरों की मरोड़, पंखों की गति, पूँछ से संतुलन, सभी क्रियाओं का सामंजस्य सब स्पष्ट हो गया। अंत में उन्होंने बताया कि पक्षी आंतरिक प्रेरणा और जीने की इच्छाशक्ति से उड़ता है। इस अध्याय से पक्षियों की उड़ान की तकनीक के साथ–साथ हमें जीवन की एक गहरी शिक्षा भी मिली। सैद्धांतिक ज्ञान को उदाहरण के द्वारा ही पूर्ण शिक्षा का रूप मिलता है।

रामेश्वरम के तट पर पक्षियों की उड़ान मेरे मन की गहराई तक उतर गई। यह मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण अध्याय था। इसके बाद ही मैंने उड़ान विज्ञान को अपना विषय बनाने का निश्चय किया था। मैं उनका आभारी हूँ जिन अध्यापकों के पढ़ाने की विधि ने मेरा भविष्य तय कर दिया। इससे मैंने अपने जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित कर लिया। मैंने भौतिक विज्ञान का अध्ययन किया, आगे चलकर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग में पढ़ाई की और तब एक रॉकेट इंजीनियर, ऐरोप्लेन इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ बना।

प्रश्न : विज्ञान विषय पढ़ने के लिए क्या–क्या तैयारियाँ आवश्यक हैं?

डॉ. कलाम : सबसे आवश्यक है शिक्षक और विद्यार्थी के मन में विषय के प्रति लगाव और विद्यार्थी के

मन में प्रबल जिज्ञासा। विज्ञान हमें एक विशेष दृष्टि प्रदान करता है जिससे हमारी मानसिक अनिश्चितता समाप्त हो जाती है। यह दृष्टिकोण हमें समस्याओं को सुलझाने की शक्ति प्रदान करता है। हम यह चाहने लगते हैं कि उस समस्या को सुलझाएँ जिसे किसी ने अब तक न सुलझाया हो। इसलिए न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांतों की खोज, आइंस्टाइन की रिलेटीविटी थ्योरी, स्टीफन हॉकिंस की स्ट्रींग थ्योरी, सी.वी. रमण जिन्हें नोबल पुरस्कार मिला, उनके बारे में पढ़ना हमें अच्छा लगता है। चंद्रशेखर सुब्रह्मण्यम् जो चंद्रलिमिट और ब्लैक होल के लिए जाने जाते हैं, श्रीनिवास रामानुजन जो अंक गणित सिद्धांतों के जन्मदाता हैं, इन्हें पढ़ना हमें अच्छा सैद्धांतिक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। हम आविष्कार और खोज के महत्व को उपयोगिता के साथ समझ पाते हैं।

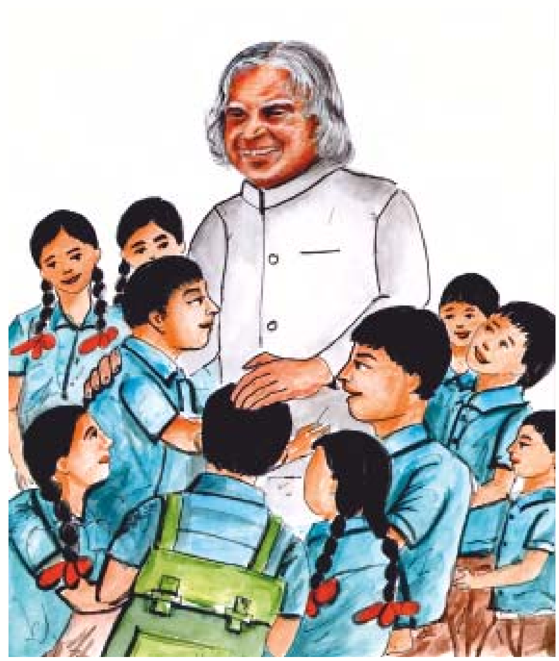

प्रश्न : 2020 में हमारे देश का स्वरूप कैसा होगा?

डॉ. कलाम : बहुत सुंदर और सुखद होगा।

1. गाँवों और शहरों की विभाजक रेखा समाप्त हो जाएगी।
2. समान वितरण के तहत उद्योगों को पर्याप्त ऊर्जा गुणवत्तापूर्ण जल आपूर्ति होगी।
3. कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों में सामंजस्य के साथ काम होगा।
4. कोई भी मेधावी विद्यार्थी शिक्षा और विकास के मूल्यों से वंचित नहीं रहेगा।
5. यह राष्ट्र योग्य विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और पूँजी निवेशकों की मंजिल होगा।
6. श्रेष्ठतम स्वास्थ्य सेवाएँ होंगी।
7. राष्ट्र की शासन व्यवस्था पारदर्शी और भ्रष्टाचार से पूर्णतः मुक्त होगी।
8. गरीबी और अशिक्षा जड़ से समाप्त हो जाएगी। स्त्रियों और बच्चों के विरुद्ध अपराध पूरी तरह नियंत्रण में होंगे। किसी के अधिकारों का हनन नहीं होगा।
9. समृद्ध, स्वस्थ, आतंकरहित, प्रसन्न और शांतिपूर्ण राष्ट्र को जीवन यापन के लिए सर्वोत्तम स्थान होगा, जिसे अपने नेतृत्व पर गर्व होगा।

प्रश्न : आपको भारतीय समेकित प्रक्षेपण विकास कार्यक्रम का अविवादित जनक (अनडिस्प्यूटिड

फादर ऑफ इंडियन मिसाइल प्रोग्राम) कहा गया है। कृपया हमें IGMDP (इंडिग्रेटेड मिसाइल डिवेलपमेंट प्रोग्राम) की पाँच मुख्य परियोजनाओं के विषय में संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

डॉ. कलाम : सन् 1983 में IGMDP के अंतर्गत इन पाँच प्रक्षेपास्त्रों को विकसित करने का विचार किया गया–

1. पृथ्वी : सतह से सतह पर प्रक्षेपण के लिए (150 कि.मी. क्षमता)
2. आकाश : मध्यम दूरी की प्रक्षेपण सतह से हवा में (24 कि.मी. क्षमता)
3. त्रिशूल : त्वरित प्रतिक्रिया की सतह से हवा में, एक छोटी दूरी का प्रक्षेपास्त्र (8–10 कि.मी. क्षमता)
4. नाग : टैंक विरोधी निर्देशित प्रक्षेपास्त्र (4 कि.मी. क्षमता)
5. अग्नि : तकनीकी प्रमाणक प्रक्षेपण प्रणाली (बैलास्टिक मिसाइल)

पिछले 25 वर्षों के दौरान दो प्रक्षेपास्त्र प्रणालियाँ विकसित हुईं, इनका प्रयोग भी किया गया। आकाश को हमारी वायु सेना ने आपूर्ति के लिए मँगवाया और पृथ्वी व अग्नि के अनेक रूप विकसित किए गए। इनके प्रसारण की पूर्ण तैयारी है।

प्रश्न : शिक्षा व्यवस्था के विकास में सूचना और संचार की क्या भूमिका हो सकती है?

डॉ. कलाम : दूरस्थ शैक्षिक कार्यक्रमों को देश के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता से व्यावहारिक बनाने के लिए तीन तरह के कार्यक्रम आवश्यक हैं–संपर्क, प्रसारण और उत्पादन एवं उसका प्रसार, जो संपर्क को डेढ़ लाख टर्मिनल्स के साथ जोड़ने की क्षमता रखता है जो देश के दूसरे भाग में ब्रॉड बैंड और बेतार के तार (वायरलैस) संचार माध्यम से जुड़े हैं। ये सभी माध्यम शिक्षा पद्धति के उत्तम साधन हैं।

जब हम सारे देश को संचार माध्यम से जोड़ने में सफल हो जाएँगे तो शिक्षण संस्थाओं से विद्यार्थी और शिक्षकों का प्रत्यक्ष और परोक्ष, दोनों तरह से संपर्क साधा जा सकेगा। इस संपर्क में व्यापक शिक्षण अभियान चलाए जा सकेंगे। इससे हर क्षेत्र के लोग लाभान्वित हो सकेंगे।

प्रश्न : परमाणु शक्ति का संबंध अधिकतर विनाशक बम के रूप में ही होता है, इसके सकारात्मक या रचनात्मक प्रयोग के बारे में बताएँ।

डॉ. कलाम : परमाणु शक्ति का प्रयोग ऊर्जा उत्पादन और उत्तम कृषि के बीज प्रदीपन हेतु भी किया जाता है।

प्रश्न : आपको कर्नाटक संगीत का अच्छा ज्ञान है। एक वैज्ञानिक होते हुए इस दिशा में आपका रुझान कब और कैसे हुआ?

डॉ. कलाम : जब मैं सेंट जोसेफ कॉलेज में पढ़ता था, उसी समय संगीत में मेरा रुझान बढ़ने लगा। मुझे एम.एस. सुब्बलक्ष्मी और सी. भादुड़ी श्रीनिवास अय्यर का संगीत अच्छा लगता था। मैं अपने मित्र सांथम के साथ तिरुवर त्यागराजा उत्सव में संगीत सुनने जाता था। हॉस्टल लौटकर हम इसी संगीत के विषय में बहुत–सी बातें करते थे।

प्रश्न : भारत के भावी कर्णधारों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

डॉ. कलाम : मैं भारत के कर्णधारों से यही कहना चाहता हूँ कि किसी भी युवक को भविष्य से घबराने की आवश्यकता नहीं है, अगर उसने अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया है।

समय बहुत मूल्यवान है। सदाचारी बनो। आत्मविश्वास रखो कि तुम्हारे पास हर समस्या का सामना करने की क्षमता है। ऐसा करके तुम अपने लक्ष्य को सरलता से प्राप्त कर लोगे।

।। जय हिंद ।।

शब्दार्थ

ख्याति	–	प्रसिद्धि	मेधावी	–	होशियार, बुद्धिमान
विशेषज्ञ	–	विषय का जानकार	प्रक्षेपास्त्र	–	मिसाइल, फेंककर मारने वाला अस्त्र
त्वरित	–	जल्दी, शीघ्र	क्षमता	–	सामर्थ्य
आपूर्ति	–	भरपाई	प्रसारण	–	फैलाव
निर्धारित	–	तय			
प्रदीपन	–	प्रकाश करना, उत्तेजित करना, अंकुरित करना			
कर्णधार	–	नेतृत्वकर्ता, जिन पर देश को आगे बढ़ाने का भार हो			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कलाम साहब ने चिड़िया के उड़ने का सिद्धांत को कौन–सी कक्षा में समझा?
2. कलाम साहब ने अपनी उपलब्धियों का श्रेय किसे दिया?
3. कलाम साहब को भारत सरकार द्वारा कौन–सा सम्मान दिया गया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. अब्दुल कलाम का जन्म हुआ–

(क) 1931 ई. में (ख) 1941 ई. में

(ग) 1929 ई. में (घ) 1921 ई. में ( )

2. अब्दुल कलाम के जन्म स्थान का संबंध जिस राज्य से है, वह है–

(क) कर्नाटक (ख) केरल

(ग) उड़ीसा (घ) तमिलनाडु ( )

3. अब्दुल कलाम को अच्छा ज्ञान था–

(क) कर्नाटक संगीत का (ख) मांड संगीत का

(ग) लोक संगीत का (घ) उपर्युक्त सभी का ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. कलाम साहब दिन में .... घंटे काम करते थे।
2. मेरे अध्यापक .... हमें चिड़िया के उड़ने का सिद्धांत समझा रहे थे।
3. मुझे .... का संगीत अच्छा लगता था।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कलाम साहब किस मित्र के साथ संगीत सुनने जाते थे?
2. किन्हीं तीन भारतीय प्रक्षेपास्त्रों के नाम लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अब्दुल कलाम ने भारत के भावी कर्णधारों के लिए क्या संदेश दिया है?
2. विज्ञान विषय पढ़ने के लिए क्या–क्या तैयारियाँ आवश्यक हैं?
3. कलाम साहब के अनुसार 2020 में हमारे देश का स्वरूप कैसा होगा? कोई दो बिंदु लिखिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'चिड़िया की उड़ान के सिद्धांत' से ख्याति प्राप्त भौतिकशास्त्री बनने का सफर कलाम साहब ने किस प्रकार तय किया? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
2. कलाम साहब द्वारा विद्यार्थियों को दिए संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1. हिन्दी में अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि विदेशज, भारतीय बोलियों के शब्द देशज, संस्कृत के तत्सम शब्द, संस्कृत से परिवर्तित होकर बने तद्भव शब्द तथा दो भाषाओं के शब्दों से बने संकर शब्द पाए जाते हैं। जैसे – इंजीनियर, दुग्ध, आग, तरक्की, लोटा, हाथ, जिंदगी, पेन, स्कूल, पगड़ी, खिड़की, ग्राम, टिकिटघर, लालटेन।

   उपर्युक्त शब्दों के मूल स्रोत अपने शिक्षक/शिक्षिका से जानकर उत्तर–पुस्तिका में लिखिए।
2. इस पाठ में प्रक्षेपास्त्र, परमाणु विशेषज्ञ तत्सम (मूल रूप में संस्कृत शब्द) शब्दों का प्रयोग हुआ है।

आप पाठ में आए इसी प्रकार के अन्य तत्सम शब्दों को छाँटिए।

3. पाँचवीं कक्षा, सैद्धांतिक ज्ञान, मेधावी विद्यार्थी उक्त पदों में रेखांकित पद विशेषण हैं। **वे शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताएँ; उन्हें विशेषण कहते हैं।** पाठ में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर उसके सामने विशेषण का प्रकार भी लिखिए।

पाठ से आगे

1. अब्दुल कलाम का जीवन हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आप भी जीवन में ऊँचाइयाँ छूने के लिए क्या–क्या करेंगे?

यह भी करें

पाठ में जिन वैज्ञानिकों के नाम आए हैं, उनके चित्र इकट्ठे कीजिए। उन्हें 'मेरा संकलन' में चिपकाइए और उनकी उपलब्धियों का वर्णन अपने शिक्षक/शिक्षिका से पूछकर लिखिए।

अपने शिक्षक/शिक्षिका से रिक्त स्थानों की जानकारी प्राप्त कीजिए–

अब्दुल कलाम दिनांक .... से .... तक भारत के राष्ट्रपति रहे है। उन्हें बच्चों से बहुत प्रेम था। वे पढ़ने–पढ़ाने से सदैव जुड़े रहे। उनकी आखिरी साँस भी .... पढ़ाने के दौरान ही थमी।

डॉ. अब्दुल कलाम

अब्दुल कलाम 25 जुलाई, 2002 से 25 जुलाई, 2007 तक भारत के राष्ट्रपति रहे थे। इससे पूर्व उन्हें सन् 1997 में भारत रत्न से भी नवाजा गया था। उनके 79वें जन्म दिवस को संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाया था। आज भी उनका जन्म दिन 15 अक्टूबर को 'विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वे सदैव भारतीय विद्यार्थियों के प्रेरणा स्रोत बने रहे और उन्हें सपनों के भारत निर्माण में संलग्न होने के लिए तत्पर करते रहे। उनकी इसी विचार बोध की पुस्तक 'विंग्स ऑफ फायर इंडिया–2020' भारतीय विद्यार्थियों में खासी चर्चित रही है।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"सपने वे नहीं होते, जो नींद में देखे जाते हैं, सपने वे होते हैं, जो हमारी नीदें उड़ा देते हैं।"

पाठ 9

जैसलमेर की राजकुमारी

(1)

राजकुमारी ने हँसकर कहा–''पिताजी! दुर्ग की चिंता न कीजिए। जब तक उसका एक भी पत्थर से पत्थर मिला है, उसकी मैं रक्षा करूँगी। चाहे अलाउद्दीन कितनी ही वीरता से हमारे दुर्ग पर आक्रमण करे, आप निर्भय होकर शत्रु से लोहा लें।''

यह जैसलमेर के दुर्गाधिपति महाराज रत्नसिंह की कन्या थी, इस समय बलिष्ठ अरबी घोड़े पर चढ़ी हुई थी और मर्दानी पोशाक पहने थी। उसकी कमर में दो तलवारें लटक रही थीं। कमरबंद में पेशकब्ज, पीठ पर तरकस और हाथ में धनुष था। वह चंचल घोड़े की रास को बलपूर्वक खींच रही थी, जो एक क्षण भी स्थिर रहना नहीं चाहता था। रत्नसिंह जिरहबख्तर पहने एक हाथी के फौलादी हौदे पर बैठे आक्रमण के लिए प्रस्थान कर रहे थे। सामने उनके घोड़े हिनहिना रहे थे और शस्त्र झनझना रहे थे।

रत्नसिंह ने पुत्री के कंधे पर हाथ धर कर कहा–''बेटी, तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है, मैं दुर्ग को तुझे सौंपकर निश्चिंत हो रहा हूँ। देखना, सावधान रहना। शत्रु केवल वीर ही नहीं, धूर्त और छलिया भी है।''

बालिका ने वक्र दृष्टि से पिता को देखा और हँसकर कहा–''नहीं, पिताजी आप निश्चिंत होकर प्रस्थान करें। किले का बाल भी बाँका नहीं होगा।''

रत्नसिंह ने एक तीव्र दृष्टि अपने किले के धूप से चमकते हुए कँगूरे पर डाली और हाथी बढ़ाया। गगनभेदी जय निनाद से धरती आसमान काँप उठे। एक विशालकाय अजगर की भाँति सेना किले के फाटक से निकलकर पर्वत की उपत्यका में विलीन हो गई। इसके बाद घोर चीत्कार करके दुर्ग का फाटक बंद हो गया।

(2)

टिड्डी–दल की भाँति शत्रु ने दुर्ग घेर रखा था। सब प्रकार की रसद बाहर से आनी बंद थी। प्रतिदिन यवन दल गोली और तीरों की वर्षा करता था। पर जैसलमेर का अजेय दुर्ग गर्व से मस्तक उठाए खड़ा था। यवन समझ गए थे कि दुर्ग विजय करना हँसी–ठट्टा नहीं है। दुर्ग रक्षिणी, राज नंदिनी रत्नावती निर्भय अपने दुर्ग में सुरक्षित बैठी शत्रुओं के दाँत खट्टे कर रही थी। उसके साथ में पुराने विश्वस्त राजपूत वीर थे, जो मृत्यु और जीवन का खेल समझते थे। वह अपनी सखियों समेत दुर्ग के किसी बुर्ज पर चढ़ जाती और यवन सेना का ठट्टा उड़ाती हुई वहाँ से सनसनाते हुए तीरों की वर्षा करती। वह कहती–''मैं स्त्री हूँ, पर अबला नहीं। मुझमें मर्दों जैसा साहस और हिम्मत है। मेरी सहेलियाँ भी देखने भर की स्त्रियाँ हैं। मैं इन पापिष्ठ यवनों को समझती क्या हूँ।''

उसकी बातें सुन सहेलियाँ ठठाकर हँस देती थी। प्रबल यवनदल द्वारा आक्रांत दुर्ग में बैठना राजकुमारी के लिए एक विनोद था।

मलिक काफूर एक गुलाम था जो यवन सेना का अधिपति था। वह दृढ़ता और शांति से राजकुमारी की चोटें सह रहा था। उसने सोचा था कि जब किले में खाद्य पदार्थ कम हो जाएँगे, दुर्ग वश में आ जाएगा। फिर भी वह समय–समय पर दुर्ग पर आक्रमण कर देता था परन्तु दुर्ग की चट्टानों और भारी दीवारों को कोई क्षति नहीं पहुँचती थी। राजकुमारी बहुधा बुर्ज पर से कहती–''ये धूर्त, गर्द उड़ाकर तथा गोली बरसाकर मेरे किले को गंदा और मैला कर रहे हैं। इससे क्या लाभ होगा?

यवन दल ने एक बार दुर्ग पर प्रबल आक्रमण किया। राजकुमारी चुपचाप देखती रही। जब शत्रु आधी दूर तक दीवारों पर चढ़ आए तब भारी–भारी पत्थर के ढोंके और गर्म तेल की ऐसी मार पड़ी कि शत्रु सेना छिन्न–छिन्न हो गई। लोगों के मुँह झुलस गए, कितनों की चटनी बन गई। हज़ारों यवन ''तौबा–तौबा'' करके प्राण लेकर भागे जो प्राचीर तक पहुँचे उन्हें तलवार के घाट उतार दिया गया।

(3)

सूर्य छिप रहा था। पश्चिम दिशा लाल–लाल हो रही थी। राजकुमारी वहाँ चिंतित भाव से अति दूर पर्वत की उपत्यका में सूर्य को डूबते हुए देख रही थी। उसे चार दिन से पिता का संदेश नहीं मिला था। वह सोच रही थी कि इस समय पिता को क्या सहायता दी जा सकती है। वह एक बुर्ज के नीचे बैठ गई। धीरे–धीरे अंधकार बढ़ने लगा। उसने देखा, एक काली मूर्ति धीरे–धीरे पर्वत की तंग राह से किले की ओर अग्रसर हो रही है। उसने समझा, पिता का संदेश वाहक होगा। वह चुपचाप उत्सुक होकर उधर ही देखती रही। उसे आश्चर्य तब हुआ, जब उसने देखा, वह गुप्तद्वार की ओर न जाकर सिंहद्वार की ओर जा रहा है। तब अवश्य शत्रु है। राजकुमारी ने एक तीखा बाण हाथ में लिया और छिपती हुई उस मूर्ति के साथ ही द्वार की पौर के ऊपर आ गई।

वह मूर्ति एक गठरी को पीठ से उतार कर प्राचीर पर चढ़ने का उपाय सोच रही थी। राजकुमारी ने धनुष पर बाण चढ़ाकर ललकार कर कहा–

''वहीं खड़ा रह और अपना अभिप्राय कह।''

काल रूप राजकुमारी को सम्मुख देख वह व्यक्ति भयभीत स्वर में बोला–

''मुझे किले में आने दीजिए। बहुत जरूरी संदेश है।''

''वह संदेश वहीं से कह।''

''वह अतिशय गोपनीय है।''

''कुछ चिंता नहीं, कह।''

''मैं किले में आकर कहूँगा।''

''उससे प्रथम यह तीर तेरे कलेजे के पार हो जाएगा।''

''महाराज विपत्ति में हैं, मैं उनका चर हूँ।''

''चिट्ठी हो, तो फेंक दो।''

''जबानी कहना है।''

''जल्दी कह।''

''यहाँ से नहीं कह सकता।''

''तब ले''–राजकुमारी ने तीर छोड़ दिया। वह उसके कलेजे को पार करता हुआ निकल गया। राजकुमारी ने सीटी दी। दो सैनिक आ हाज़िर हुए। कुमारी की आज्ञा पा, रस्सी के सहारे उन्होंने नीचे जा मृत व्यक्ति को देखा यवन था। उसके एक व्यक्ति पीठ पर गठरी में बँधा था। यह देख राजकुमारी जोर से हँस पड़ी। इसके लिए ही वह प्रत्येक बुर्ज पर घूम–घूम कर प्रबंध और पहरे का निरीक्षण कर रही थी। फौरन फाटक पर जाकर देखा; द्वार रक्षक द्वार पर न था। कुमारी ने पुकार कर कहा–''यहाँ पहरे पर कौन है?''

एक वृद्ध योद्धा ने आगे बढ़कर राजकुमारी को मुजरा किया। उसने धीरे से कुमारी के कान में कुछ और भी कहा। वह हँसती–हँसती बोली–''ऐसा, ऐसा? अब वे तुम्हें घूस देंगे बाबा साहब?''

''हाँ, बेटी!''–बूढ़ा योद्धा तनिक हँस दिया। उसने गाँठ से सोने की पोटली निकालकर कहा–''यह

देखो, इतना सोना है।''

''अच्छी बात है, ठहरो। हम उन्हें पागल बना देंगे। बाबा साहब, तुम आधी रात को उसकी इच्छानुसार द्वार खोल देना।''

वृद्ध भी हँसता और सिर हिलाता हुआ चला गया।

बारह बज गए थे। चंद्रमा की चाँदनी छिटक रही थी। कुछ आदमी दुर्ग की ओर छिपे–छिपे आ रहे थे। उनका सरदार मालिक काफूर था। उनके पीछे सौ चुने हुए योद्धा थे। संकेत पाते ही द्वारपाल ने प्रतिज्ञा पूरी की। विशाल मेहराबदार फाटक खुल गया। सौ व्यक्ति चुपचाप दुर्ग में घुस गए। मलिक काफूर ने मंद स्वर में कहा–''यहाँ तक तो ठीक हुआ। अब हमें उस गुप्त मार्ग से दुर्ग के भीतर महलों में पहुँचा दो जिसका तुमने वादा किया है।''

राजपूत ने कहा–''मैं वादे का पक्का हूँ, मगर बाकी सोना तो दो।''

''यह लो।'' यवन सेनापति ने मुहरों की थैली हाथ में धर दी। राजपूत फाटक का ताला बंद कर चुपचाप प्राचीर की छाया में चला। वह लोमड़ी की भाँति चक्कर खाकर कहीं गायब हो गया।

यवन सैनिक चक्रव्यूह में फँस गए, न पीछे का रास्ता मिलता था न आगे का। वे वास्तव में कैद हो गए थे और अपनी मूर्खता पर पछता रहे थे। मलिक काफूर दाँत पीस रहा था। राजकुमारी की सहेलियाँ इतने चूहों को चूहेदानी में फँसाकर हँस रही थीं।

(4)

यवन सैन्य ने दुर्ग पर भारी घेरा डाल रखा था। खाद्य सामग्री धीरे–धीरे कम हो रही थी। घेरे के बीच से किसी का आना अशक्य था। राजपूत भूखों मर रहे थे। राजकुमारी का शरीर पीला हो गया था। उसके अंग शिथिल हो गए, पर नेत्रों का तेज वैसा ही था। उसे कैदियों के भोजन की बड़ी चिंता थी। किले का प्रत्येक आदमी उसे देवी की भाँति पूजता था। उसने मलिक काफूर के पास जाकर कहा–''यवन सेनापति, मुझे तुमसे कुछ परामर्श करना है, मैं विवश हो गई हूँ। दुर्ग में खाद्य सामग्री बहुत कम हो गई है, और मुझे यह संकोच हो रहा है कि आपकी कैसे अतिथि सेवा की जाए। अब कल से हम एक मुट्ठी अन्न लेंगे और आप

लोगों को दो मुट्ठी उस समय तक मिलेगा, जब तक कि अन्न दुर्ग में रहेगा, आगे ईश्वर मालिक है।''

मलिक काफ़ूर की आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा ''राजकुमारी! मुझे यकीन है कि आप बीस किलों की हिफ़ाजत कर सकती हैं।''

''हाँ, यदि मेरे पास रसद हो तो।''

राजकुमारी चली गई।

अट्ठारह सप्ताह बीत गए। अलाउद्दीन के गुप्तचर ने आकर शाह को कोर्निस की।

''क्या? राजकुमारी रत्नावती किला देने को तैयार......!''

''नहीं खुदाबंद, वहाँ किसी तरकीब से रसद पहुँच गई है। अब किला, नौ महीने पड़े रहने पर भी हाथ न आएगा। फिर शाही फौज के लिए पानी अब किसी तालाब में नहीं है।''

''और क्या खबर है?''

''रत्नसिंह ने मालवे तक शाही सेना को खदेड़ दिया है।''

अलाउद्दीन हत्बुद्धि हो गया और महाराज से संधि का प्रस्ताव किया।

सुंदर प्रभात था। राजकुमारी ने दुर्ग प्राचीर पर खड़े होकर देखा, शाही सेना डेरे–डंडे उखाड़कर जा रही है और महाराज रत्नसिंह अपने सूर्यमुखी झंडे फहराते, विजयी राजपूतों के साथ दुर्ग की ओर आ रहे हैं।

मंगल कलश सजे थे। बाजे बज रहे थे। दुर्ग में प्रत्येक वीर को पुरस्कार मिल रहा था। मलिक काफ़ूर महाराज की बगल में बैठे थे।

महाराज ने कहा–''खाँ साहब! किले में मेरी गैरहाज़री में आपको तकलीफ और असुविधाएँ हुई होंगी, इसके लिए आप माफ करेंगे। युद्ध के नियम सख्त होते हैं फिर किले पर भारी मुसीबत आ गई थी। लड़की अकेली थी, जो बन सका, किया।''

मलिक काफ़ूर ने कहा–''महाराज! राजकुमारी तो पूजने लायक है, इंसान नहीं, फरिश्ता है। मैं ताजिंदगी इनकी मेहरबानी नहीं भूल सकता।''

महाराज ने एक बहुमूल्य सरपेच दिया और पान का बीड़ा देकर विदा किया।

दुर्ग में धौंसा बज रहा था।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

शब्दार्थ

दुर्गाधिपति	दुर्ग के मालिक (राजा)	धूर्त	धोखेबाज
विलीन	लुप्त	उपत्यका	पहाड़ी के नीचे की भूमि
घूस	रिश्वत	जय निनाद	जय ध्वनि
कोर्निस	झुककर सलाम करना		

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. राजकुमारी का नाम क्या था?
2. दुर्ग को किसकी सेना ने घेर रखा था ?
3. राजकुमारी के पिता का क्या नाम था?

लिखें

निम्नलिखित वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर सही वाक्य पर (✓) और गलत वाक्य पर (✗) का निशान लगाइए–

1. जैसलमेर के दुर्गाधिपति महाराज रत्नसिंह थे। ( )
2. ''बेटी तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है'' ये शब्द बुजुर्ग सैनिक ने कहे। ( )
3. राजकुमारी ने जिसे मार गिराया, वह मृत व्यक्ति यवन था। ( )
4. बुजुर्ग को गद्दारी करने के लिए सोने का प्रलोभन दिया था। ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजकुमारी की तुलना किससे की गई है?
2. मलिक काफूर कौन था?
3. राजकुमारी के सम्मुख उनके पिता के संदेश वाहक के रूप में कौन आया था?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पाठ में दुश्मन को किन–किन उपनामों से पुकारा गया है?
2. यवनों के आक्रमण का राजकुमारी द्वारा किए गए उपहास का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
3. मलिक काफूर ने बुजुर्ग सैनिक को रिश्वत क्यों दी थी?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिखिए।

2. राजकुमारी के रण कौशल का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1. ''राजकुमारी रत्नावती दुश्मनों के दाँत खट्टे कर रही थी'' यहाँ 'दाँत खट्टे करना' एक मुहावरा है। पाठ में आए मुहावरों को छाँटकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. **जिस सामासिक पद के दोनों पदों में विशेषण–विशेष्य या उपमान–उपमेय का संबंध हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।**
   जैसे – महाराज = महान है जो राजा।
   आप कर्मधारय समास के पाँच उदाहरण लिखिए।
3. यवन सैनिक घोड़े पर बैठकर आया; पर किले का दरवाज़ा बंद था। जैसे ही उसने दरवाज़ा खटखटाया, चिड़िया पर फड़फड़ाकर उड़ गई। उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द 'पर' का प्रयोग तीन अलग–अलग अर्थो में हुआ है। आप भी ऐसे वाक्य बनाइए जिसमें एक शब्द का प्रयोग बार–बार हुआ हो और अर्थ हर बार अलग–अलग हो।
4. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए।
   बुजुर्ग, सैनिक, प्राचीर, सूर्य, द्वारा, चीत्कार, दाँत, दंग, दुःख

पाठ से आगे

1. जैसलमेर के दुर्ग के बारे में और भी जानकारी एकत्र करके लिखिए।
2. जैसलमेर को किन–किन नामों से जाना जाता है? पता लगाकर लिखिए।
3. दुर्ग के अलावा जैसलमेर में और कौन–कौनसे दर्शनीय स्थल हैं? सूची बनाइए।

कल्पना कीजिए

आप सर्दी की छुट्टियों में जैसलमेर अपने परिवार के साथ भ्रमण पर गए। आपने वहाँ क्या–क्या देखा? अपने शब्दों में यात्रा वृत्तांत लिखिए।

सृजन

दीयासलाई की तूलिकाओं की मदद से आप भी दुर्ग के मॉडल का सृजन कर सकते हैं। आवश्यक सामग्री थर्माकॉल शीट, सफेद ड्राइंग शीट, रंग (पानी वाले), ब्रुश, माचिस की तूलिकाएँ आदि।

खोज–बीन

आपने ''जैसलमेर की राजकुमारी'' के साहस की कहानी इस पाठ में पढ़ी। ऐसी ही साहस की कहानियाँ पुस्तकालय में पढ़िए।

संकलन

राजस्थान की गौरवगाथा एवं पराक्रम की घटनाओं का पता लगाकर 'मेरा संकलन' में लिखिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

खाद्य, उद्धरण, खट्टे, चिट्ठी

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''वीर पुरुष रोग–शैय्या पर मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र में मरना पसन्द करता है।''

पाठ 10

सुभाषचंद्र बोस का पत्र

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था जिसका कारण केवल यह रहा है कि आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे माँडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माँडले जेल में ही गुजारा था। इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में, स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें 'शंकर' और 'रामानुज' जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जेल के जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने जेल के वार्ड की तरह, वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद, मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माँडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने–जुलने नहीं दिया जाता था। उनको सांत्वना देने वाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंट भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी

खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थिति वाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना, एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में किस गति से आगे बढ़ रहा है।

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड संहिता के अंतर्गत बन्दी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माँडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देने वाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाली है और धीरे–धीरे वह व्यक्ति की जीवन शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा।

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी–छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की–सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उन यंत्रणाओं के बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय–समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था। हर बार मैंने अपने आपसे पूछा 'अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान् लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।' यह विश्व भगवान की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना, बंदी जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक

ही, उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और गीता भाष्य जैसे विशाल एवं युग निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

मैं जितना ही इस विषय पर चिंतन करता हूँ उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए। लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था और अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि लोकमान्य ने जब माँडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने–चुने ही रह गये थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुःख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुखद दुर्भाग्य किसी–न–किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक।

आपका स्नेहभाजन,

सुभाषचंद्र बोस

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

शब्दार्थ

प्रणयन	–	रचना	निष्कासित	–	निकाल बाहर करना
स्मृतियाँ	–	यादें	यंत्रणाएँ	–	यातनाएँ/पीड़ा
प्रतिष्ठा	–	साख	दूभर	–	मुश्किल/कठिन
सांत्वना	–	तसल्ली	दासता	–	गुलामी

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. यह पत्र किसने और कहाँ से लिखा है?
2. लोकमान्य तिलक ने कारावास में कितने वर्ष बिताए?
3. सुभाषचंद्र बोस ने श्री केलकर को पत्र क्यों लिखा?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. लोकमान्य तिलक को बीमारी थी–
   (क) मधुमेह की (ख) हृदय की
   (ग) श्वास की (घ) कोई भी नहीं ( )
2. सुभाषचंद्र बोस ने माँडले जेल को तीर्थ स्थल कहा; क्योंकि–
   (क) वहाँ लोग दर्शन–पूजन करने जाते थे
   (ख) वहाँ देश के क्रांतिकारियों को बंदी रखा जाता था
   (ग) वहाँ सुभाषचंद्र बोस को बंदी रखा गया था
   (घ) वहाँ तिलक को छह वर्ष तक बंदी बनाकर रखा गया था ( )

निम्न शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कर लिखिए–

(यातनाएँ, साख, चहारदीवारी, पुलिस)

1. बाजार में अनुराग की बड़ी .... है।
2. स्वतंत्रता सैनानियों को जेल में कई .... भोगनी पड़ी।
3. .... शांति और व्यवस्था बनाने के लिए आवश्यक है।
4. पक्षी भी पिंजरे की .... में सुखी नहीं रह पाते।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. "मेरे लिए यह एक तीर्थ स्थल है" यह वाक्य किसने कहा?
2. वे दंड संहिता के अंतर्गत बंदी थे। यहाँ 'वे' शब्द किनके लिए प्रयुक्त हुआ है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभाषचंद्र बोस को बरहमपुर जेल से कौन–सी जेल में स्थानांतरित किया गया?
2. जेल में लोकमान्य तिलक ने किस ग्रंथ की रचना की? इस ग्रंथ ने तिलक की क्या पहचान बनाई?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. लोकमान्य तिलक द्वारा जेल में की जाने वाली भेंटों के दौरान होने वाली समस्याओं को लिखिए।
2. लोकमान्य तिलक के बलिदान को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1. मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से नहीं मिलने दिया जाता था। उक्त वाक्य में 'मुझे विश्वास है' प्रधान उप वाक्य है। 'कि उन्हें किसी बंदी से नहीं मिलने दिया जाता था।' से जुड़ा हुआ है। **ऐसे वाक्य जिनमें एक प्रधान उपवाक्य हो तथा अन्य उपवाक्य उस पर आश्रित हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।** इसी प्रकार सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, जैसे– सुभाषचंद्र बोस ने पत्र लिखा।

   संयुक्त वाक्य में दो सरल वाक्यों को 'और', 'या' आदि समुच्चय बोधक अव्ययों से जोड़ दिया जाता है, जैसे – लोकमान्य तिलक ने गीता भाष्य लिखा और जेल में ही रहे।

   पाठ में आए ऐसे सरल, संयुक्त व मिश्र वाक्यों को छाँट कर लिखिए।

2. नीचे लिखे सामासिक पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–
अंतरिक्ष यान, स्वतंत्रता प्राप्ति, जल प्रदूषण, जल–जन्तु, मल निकासी, मौसम चक्र।

3. अपने भावों–विचारों के आदान प्रदान करने का सशक्त माध्यम है पत्र लेखन। यह प्राचीनकाल से चला आ रहा स्थायी तरीका है। इसके परिणामस्वरूप हम नेताजी का पत्र आज भी पढ़ पा रहे हैं। आज समय बदल रहा है। इंटरनेट, वाट्सएप, मोबाइल आदि कई माध्यमों से हम अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं, लेकिन पत्र को नकार नहीं सकते। पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–
(क) औपचारिक पत्र – यह पत्र विद्यालयों, कार्यालयों में पदाधिकारियों को औपचारिक विषयों के लिए लिखे जाते हैं।
(ख) अनौपचारिक पत्र – जब हम अपने परिजनों, मित्रों आदि को व्यक्तिगत रूप से संबोधित करते हुए कोई पत्र लिखते हैं, तो वह अनौपचारिक पत्र होता है। प्रस्तुत पाठ इसका उदाहरण है।
आप अपने नगर पालिका अध्यक्ष को पत्र लिखकर सफाई व्यवस्था के बारे में जानकारी दीजिए।

पाठ से आगे

स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की महती भूमिका रही थी, उनकी जीवनी का अध्ययन कीजिए।

सृजन

1. आपके विद्यालय में कई उत्सव, त्योहार मनाए जाते हैं। किसी एक उत्सव या त्योहार का वर्णन पत्र रूप में लिखकर अपने मित्र को भेजिए।
2. विभिन्न स्वतंत्रता सैनानियों के चित्र एवं जानकारी एकत्र कर 'मेरा संकलन' में संकलित कीजिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–
सुप्रसिद्ध, यद्यपि, उद्देश्य, बौद्धिक

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"जो राष्ट्र का हित, वही व्यक्ति का हित और जो राष्ट्र का कर्तव्य,
वही व्यक्ति का कर्तव्य – यह भावना जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति में जाग्रत हो जाएगी,
वह देश के लिए बड़ा ही सुदिन होगा।"

पाठ 11

गो संरक्षण से ग्राम विकास

अपने ऋषि–मुनियों ने गहन चिंतन के बाद यह उद्घोष किया है – ''गावो विश्वस्य मातरः''। भारतवर्ष में सदियों से 'गाय' धन और धान्य की दात्री अर्थात् एक उपयोगी पशु मात्र ही नहीं वरन् यहाँ के लोग उसे पवित्र और पूज्य मानकर अत्यंत आस्था का भाव रखते हैं। गोधन के प्रति आदर भाव हमारी पुरातन संस्कृति का अटूट हिस्सा रहा है। द्वापर काल में गोपाल नाम से विख्यात यदुकुल तिलक श्री कृष्ण स्वयं ग्वाला बनकर गोसेवा करते दृष्टिगोचर होते हैं, तो मध्य काल में हमें अकबर के राज्य काल में गोरक्षा की बहुत अच्छी व्यवस्था के उल्लेख दिखाई देते हैं।

भारतीय जन जीवन में गाय का अपना विशेष महत्त्व है। गाय चौपाया प्राणी है और उसे माँ के बराबर आदर दिया गया है। यह हमारी पारिवारिक व कृषि संस्कृति की आधार रही है। गाय को गोधन कहा है। पौराणिक काल में जिसके पास जितनी अधिक गायें, वह उतना ही धनी माना जाता था। अतएव गायों की सुरक्षा को एक मानवीय कर्तव्य के रूप में परिभाषित किया गया है। गाय को वेदों में रक्षणीय, सुरक्षा के योग्य इसी अर्थ में स्वीकारा गया है कि वे सर्वोपरि धन है। गायों के जाये बैलों ने कृषि कार्य में इतना सहयोग किया कि वे गायों के साथ ही पूजा के योग्य भी माने गए।

मौर्य सम्राट अशोक ने अपने स्तंभों पर सिंह और अश्व के साथ ही बैलों का अंकन भी करवाया, यह बैल की शक्ति के महत्त्व का परिचायक है। बैल को बलीवर्द और वृषभ भी कहा जाता है और वह शिव भगवान की सवारी है।

भारत में गोसेवा की अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं।

गोधन के महत्त्व को स्वीकार कर श्री कृष्ण ने लोगों को इसके पालन–पोषण की सीख दी। महाराजा दिलीप ने जीवन में गोसेवा को महत्त्व दिया। उन्होंने 'नंदिनी' गाय की सेवा से जीवन को सार्थक किया। ऋषि वशिष्ठ द्वारा कामधेनु गाय की रक्षा की कहानी रामायण में आई है और पांडवों द्वारा गायों की सेवा का प्रसंग महाभारत में विस्तार से मिलता है।

गोधन के संरक्षण में मुगल शासक अकबर ने भी रुचि ली। 'आइने–ए–अकबरी' में

लिखा है कि उस काल में गायें प्रायः 20 सेर दूध देती थी और बैल 24 घंटे में 120 मील तक की दूरी तय कर सकते थे। अकबर ने गायों से भरे पूरे ब्रज और अन्य क्षेत्रों में चारागाह की व्यवस्था करवाई थी। इससे पूर्व भी गायों के चरने के लिए गाँव–गाँव में चारागाह भूमि रखी जाने की परंपरा रही है।

'घर–घर गाय और गाँव–गाँव गोठां' की मान्यता के मूल में यह विचार रहा है कि गायें प्रत्येक घर में हो और प्रत्येक गाँव में गोशाला और गोष्ठ हों। शास्त्रों में गोशाला के निर्माण को पुण्य कार्य कहा गया है। इसका सीधा संबंध हमारे नीरोगी जीवन से रहा है। ऋषियों ने बहुत पहले जान लिया था कि गोधन हमें सुख, समृद्धि और स्वास्थ्य दे सकता है। वैज्ञानिकों ने गायों पर जो अनुसंधान किए हैं, वे बताते हैं कि मानव जीवन के साथ गायों का संबंध परस्पर पोषण का हेतु है। गाय से प्राप्त द्रव्य 'पंचगव्य' के नाम से जाने जाते हैं। आचार्यों ने पंचगव्य से संचित विष के नष्ट होने का विचार दिया है। पेट के कीड़े, हृदय रोग, जलोदर, कैंसर, बवासीर के रोगी गोमूत्र से ठीक हुए हैं। गाय के गोबर में सोलह तत्व पाए जाते हैं और गोमूत्र में चौबीस। गोमूत्र असाध्य रोगों के उपचार में भी उपयोगी है।

सामान्यतः एक अच्छी गाय रोजाना 10 से लेकर 15 लीटर दूध देती है। गाय के दूध में भी लगभग वे सारे गुण होते हैं जो माँ के दूध में होते हैं। कई मिठाइयाँ गाय के दूध से बनती हैं। दही और छाछ भी उसी से मिलते हैं। गाय के घी का महत्त्व आयुर्वेद में तो विशेष है ही, अग्निहोत्र पर शोध करने वालों ने भी इसे महत्त्वपूर्ण माना है। पर्यावरण की शुद्धि की क्षमता गाय के घी से हवन करने में है। यह ओजोन परत के छेद को पाटने में भी उपयोगी है।

आज भी गाय हमारी अर्थव्यवस्था का आधार सिद्ध हो सकती है। गोपालन से परिवार का भरण–पोषण का अधिकांश गुजारा गोधन से प्राप्त दूध, दही, छाछ, घी जैसे पोषक पदार्थों से हो जाता है। खेती में सहायक बैल सामान ढोने में सहायक बन, महँगे पेट्रोलियम पदार्थों से मुक्त ग्रामीण पर्यावरण में संतुलन भी बनाते हैं। गोधन का गोबर ईंधन बचाने व ऊर्जा उत्पादन कर आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाता है। गोपालक की दिनचर्या अनुशासन के धागे में ऐसी पिरोयी जाती है कि वह स्वस्थ जीवन को संबलन प्रदान करती है। गोमय और उससे प्राप्त मिथेन गैस का उपयोग भोजन बनाने में हो सकता है।

गाय की रक्षा का अर्थ हमारी अर्थव्यवस्था को बचाना है। गाँधीजी ने इसीलिए कहा था–''गाय बचेगी तो मनुष्य बचेगा, वह नष्ट हुई तो उसके साथ हम सभी यानी प्रकृति, पशु–पक्षी, पर्यावरण, हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जाएगी।''

भारतीय गायों में जो गुण पाए जाते हैं, वे विदेशी प्रजाति की गायों में नहीं मिलते। क्योंकि भारतीय गायें स्थानीय एवं भौगोलिक परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में सक्षम होती है। भारतीय गायों में गीर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, हरियाणवी आदि नस्लें मुख्य हैं। गुजरात में अनेक जगहों पर 30 लीटर दूध देने वाली भारतीय गायें हैं। इजराइल देश ने गीर नस्ल की गाय से 120 लीटर दूध रोजाना उत्पादन करके दुनिया को बता दिया है कि भारतीय गाय दूध देने की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं। सामान्यतः देशी गायें हरी घास और उत्तम पोषण आहार मिलने पर 10 से 25 लीटर तक दूध प्रतिदिन दे सकती हैं। भारतीय जन जीवन में गाय के प्रति श्रद्धा का भाव, उसके पौराणिक महत्त्व एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार होने से वर्तमान समय में गाय का संरक्षण एवं संवर्धन आज की महती आवश्यकता है।

हमें पालती है गाय

प्रायः यह कहा जाता है कि गाय हम पालते हैं जबकि सच ये है कि गाय हमें पालती हैं। हमारे देश को कृषि के लिए अधिकांश ऊर्जा आज भी गोवंश से मिल रही है। देश में जितना दूध पैदा होता है, उसका अधिकांश गायों से मिलता है।

कार्बोहाइड्रेड, वसा, अल्बुमिनाइड, क्षार तथा विटामिन होने के कारण गाय का दूध प्रौढ़ और बालकों के लिए संपूर्ण आहार है। गाय के घी से होने वाले हवन का धुआँ जहाँ–जहाँ फैलता है, वहाँ कीटाणु अथवा बैक्टीरिया नहीं रहते हैं। रूस में एक अध्ययन से यह सिद्ध हुआ है।

गाय के दूध में क्या कितना?

- पानी – 87.3 प्रतिशत
- प्रोटीन्स – 4.0 प्रतिशत
- वसा – 4.0 प्रतिशत
- कार्बोहाइड्रेट्स – 4.0 प्रतिशत
- खनिज (मिनरल्स) – 0.7 प्रतिशत
- ऊर्जा (कैलोरी) – 6.5 प्रतिशत

शब्दार्थ

पुरातन	–	बहुत पुराना	दृष्टिगोचर	–	दिखाई देना
चौपाया	–	चार पैरों वाला	विनिमय	–	लेन–देन
रक्षणीय	–	जिसकी रक्षा की जाए	सर्वोपरि	–	सबसे ऊपर
चरनोट	–	चरने का स्थान, चारागाह	बवासीर	–	मस्सा, अर्श (एक बीमारी का नाम)
जलोदर	–	जल की अधिकता से होने वाले रोग			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. भगवान कृष्ण को 'गोपाल' क्यों कहा जाता है?
2. गो संरक्षण के बारे में 'आइने–ए–अकबरी' में क्या लिखा है?
3. 'हमें गाय पालती है', कैसे?
4. भारतीय गायों की नस्लों के नाम बताइए।

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. ''गावो विश्वस्य मातरः'' गाय के लिए ये शब्द कहे हैं–

(क) सम्राट अशोक ने (ख) मुगल शासक अकबर ने

(ग) ऋषि–मुनियों ने (घ) राजा दिलीप ने ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. हमारी पारिवारिक एवं कृषि संस्कृति का आधार किसे माना है?
2. वेदों में गाय को किस अर्थ में स्वीकारा गया है?
3. राजा दिलीप ने किस गाय की सेवा की?
4. ऋषि वशिष्ठ ने किस गाय की रक्षा की थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सम्राट अशोक ने अपने स्तंभों पर क्या–क्या अंकन करवाया?
2. गाय से प्राप्त द्रव्य 'पंचगव्य' के नाम से जाने जाते हैं। उनके नाम लिखिए।
3. गोमूत्र के औषधीय उपयोग से ठीक होने वाले रोगों के नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. गाय को ग्राम विकास का आधार माना गया है, क्यों? अपने विचार लिखिए।
2. गाय पर एक विस्तृत निबंध लिखिए।

भाषा की बात

1. गोमूत्र असाध्य रोगों के उपचार में भी उपयोगी है।

   जिसके पास जितनी अधिक गायें, वह उतना ही अधिक धनी माना जाता था।

   रेखांकित शब्दों से वाक्य के अर्थ में विशेष परिवर्तन हुआ है। ऐसे शब्दों को (ही, भी, तक)निपात कहा जाता है। ये अव्यय होते हैं। निपातों का स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है। आप भी पाठ में से निपात वाले वाक्यों को छाँटकर लिखिए।
2. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए तथा उनके सही भेद पर सही का निशान लगाइए–

   (क) वे गायों के साथ ही पूजा के योग्य भी माने गए हैं। (पुरुषवाचक / संबंधवाचक)

(ख) यह हमारी पारिवारिक व कृषि संस्कृति का आधार रही है। (पुरुषवाचक / संबंधवाचक)
(ग) गाय चौपाया प्राणी है और उसे माँ के बराबर आदर दिया गया है। (पुरुषवाचक / संबंधवाचक)
(घ) वह चरकर अपने आप घर आ जाती है। (पुरुषवाचक / निजवाचक)

3. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए–
गौ, प्रतिदिन, संस्कृति, हृदय, मिठाई, सिंह, ऋषि, वशिष्ठ, ग्रामीण

पाठ से आगे

गाँधीजी ने कहा था ''गाय बचेगी तो मनुष्य बचेगा।'' इस कथन पर अपना मत प्रकट कीजिए।

मन की बात

1. महाराजा दिलीप एवं नंदिनी से संबंधित अंतर्कथा शिक्षक जी से जानकर प्रार्थना सभा एवं बालसभा में सुनाइए।
2. इस पाठ में गाय के बारे में विस्तृत जानकारी है। आप अपनी पसंद के किसी एक चौपाया जानवर के बारे में विस्तृत जानकारी कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

चर्चा करें

हमने पाठ में गाय आधारित ग्राम विकास को जाना है, ग्राम विकास में गाय के साथ और कौन–कौन से आधार है? चर्चा कीजिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

श्रद्धा, सिद्ध, सम्बन्ध, समृद्धि, पाण्डव

जानें, गुनें और जीवन में उतारें
''कर्म कौशल, कर्म करने से आता है।''

केवल पढ़ने के लिए

हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है।
जा–जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में।
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम।
संघर्षों का मैदान छोड़, मत भागो तुम।।
कुछ किए बिना ही जय–जय कार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

हरिवंश राय बच्चन

कुंडलियाँ

(1)

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाँऊ न रहत निदान।।
ठाँऊ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही की कीजै।।
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसि दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।।

(2)

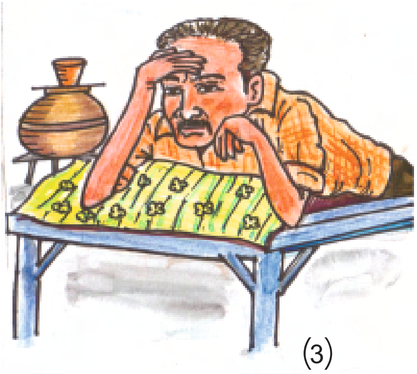

बिना बिचारे जो करै, सो पाछै पछताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान—पान सम्मान, राग—रँग मनहिं न भावै।।
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत हैं जिय माहिं, करै जो बिना बिचारे।।

(3)

हीरा अपनी खानि को, बार—बार पछताय।
गुन—कीमत जाने नहीं, कहाँ बिकानो आय।।
कहाँ बिकानो आय, छेद करि कटि में बाँध्यो।
बिन हरदी बिन लौन, साग ज्यों फूहर राँध्यो।।
कह गिरधर कविराय, कहाँ लगि धरिये धीरा।
गुन—कीमत घटि गई, यहै कहि रोयो हीरा।।

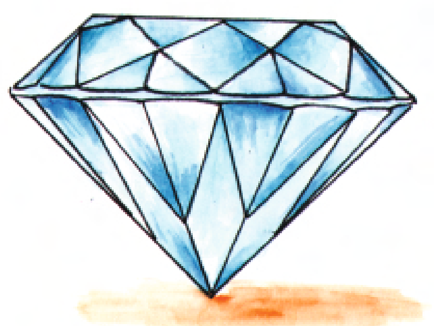

(4)

लाठी में गुन बहुत है, सदा राखिए संग।
नदियाँ नाला जहाँ पड़ै, तहाँ बचावत अंग।।
तहाँ बचावत अंग, झपट कुत्ते को मारै।
दुश्मन, दामनगीर, ताही का मस्तक फारै।।
कह गिरधर कविराय, सुनो हे धुर के साठी।
सब हथियारन छोड़, हाथ में राखिए लाठी।।

गिरधर

शब्दार्थ

ठाँऊ न रहत	–	स्थिर नहीं रहता	तौलत	–	तौलती है
जिय माहिं	–	अपने मन में	खानि	–	घर, खान
फूहर	–	गँवार	टरत	–	टलना
पाहुन	–	मेहमान	मारै	–	मारना

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कुंडलियाँ पाठ के लेखक का नाम बताइए।
2. ''बिना विचारे जो ....'' कुंडलियाँ को यदि हम जीवन में उतार लें, तो हमें क्या–क्या लाभ होगा?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. राँध्यो का अर्थ है–
   (क) सेकना (ख) पकाना
   (ग) रमना (घ) राग आलापना ( )
2. पाठ में 'पाछै' शब्द का अर्थ है–
   (क) पीछा करना (ख) पिछवाड़े रहना
   (ग) बाद में (घ) वापस करना ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. खान–पान सम्मान, ... मनहिं न भावै।
2. गुन .... घटि गई, यहै कहि रोयो हीरा।
3. मीठे वचन .... विनय, सब ही की कीजै।
4. नदियाँ–नाला जहाँ पड़ै, तहाँ .... अंग।

अति लघूत्तरात्मक

1. दौलत पाकर मनुष्य को क्या न करने की सलाह दी गई?
2. आदमी की जग हँसाई कब होती है?
3. हीरा को छेद कर कमर में बाँधने पर हीरे को कैसा लगता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. हीरा किस बात पर पछताने लगा?
2. कुंडलियाँ में लाठी के क्या–क्या गुण बताए गए हैं?
3. किसी काम को बिना सोचे–समझे करने पर क्या परिणाम होते हैं?
4. कवि गिरधर ने दौलत को मेहमान क्यों कहा है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

1. कुंडलियाँ "हीरा अपनी खानि को, ... यहै कहि रोयो हीरा" पंक्तियों की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

भाषा की बात

1. "पाहुन निसि–दिन चारि, रहत सब ही के दौलत" में निसि–दिन से तात्पर्य निशा (रात) व दिन से है।
   उक्त 'कुंडलियाँ' पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–
   यश, हँसाय, बिगाड़ना, सम्मान, गुण
2. दो या दो से अधिक पदों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है, द्वंद्व समास। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं, जैसे :– माता और पिता = माता–पिता।
   इसमें 'और' शब्द का लोप होकर योजक चिह्न (–) आ जाता है। ऐसे ही द्वंद्व समास के दस उदाहरण लिखिए।
3. पाठ में आए निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–
   जस, गुन, छेद, माथा
4. पाठ में आए निम्नलिखित कारकों के विभक्ति चिह्नों को लिखिए–
   1. अधिकरण कारक
   2. संबोधन कारक
   3. कर्मकारक
   4. संबंध कारक

पाठ से आगे

1. 'बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पाँव' उक्ति पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. पाठ से संबंधित दोहे व पंक्तियों का संकलन कीजिए; जैसे–
   तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
   वशीकरण एक मंत्र है, तजिए वचन कठोर ।।

यह भी करें

1. 'कुंडलियाँ' छंद के सस्वर वाचन का अभ्यास कीजिए और बाल–सभा में सुनाइए।
2. पाठ में लाठी के अनेक उपयोग बताए गए हैं। कक्षा में एक रूमाल रखकर बिना बोले हाव–भाव से प्रत्येक विद्यार्थी एक उपयोग बताएँ।

यह भी जानें

कुंडलियाँ छंद

जिस प्रकार साँप कुंडली लगाकर बैठता है तब उसके फन और पूँछ एक ही रेखा (सीध) में होते हैं, इसी प्रकार यह छंद जिस शब्द से प्रारंभ होता है, उसी शब्द पर ही आकर खत्म होता है। इसमें प्रथम दो पंक्तियाँ दोहे की और शेष चार पंक्तियाँ रोला छंद की होती हैं।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"गुरु को अगर हमने देह रूप में माना तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं अज्ञान पाया।"

पाठ 13

अपराजिता

कभी–कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो, किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किंतु उसे वह नत मस्तक आनंदी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। दूसरे ही क्षण, धीरे–धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर वैसाखियों से ही व्हील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती–ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

धीरे–धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते–भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ–साथ धीरे–धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा। दुख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा । केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण, मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त, आँखों में एक अदम्य उत्साह, प्रतिपल–प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कंट जिजीविषा और फिर कैसी–कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ।

"मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग्स रिसर्च इंस्टीट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर विषय माइक्रोबायोलाजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?"

"मैडम, आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट–वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है?"

यहाँ कभी सामान्य–सी हड्डी टूटने पर या मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है। और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी–बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गर्दन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

"मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।"

उसने मुझे तस्वीर दिखाई। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर उतार सकती थी, किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदृढ़ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किंतु आज हम शायद पहली बार इस पीएच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए डॉ. चंद्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी–सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ–साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में। अपंग स्त्री–पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने

वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गर्दन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े–से–बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा, ''आप व्यर्थ पैसा बर्बाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गरदन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।'' इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने विधाता से ये नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर–उधर देख भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थी। बेंगलूर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिन्ता न करे मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपनी पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहती। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एससी. किया, प्राणिशास्त्र में एम.एससी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बेंगलूर के प्रख्यात इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता–पिता ने पेंसिलवानिया से व्हील चेयर मँगवा दी जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह–बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध–क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत–विक्षत शरीर घावों के असंख्य किंतु आभामंडित भव्य मुद्रा।

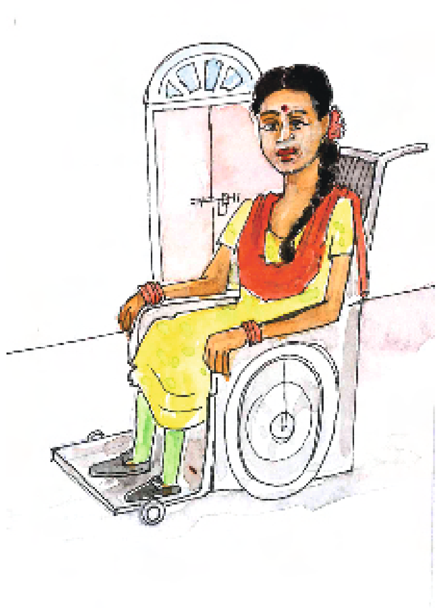

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही

उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने अपनी कढ़ाई–बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता–पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुसकुराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य–चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी'' किन्तु डॉ. चंद्रा को प्रोफेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान् योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।''

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा–सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं–'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी–बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वयं माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया–लगी कुर्सी के पीछे चक्र–सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लोंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जुड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।''

शिवानी

शब्दार्थ

अपराजिता	–	जो कभी पराजित न हुई हो	विधाता	–	ईश्वर
अकस्मात	–	अचानक	अभिशप्त	–	शापित
उत्फुल्ल	–	प्रसन्नता पूर्वक	अवरुद्ध	–	रुका हुआ
पीएच.डी.	–	डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (एक उपाधि का नाम)			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. डॉ. चंद्रा ने कौन–कौन सी उपाधियाँ प्राप्त की थीं?
2. लेखिका ने "नशे की गोलियाँ खाने लगा" किस व्यक्ति के लिए कहा और क्यों?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. अपराजिता कहा गया है–
   (क) श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को (ख) प्रोफेसर को
   (ग) आई.ए.एस. को (घ) चंद्रा को ( )
2. डॉ. चंद्रा को माइक्रोबायोलॉजी में पीएच.डी. मिली–
   (क) 1976 ई. मे. (ख) 1977 ई. मे.
   (ग) 1967 ई. मे. (घ) 1966 ई. मे. ( )

निम्नलिखित वाक्यों में से गलत वाक्यों को सही करके लिखिए

1. 'अपराजिता' पाठ की लेखक शिवानी है।
2. डॉ. चंद्रा अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति थी।
3. डॉ. चंद्रा की माताजी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् ने अपनी बेटी के लिए कोई साधना नहीं की।
4. हमें विपरीत परिस्थितियों में हाथ–पर–हाथ धर कर बैठ जाना चाहिए।
5. डॉ. चंद्रा का निचला धड़ काम नहीं करता था।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. "मैडम मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दे" ये शब्द किसके हैं?
2. लेखिका ने डॉ. चन्द्रा को सबसे पहले कहाँ देखा?
3. 'वीर जननी' पुरस्कार किसे मिला?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. डॉ. चंद्रा की शारीरिक अक्षमता उसका साहस थी, कैसे?
2. "ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल देता है" चंद्रा की माता जी ने यह बात क्यों कही?
3. लखनऊ के छात्र को डॉ. चंद्रा से क्या प्रेरणा लेनी चाहिए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. अपराजिता डॉ. चंद्रा की माताजी सहृदयता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं, कैसे? अपने शब्दों में लिखिए।
2. ''विचार परिवर्तनशील होते हैं।'' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा था?

भाषा की बात

1. ''डॉ. चंद्रा अदम्य साहस की धनी थी'' वाक्य में 'साहस' शब्द डॉ. चंद्रा की विशेषता बता रहा है यह गुणवाचक विशेषण है। इसी प्रकार के अन्य विशेषण छाँटकर सूची बनाइए।
2. अपठित शब्द का अर्थ होता है, जो पहले से न पढ़ा हो। अपठित गद्यांश गद्य के वे अंश हैं, जो हमने पहले नहीं पढ़े हैं, ऐसे गद्यांशों को पढ़कर समझा जाता है, फिर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं। आप भी नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   बाँस का यह झुरमुट मुझे अमीर बना देता है। उससे मैं अपना घर बना सकता हूँ। बाँस के बर्तन और औज़ार इस्तेमाल करता हूँ। सूखे बाँस को मैं ईंधन की तरह इस्तेमाल करता हूँ। बाँस का आचार खाता हूँ। बाँस के पालने में मेरा बचपन गुजरा। आज मेरा बच्चा भी बाँस के पालने में ही झूलता है। मैं बाँस से बनी सामग्री बेचकर जीवन यापन करता हूँ।

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
   (ख) लेखक को अमीर कौन बना देता है?
   (ग) लेखक की जीविका कैसे चलती है?
3. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए—
   अपराजिता, चंद्रा, चिकित्सा, लखनऊ, प्रयोगशाला, ईश्वर, पुत्री, ईंट, चींटी, प्रसिद्ध, प्रौढ़ा, आश्चर्य

पाठ से आगे

1. अपराजिता के स्थान पर आप होते तो क्या करते? सोच कर लिखिए।
2. पाठ में सम्मिलित निम्न योग्यताओं/परीक्षाओं के पूरे नाम शिक्षक से जानिए—
   बी.एससी., एम.एससी., पीएच.डी., आई.ए.एस.।
3. ऐसी अन्य उपाधियों/योग्यताओं की सूची बनाइए।

यह भी करें

1. राजस्थान में कई ऐसी संस्थाएँ हैं जो विशेष योग्यजन की चिकित्सा सहायता से जुड़ी हैं। उनका पता कीजिए और अपनी व्यक्तिगत डायरी में लिखिए। जरूरतमंद व्यक्तियों तक उक्त जानकारी पहुँचाइए।
2. इस प्रकार की कहानियों का संकलन कर साहस और सौहार्द की घटनाएँ बाल–सभा में सुनाएँ।

मन की बात

1. डॉ. चंद्रा को लेखिका ने अपराजिता कहा है। आप उसे और क्या नाम देना चाहेंगे?
2. 'मेरी माँ' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए—

द्वार, बुद्धि, दीप्त, प्रसिद्ध

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''शिष्ट वही है, जिसका कर्म–कौशल विशिष्ट है।''

पाठ 14

जीप पर सवार इल्लियाँ

इतना मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि चने के पौधे होते हैं, पेड़ नहीं होते। चने का जंगल नहीं होता, खेत होते हैं। चने के झाड़ पर चढ़ने वाली बात सरासर गलत है, कपोल कल्पना है। इससे आगे चने के बारे में मेरी जानकारी इतनी ही है, जितनी हर बेसन खाने वाले की होती है कि वाह क्या बात है आदि। मुझसे यदि चने पर भाषण देने के लिए कहा जाए, तो मैं कुछ यों शुरू करूँगा कि भाइयो, जिस तरह सूर्य मेरे मकान के इस बाजू उगकर उस बाजू डूब जाता है, उसी तरह चना भी खेत में उगकर आदमी अथवा घोड़े के मुँह में डूब जाता है। इतना कहकर मैं अपना स्थान ग्रहण कर लूँगा–यह भय बताकर कि समय अधिक हो रहा है। बात यह है कि मेरे मुँह में पानी आ जाने के कारण, अधिक बोल नहीं सकूँगा। चना मेरी कमजोरी है। यह कमजोरी मुझे ताकत देती है। सिर्फ खाते समय, बोलते समय नहीं।

पर इधर शहर के अख़बारों में चने की चर्चा ज़रा जोरों पर है। इन दिनों मौसम खराब रहा। हम तो घर में घुसे रहे। पर पता नहीं कि बाहर पानी गिरा और ठंड बढ़ गई। इसका नतीजा यह हुआ कि शहर के आसपास चने के खेत में इल्ली लग गई। अख़बारों में शोर हुआ कि चने में इल्ली लग गई है और सरकार सो रही है वगैरह। एक अख़बार ने चने के पौधे पर बैठी इल्ली की तस्वीर भी छापी, जिसमें इल्ली सचमुच में सुंदर लग रही थी। चना हमने भी कम नहीं खाया, पर देखिए पक्षपात कि तस्वीर इल्ली की ही छपी।

मैं इल्ली के विषय में कुछ नहीं जानता। कभी परिचय का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। इल्ली से बिल्ली और दिल्ली तक की तुक मिलाकर एक बच्चों की कविता लिख देने के सिवाय मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, पर लोग थे कि इल्ली का ज़िक्र ऐसे इत्मीनान से करते थे, जैसे पड़ोस में रहती हो।

मेरे एक मित्र हैं। ज्ञानी हैं यानी, पुरानी पोथियाँ पढ़े हुए हैं। मित्रों में एकाध मित्र बुद्धिमान भी होना चाहिए। इस नियम को मानकर मैं उनसे मित्रता बनाए हुए हूँ। एक बार विद्वता की झोंक में उन्होंने बताया था एक नाम 'इला।' कह रहे थे कि अन्न की अधिष्ठात्री देवी है इला यानी पृथ्वी। मुझे बात याद रह गई। जब इल्ली लगने की खबरें चलीं, तो मैं सोचने लगा कि 'इला' का 'इल्ली' से क्या संबंध? इला अन्न की अधिष्ठात्री देवी हैं और इल्ली अन्न की नष्टार्थी देवी। धन्य हैं, ये इल्लियाँ इसी इला की पुत्रियाँ।

अपनी ममी मादाम 'इला' की कमाई खाकर अख़बारों में पब्लिसिटी लूट रही हैं। मैं अपने इस इला–इल्ली ज्ञान से प्रभावित हो गया और सोचने लगा कि कोई विचार गोष्ठी हो, तो मैं अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करूँ, पर ये कृषि विभाग वाले अपनी गोष्ठी में हमें क्यों बुलाने लगे?

जब अख़बारों ने शोर मचाया तो नेताओं ने भी भाषण शुरू किए या शायद नेताओं ने भाषण दिए, तब अख़बारों ने शोर मचाया। पता नहीं पहले क्या हुआ? खैर सरकार जागी, मंत्री जागे, अफ़सर जागे, फाइल उदित हुईं। बैठकें चहचहाई, नींद में सोए चपरासी कंटीन की ओर चाय लेने चल पड़े। वक्तव्यों की झाडुएँ सड़कों पर फिरने लगीं। कार्यकर्ताओं ने पंख फड़फड़ाए और वे गाँवों की ओर उड़ चले। सुबह हुई। रेंगती हुई रिपोर्टों ने राजधानी को घेर लिया और हड़बड़ा कर आदेश निकले। शहर के आसपास यह होता रहा पर बंदा अपना छह पृष्ठ का अख़बार दस पैसों में पढ़ता यहीं बैठा रहा।

एक दिन एक कृषि अधिकारी ने कहा, ''चलो इल्ली उन्मूलन की प्रगति देखने खेतों में चलो। तुम भी बैठो हमारी जीप में।'' मैंने सोचा, चलो इसी बहाने पता लग जाएगा कि चने के पौधे होते हैं या झाड़ और मैं जीप में सवार हो लिया। रास्ते भर मैं उनके विभाग के अन्य अफ़सरों की बुराइयाँ करता, उनका मनोरंजन करता रहा। कोई डेढ़ घंटे बाद हम एक ऐसी जगह पहुँच गए, जहाँ चारों तरफ खेत थे। वहाँ एक छोटा अफ़सर खड़ा इस बड़े अफ़सर का इंतजार कर रहा था। हम उतर गए। मैंने गौर से देखा, चने के पौधे होते हैं, खेत होते हैं।

हम पैदल चलने लगे। चारों ओर खेत थे। मैंने एक किसान से पूछा, ''तुम खेतों को खोदते हो तो क्या निकलता है?''

वह समझा नहीं। फिर बोला, ''मिट्टी निकलती है।''

''इसका मतलब है प्राचीन काल में भी यहाँ खेत ही थे,'' मैंने कहा। मेरी जरा इतिहास में रुचि है। खुदाई करने से इतिहास का पता लगता है। अगर खुदाई करने से नगर निकले, तो समझना चाहिए कि यहाँ प्राचीन काल में नगर और सिर्फ मिट्टी निकले तो समझना चाहिए कि खेत थे।

आगे–आगे बड़ा अफ़सर, छोटे अफ़सर से बात करता जा रहा था।

''इस खेत में तो इल्लियाँ नहीं हैं?'' बड़े अफ़सर ने पूछा।

''जी नहीं हैं'' छोटा अफ़सर बोला।

''कुछ तो नजर आ रही हैं।''

''जी हाँ, कुछ तो हैं।''

"कुछ तो हमेशा रहती हैं।"

"खास नुकसान नहीं करतीं।"

"फिर भी खतरा है।"

"कभी भी बढ़ सकती हैं।"

"जी हाँ, बढ़ सकती हैं।"

"सुना है, सारा खेत साफ कर देती हैं।"

"बिलकुल साफ कर देती हैं।"

"इस खेत पर छिड़काव हो जाना चाहिए।"

"जी हाँ, हो जाना चाहिए।"

"तुम्हारा क्या खयाल है?"

"जैसा आप फरमाएँ।" छोटे अफ़सर ने नम्रता से कहा। फिर वे दोनों चुपचाप चलने लगे।

"जैसी पोजीशन हो मुझे बताना, मैं हुक्म कर दूँगा।"

"मैं जैसी पोजीशन होगी, आपके सामने पेश कर दूँगा।"

"और सुनो।"

"जो हुक्म।"

"मुझे चना चाहिए, हरा बूट। घर ले जाना है। जीप में रखवा दो।"

"अभी रखवाता हूँ।"

"छोटा अफ़सर किसान की तरफ लपका।"

"ओय, क्या नाम है तेरा।"

किसान भाग कर पास आया। छोटे अफ़सर ने उससे घुड़ककर कहा, "अबे तेरे खेत में इल्ली है?"

"नहीं है हुजूर"

"अबे थी ना, वो कहाँ गई?"

"हुजूर पता नहीं कहाँ गई?"

"अबे बता, कहाँ गई सब इल्लियाँ?"

किसान हाथ जोड़कर काँपने लगा। उसे लगा इस अपराध में उसका खेत जब्त हो जाएगा। छोटे अफ़सर ने क्रोध से सारे खेत की ओर देखा और फिर बोला, "अच्छा खैर, जा, हरा–हरा चना छाँटकर साहब की जीप में रखवा दे। चल ज़रा जल्दी कर।"

किसान खेत से चने के पौधे उखाड़ने लगा। छोटा अफ़सर उसके सिर पर तना पड़ा था। इधर मैं और बड़ा अफ़सर चहलकदमी करते रहे। वह बोला, ''मुझे खेतों में अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन है, शांति है, सुख है।'' वह जाने क्या–क्या बोलने लगा। उसने मुझे मैथिलीशरण गुप्त की ग्राम जीवन पर लिखी कविता सुनाई जो उसने कभी आठवीं कक्षा में रटी थी। कहने लगा, ''मेरे मन में जब यह कविता उठती है, मैं जीप पर सवार होकर खेतों में चला आता हूँ।'' मैं बूटे तोड़ते किसान की ओर देखता सोचने लगा–''गुप्तजी को क्या पता था कि वे कविता लिखकर क्या नुकसान करवा देंगे।''

कुछ देर बाद हम लोग जीप पर सवार हो आगे बढ़ गए। किसान ने हमें जाते देख राहत की साँस ली। जीप में हरे चनों का ढेर पड़ा था। मैं खाने लगा वे लोग भी खाने लगे। एकाएक मुझे लगा कि जीप पर तीन इल्लियाँ सवार हैं, जो खेतों की ओर चलीं।

शरद जोशी

शब्दार्थ

कपोल–कल्पना	–	मन की गढ़ी हुई बात, कल्पना	अधिष्ठात्री	–	माता
उन्मूलन	–	जड़ से उखाड़ देना	इत्मीनान	–	धैर्य, धीरज
वक्तव्य	–	कथन			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. खेतों में इल्ली लगने का क्या कारण बताया?
2. लेखक को कृषि अधिकारी कहाँ ले गए?
3. किसान कब और क्यों घबराया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. अन्न की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है–
   (क) इला को (ख) इल्ली को
   (ग) नष्टार्थी देवी को (घ) कृषि विभाग की गोष्ठी को ( )
2. ''मुझे खेतों में अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन है, शान्ति है, सुख है।'' किसने कहा–
   (क) किसान ने (ख) छोटे अफ़सर ने
   (ग) बड़े अफ़सर ने (घ) लेखक ने ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पाठ के लेखक का नाम बताइए।

2. इल्लियों को किसकी पुत्री बताया गया है?
3. किसान को जीप में क्या रखने को कहा गया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''खैर सरकार जागी, मंत्री जागे, अफ़सर जागे, फाइलें उदित हुईं।'' ऐसा किसने और क्यों कहा?
2. पाठ में अफ़सरों की किस मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है?

दीर्घ लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अख़बारों में किस बात की चर्चा होने लगी और क्यों?
2. लेखक ने इला को अन्न की अधिष्ठात्री देवी तथा इल्ली को अन्न की नष्टार्थी देवी क्यों बताया?

भाषा की बात

1. इस पाठ में 'पब्लिसिटी' शब्द आया है जो अंग्रेज़ी भाषा का है, जिसका अर्थ होता है–प्रचार–प्रसार। पाठ में आए अन्य अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाइए और उनका अर्थ लिखिए।
2. पाठ में आए निम्न भाषिक तत्त्वों के उदाहरण छाँटिए–
   1. मुहावरे
   2. प्रत्यय
   3. उपसर्ग
   4. सन्धि शब्द
3. काँच से तरह–तरह की चीज़ें बनती हैं। इस वाक्य में रेखांकित शब्दों को कई प्रकार से प्रयोग कर सकते है; जैसे बाजार में आजकल तरह–तरह के मोबाइल प्रचलन में हैं। आप भी नीचे लिखे वाक्यों में से रेखांकित शब्दों का प्रयोग कर नए वाक्य बनाएँ–
   1. जिसमें इल्ली सचमुच सुन्दर लग रही थी।
   2. बड़े अफ़सर चहलकदमी करते रहे।
   3. मेरे जाते ही किसान भागकर आया।
4. भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो वाक्यों में प्रयुक्त होने पर अर्थवान हो जाते हैं तथा विचारों को स्पष्ट करने में एक विशेष भूमिका निभाते हैं। सार्थक शब्दों के द्‌वित्व रूप अपना मूल अर्थ छोड़कर एक विशेष अर्थ देते है; जैसे –
   1. घड़ी की टिक–टिक रात को सुनाई देती है।
   2. मक्खियाँ गंदगी पर भिन–भिन करती हैं।

   आप भी ऐसे शब्दों की सूची बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

पाठ से आगे

1. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' एक व्यंग्य पाठ है। व्यंग्य की ऐसी रचनाएँ और पढ़िए।
2. जब आप अफ़सर बन जाएँगें, तो क्या–क्या कार्य करना चाहेंगे? कल्पना के आधार पर लिखिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

विद्‌वता, बुद्धिमान, मिट्टी, हैँ

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''परिवार नागरिक जीवन की प्रथम पाठशाला है।''

पाठ 15

शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर–व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ, कब हारा।
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु–किनारे,

बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे–प्यारे
उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष से,
आग राम के शर से।
सिंधु देह धर "त्राहि–त्राहि"
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बंधन में।
सच पूछो तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की,
संधि–वचन संपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता
उसके पीछे जब जगमग है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

संपूज्य	–	पूजने के योग्य	बल का दर्प	–	शक्तिशाली का अहंकार
रिपु	–	शत्रु	विनत होना	–	झुकना, विनम्र होना
भुजंग	–	साँप	गरल	–	विष
अनुनय	–	विनती, प्रार्थना	नाद	–	स्वर, आवाज़
पौरुष	–	मर्दानगी	शर	–	बाण
मूढ़	–	मूर्ख, बुद्धिहीन	दीप्ति	–	कांति, चमक
नर–व्याघ्र	–	बाघ के समान शक्तिशाली और चालाक व्यक्ति			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पांडवों को कौरवों ने कब तक कायर समझा?
2. क्षमा किसे शोभा देती है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. कवि ने 'नर–व्याघ्र' कहा है–

   (क) अर्जुन को (ख) युधिष्ठिर को

   (ग) भीष्म पितामह को (घ) दुर्योधन को ( )

2. इस कविता में कौन किसको समझा रहा है–

   (क) श्रीकृष्ण अर्जुन को (ख) श्रीकृष्ण युधिष्ठिर को

   (ग) भीष्म पितामह युधिष्ठिर को (घ) भीष्म पितामह अर्जुन को ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. विषहीन, विनीत और सरल साँप द्वारा दी गई क्षमा को निरर्थक क्यों कहा गया है?
2. सागर ने राम की दासता कब स्वीकार की?
3. सहनशीलता, क्षमा, दया आदि गुणों की कद्र कब होती है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता का मुख्य संदेश क्या है? विस्तार से लिखिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए

   (क) क्षमा शोभती उस भुजंग को .... विनीत, विषहीन, सरल हो।

   (ख) सच पूछो .... तो शर में ही, जिसमें शक्ति विजय की।

भाषा की बात

1. 'विषहीन', 'क्षमाशील' की तरह 'हीन' एवं 'शील' जोड़कर दो–दो नए शब्द बनाइए।
2. प्रस्तुत कविता को पढ़ने पर हमारे मन में उत्साह का भाव पैदा होता है। **इसी प्रकार जब किसी रचना को पढ़ते हैं, तो हमें आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार प्राप्त आनंद को साहित्य में रस कहते हैं।**

पाठ से आगे

1. विनयहु न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीति।

   बोले राम सकोप तब, भय बिनु होहिं न प्रीति।।

   शिक्षक की सहायता से दोहे का अर्थ करते हुए पता कीजिए यह दोहा कहाँ से उद्धृत किया

गया है?

इसी भाव की अन्य रचना को ढूँढ़कर लिखिए।

2. यदि आप दुर्योधन के स्थान पर होते तो क्या करते? अपने विचार लिखिए।

यह भी करें

सागर द्वारा श्री राम की सेना को रास्ता देने की कथा अपने अभिभावक अथवा गुरुजन से जानिए।

संकलन

दिनकर की अन्य कविताओं को भी पढ़कर संकलित कीजिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

क्षमा वीरस्य भूषणम्

केवल पढ़ने के लिए

नरेंद्र से विवेकानंद

प्रख्यात अंग्रेज़ कवि विलियम वर्ड्सवर्थ की एक प्रसिद्ध कविता है–एक्सकरशन। एक बार प्रोफेसर हेस्टी छात्रों के समक्ष इस कविता की व्याख्या कर रहे थे। 'ट्रांस' जैसे महत्त्वपूर्ण शब्द की व्याख्या करते समय प्रोफेसर साहब ने दक्षिणेश्वर मन्दिर के पुजारी श्री रामकृष्ण परमहंस का उल्लेख किया। इसी सन्दर्भ को आगे बढ़ाते हुए प्रोफेसर साहब ने बताया कि श्री रामकृष्ण अक्सर 'ट्रांस' (समाधि) की स्थिति में आ जाते हैं। 'ट्रांस' एक प्रकार का आनंदमय आध्यात्मिक अनुभव है। इसी संदर्भ में यह जानना उचित होगा कि श्री रामकृष्ण ईश्वर की उपासना जगन्माता के रूप में करते थे। वे देवी की उपासना दक्षिणेश्वर में काली की मूर्ति के रूप में किया करते थे मूर्ति पूजा द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार करने के उनके इस विचार ने मूर्ति–पूजा विरोधी आंदोलन को एक घातक आघात पहुँचाया। इसके पूर्व भी नरेंद्र ने श्री

रामकृष्णके विषय में सुन रखा था। इस संत के बारे में उनके अपने कुछ संदेह थे। लेकिन, जब उन्होंने प्रोफेसर हेस्टी से भी उनके विषय में सुना तो वे दक्षिणेश्वर के इस संत से भेंट करने को आतुर हो उठे।

ऐसा कहा जाता है कि जाड़े की एक दोपहर में संभवतः 15 जनवरी, 1882 ई. रविवार को नरेंद्र श्री रामकृष्ण परमहंस से भेंट करने गए। श्री रामकृष्ण परमहंस से नरेंद्र की यह एक ऐतिहासिक भेंट थी। यह उनके जीवन का एक नया मोड़ था; क्योंकि उसके बाद में नरेंद्र के जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अध्याय प्रारंभ हुआ। उनका जीवन कुछ असामान्य कार्य के लिए ढालना था। कुछ अत्यधिक शक्तिशाली एवं गतिशील जीवन के लिए, वह जीवन क्या था? वह था—नरेंद्रनाथ का स्वामी विवेकानंद में रूपांतरण। श्री रामकृष्ण की नरेंद्र से प्रथम भेंट ही उनके लिए आनंदमय एवं रोमांचकारी थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि श्री रामकृष्ण की एक सच्चे शिष्य की खोज ईश्वर द्वारा आज पूरी हो गई। ऐसा उन्होंने भावावेश में आकर घोषित किया—'ओ मेरे प्यारे पुत्र! मैं कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।' श्री रामकृष्ण से उनकी इस ऐतिहासिक भेंट के बारे में हमें यह जानना चाहिए कि स्वयं नरेंद्र ने क्या कहा—"मैंने इस व्यक्ति के विषय में सुना और उनसे भेंट करने गया। वे देखने में बिल्कुल एक सामान्य व्यक्ति प्रतीत हुए जिनके विषय में कुछ उल्लेखनीय नहीं था। उन्होंने सीधी सरल भाषा का प्रयोग किया। मैंने सोचा—क्या यह व्यक्ति एक महान् गुरु हो सकता है? मैं उनके निकट बढ़ता गया और वही प्रश्न पूछा, जो मैं दूसरों से जीवनभर पूछता रहा था।"

"श्रीमन्! क्या आप ईश्वर में विश्वास रखते हैं?" उत्तर मिला—"हाँ।" "कैसे?" "क्योंकि मैं उसे देखता हूँ ठीक वैसे ही जैसे तुम्हें यहाँ देख रहा हूँ।"

"उनके इन उत्तरों ने मुझे तुरंत प्रभावित किया। यह प्रथम अवसर था, जब मैंने एक ऐसे व्यक्ति को पाया जो यह कहने का साहस रखता था कि उसने ईश्वर को देखा है।"

पाठ 16

हमारी भी सुनो

(प्रस्तुत एकांकी में पर्यावरण प्रदूषण न करने एवं पानी, बिजली के दुरुपयोग को रोकने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। पर्यावरण के संरक्षण, पानी एवं बिजली का सदुपयोग आदि नैतिक मूल्यों के विकास का प्रयास किया गया है।)

(पात्र–महाराजा, मंत्री, हवा, पानी, बिजली, कई लोग)

पहला दृश्य

(महाराजा का दरबार। महाराजा सिंहासन पर विराजमान हैं। महाराजा के सभी राज्य के मंत्री व दरबारी गण बैठे हैं। महाराजा के समक्ष खुले स्थान पर प्रजा जन खड़े हैं।)

महाराजा – मंत्री जी, क्या सभी शिकायतकर्ता उपस्थित हो गए हैं?

मंत्री – (खड़े होकर) हाँ, महाराज! यदि आपकी आज्ञा हो तो न्याय कार्यवाही प्रारंभ की जाए।

महाराजा – मंत्री जी, दरबार में आज जनसाधारण की संख्या अधिक नजर आ रही है। क्या हमारे राज्य में आपराधिक गतिविधियाँ बढ़ गई हैं?

मंत्री – नहीं, महाराज। राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति सही है। आपके राज में शेर–बकरी एक ही घाट पर पानी पीने की स्थिति में हैं।

महाराजा – फिर तो आज कोई रोचक वाद प्रस्तुत होने जा रहा होगा। उसे देखने–सुनने के लिए जनता यहाँ आई है।

मंत्री – हाँ, महाराज। आज तीन के विरुद्ध मुकदमा है। ये तीनों सीधे प्राणिमात्र के संपूर्ण जीवन से जुड़े हैं।

महाराजा – ओह! फिर तो न्याय करते समय मुझे कठिनाई का सामना करना होगा। खैर, आप उन तीनों के विरुद्ध बारी–बारी से वाद प्रस्तुत करें। पर तीन हैं कौन?

मंत्री – महाराज, उनके नाम जानने की उत्सुकता औरों को भी है। ये हैं–जल, वायु और बिजली।

महाराजा – मंत्री, अब तक तो जल, वायु और अग्नि हमारे लिए पूजनीय रहे हैं। आज हम इनके विरुद्ध शिकायत सुनेंगे। यदि शिकायत सही हुई तो इन्हें दंडित भी करना होगा।

मंत्री – हाँ, महाराज। न्याय के सामने सभी समान होते हैं। दोषी को दंडित होना ही होगा, चाहे उसकी प्रतिष्ठा, उसका पद कुछ भी हो।

महाराजा – हाँ, मंत्रीजी। हम इसी भावना से न्याय करेंगे। आप सबसे पहले जल के विरुद्ध मुकदमा प्रस्तुत करें।

(भीगे हुए कपड़ों में लड़का आता है, जो पानी बना हुआ है।)

पानी – महाराज की जय हो। महाराज, मैं नहीं जानता कि लोग मुझसे क्यों कुपित हैं। मैं एकदम निर्मल हूँ, महाराज।

मंत्री – महाराज, लोगों की यही शिकायत है कि पानी अब निर्मल नहीं रहा। नदियों और नहरों में पहले की तरह केवल मछलियों और जल जंतुओं के साथ नहीं बहता है। अपने साथ गंदगी बहाकर दूर–दूर तक फैलाता है। महाराज, लोगों का कहना है कि अब पानी का पानी उतर गया है।

पानी – नहीं, महाराज। यह दोष मेरा नहीं है। मैं जिन लोगों के काम आता हूँ, अब वे मेरी रक्षा नहीं करते वरन् उपेक्षा करते हैं।

महाराजा – तुम क्या कहना चाहते हो? तुम्हें सात तालों में बंद करके रखा जाए? नित्य प्रति तुम्हारी पूजा की जाए?

पानी – नहीं, महाराज, पुरानी कहावत है, 'बहता पानी और रमता जोगी ही अच्छा होता है। मैं यह भी नहीं चाहता कि जल पूजन के नाम पर लोग अवांछित वस्तुएँ नहर, नदी, कुएँ में फेंके।

महाराजा – तुम अपनी बात बाद में कहना। पहले मुझे लोगों की शिकायत सुनने दो।

लोग – हाँ, महाराज पहले हमारी बात सुनो।

पानी – महाराज, मुझे मालूम है। इन लोगों की यही शिकायत है कि पानी अब खराब हो गया है। इसे ये लोग जल प्रदूषण कहते हैं। पर महाराज, उसका एकमात्र कारण भी तो ये लोग ही हैं।

महाराजा – उल्टी शिकायत कर रहे हो?

पानी – हाँ, महाराज। गाँव में पहले जोहड़ के आस–पास की भूमि स्वच्छ रखी जाती थी। कोई वहाँ जूते पहनकर भी नहीं जाता था। अब वहाँ कूड़े के ढेर हैं। वर्षा के समय यह कूड़ा जोहड़ के पानी में मिल जाता है। पीने के पानी के तालाब में पशुओं को नहलाते हैं। इस कारण से मैं दूषित हो जाता हूँ। मुझे पीकर ये लोग बीमार हो जाते हैं। इसमें मेरा क्या दोष है महाराज?

महाराजा – पानी सिर्फ जोहड़ में ही तो नहीं होता?

पानी – हाँ, महाराज। मैं (पानी) जब नदी में होता हूँ तो मुझ पर रासायनिक आक्रमण होते हैं। कारखानों की गंदगी मुझ में डाल दी जाती है। महाराज, यही कहा जा सकता है कि लोग अपने हाथों अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

(लोग आपस में फुसफुसाते हैं। फिर एक बोलता है।)

एक – महाराज, यह तो मान लेते हैं कि इसमें हमारा कसूर है, पर कहीं बरसना, कहीं नहीं बरसना–यह तो इसकी मनमानी है।

पानी – नहीं महाराज, मुझ पानी की मर्जी कहाँ चलती है। मैं तो परिस्थितियों का दास हूँ, जहाँ का माहौल वर्षा के अनुकूल होता है, वहाँ मुझे बरसना ही पड़ता है। इन लोगों ने पहाड़ियों को काटकर मैदान बना दिए हैं। वृक्ष काटकर वन नष्ट कर दिए हैं। वहाँ वर्षा कैसे हो सकती है? वर्षा न होने के लिए ये लोग ही ज़िम्मेदार हैं।

दूसरा – जल अनुशासनहीन हो गया है, बाढ़ लाता है।

पानी – जो बादल बना है, वह तो बरसेगा ही। जहाँ वर्षा का पानी बहना चाहिए, जहाँ नदी बहनी चाहिए, जहाँ मेरे सुस्ताने की पुरानी जगह होगी, वहाँ तो मैं जाऊँगा ही। इन लोगों ने ऐसे स्थानों पर अपने ग्राम–नगर बसा लिए हैं। ऐसे घर तो डूबेंगे ही। मैं इनकी बनाई गलियों–नालियों में घूमता रहूँ। यह कैसे संभव है? ये लोग स्वयं अनुशासन में नहीं रहते और मुझसे इसकी आशा करते हैं। खुद श्रीमान बैंगन खाए, ओरों को परहेज बताएँ।

तीसरा – महाराज, पानी कुछ ज़्यादा ही अनियंत्रित हो रहा है। इसकी जबान पर भी लगाम नहीं है। हमारा गाँव सदियों से ऊँची जगह पर बसा है। फिर भी इस बार हमारा गाँव बाढ़ में बह गया। महाराज, पानी आँख मूँद कर चलता है।

पानी – नहीं महाराज, मैं ही हूँ, जो देखकर चलता हूँ। इसीलिए सदा ढलान की ओर जाता हूँ। कभी अपने आप ऊँची जगह नहीं चढ़ता हूँ। महाराज इनके गाँव के पास एक पहाड़ है। पहले उस पर बहुत से वृक्ष होते थे। जब मैं पहाड़ पर बरस कर नीचे उतरता था, तब वृक्ष कुंजों से होकर नीचे आता था। पहाड़ से धीरे–धीरे नीचे उतरकर सीधे नाले में चला जाता था। अब लोगों ने उन वृक्षों को साफ कर दिया है। नाले के रास्ते में घर–कारखाने बना लिए हैं। अब मैं पहाड़ से उतरता नहीं हूँ, लुढ़कता हूँ। मुझे स्वयं यह ज्ञान नहीं होता कि नीचे कहाँ गिरूँगा?

महाराजा – कोई और शिकायत। (कोई नहीं बोलता)

आपकी चुप्पी इस तथ्य का प्रमाण है कि जल प्रदूषण एवं जल से होने वाली क्षति के लिए जल नहीं अपितु आम जन दोषी हैं। आपका भला इसी में है कि अपनी गलतियों को सुधारो

तथा पानी को निर्मल एवं उपयोगी रहने दो। इसकी बचत करो।

दूसरा दृश्य

(वैसा ही दरबार। इस बार पानी की जगह वायु उपस्थित है। वायु एक लड़की बनी है। उसने सफेद वस्त्र पहने हैं, जो परदे के पीछे चल रहे पंखे की वजह से उड़ रहे हैं।)

महाराजा – मंत्री, उन लोगों को बुलाएँ, जिन्हें वायु से शिकायत है।

एक आदमी– महाराज की जय हो। महाराज, वायु पहले की तरह सुगंध नहीं बिखरेती है। दुर्गंध फैलाती है।

वायु – महाराज, यह आरोप झूठा है। अपने आप में मेरे पास न तो रंग है न खुशबू न बदबू। यहाँ के लोग अपने मरे हुए पशु–पक्षी यहाँ–वहाँ डालते हैं। इस कारण मैं दूषित हो जाती हूँ। इनके कारखानों से निकली गैस और गंदगी मुझ में घुल–मिल जाती है। मैं जहरीली होकर रोगों की संवाहक बन जाती हूँ। मुझे आज भी वह काला दिन याद है जब भोपाल के एक कारखाने से निकली जहरीली गैस मुझ पर सवार होकर दूर–दूर तक फैल गई थी और कितने ही लोग मौत के मुँह में चले गए थे।

महाराज, इन लोगों से कहिए कि ये गंदगी के ढेर लगाकर मुझे दूषित न करें। मुझ में जहरीली गैस मिलाकर मुझे प्राणदायी से प्राणहारी न बनाएँ।

आदमी – लेकिन तुम अचानक चलकर हमारी आँखों में मिट्टी डाल देती हो। क्या इसका भी हम तुम्हें न्यौता देते हैं?

वायु – चलना तो मेरा काम है। आप कहते हैं तो लो, मैंने चलना बंद कर दिया।

(वायु बंद हो जाती है। सभी बेचैनी अनुभव करते हैं)

महाराजा – वायु से संबंधित कोई अन्य परिवाद?

आदमी – महाराज, वायु आँधी बनकर आती है और हमारे साफ–सुथरे घर कूड़े से भरकर गंदा कर देती है। इसे कहो, वायु बनकर बहे, आँधी बनकर अंधेरा न लाए।

वायु – महाराज, आँधी से इसका मतलब मेरे तेज चलने से है। वैसे तो मैं अपनी गति से हर स्थान पर बहती हूँ। पर जहाँ वायु कम होती है, वहाँ वायु की पूर्ति करने के लिए तेजी से जाती हूँ। जब मैं तेज चलती हूँ तो इन लोगों का जमा किया हुआ कूड़ा–कचरा मेरे साथ उड़ने लगता है।

महाराज, मैं कूड़ा–कचरा तलाश नहीं करती हूँ। ये लोग ही उसे मेरे रास्ते में डाल देते हैं। मेरे राह में पुष्प होंगे तो मेरे साथ सुगंध उड़ेगी, गंदगी होगी तो बदबू। ये लोग अपने घर–दुकान की सफाई कर कूड़ा सड़क पर डाल देते हैं। पॉलिथीन गलियों–बाज़ारों में डाल देते हैं। मेरे साथ उड़कर कूड़ा वापस इनके घरों में चला जाता है। पॉलिथीन उड़कर खेतों में चला जाता है और इनकी ही फसलों को नुकसान पहुँचाता है।

महाराजा – आप लोगों को कुछ कहना है?

(कोई नहीं बोलता है।)

महाराजा – अभी तो सब कह रहे थे–हमारी सुनो, हमारी सुनो। अब जल एवं वायु की सुनकर सबकी बोलती बंद हो गई। खैर, आपने अपनी शिकायत के प्रत्युत्तर में वायु का दुखड़ा सुन लिया है। वायु को प्रदूषण से बचाना आपके ही हाथ में है। जल और वायु को मित्र बनाएँ और अपना भला करें।

तीसरा दृश्य

महाराजा – मंत्री जी, अब किसकी बारी है?

मंत्री – महाराज, बिजली की।

(अचानक अंधेरा हो जाता है।)

महाराजा – ओह, इस बिजली से तो मुझे भी खूब शिकायतें हैं। आज इसे दंडित करूँगा ही।

(अचानक प्रकाश हो जाता है)

बिजली – महाराज की जय हो, महाराज मुझे दंडित करने से पहले मेरी भी सुनो।

महाराजा – तुम्हारी सुनूँगा। न्याय का तकाजा यही है। जल एवं वायु ने तो 'हमारी भी सुनो' की रट नहीं लगाई थी। क्या तुम्हारे पास कहने के लिए कुछ ज़्यादा है?

बिजली – महाराज, लोगों की जो मेरे प्रति शिकायतें हैं वह मैं ही बता देती हूँ क्योंकि मुझे जाने की जल्दी है।

महाराजा – तुम्हारी आम शिकायत तो यही है कि तुम बार–बार जाती हो तुम घर, खेत, कारखानों में टिकती क्यों नहीं?

बिजली – महाराज, आदमी भी वहीं जाते हैं जहाँ मिठाइयों–पकवानों को खाने का मौका मिले। जहाँ आमोद–प्रमोद हो, मनोरंजन हो, रंग–बिरंगे कपड़े पहनने को मिले।

महाराजा – ऐसी कौनसी जगह है?

बिजली – समारोह, उत्सव, विवाह के कार्यक्रम। आज आपके नगर में कई स्थानों पर विवाहोत्सवों का ऐसा आयोजन हो रहा है जहाँ हज़ारों रंग–बिरंगे बल्ब लगे हुए हैं। दीवाली नहीं है, पर आज दीपमाला के नजारे सारे नगर में नजर आएँगे। मेरे बिना यह कैसे संभव है?

महाराजा – लेकिन कुछ लोगों की शान–प्रदर्शन के लिए नगर–गाँव के सारे लोग तुम्हारा अभाव क्यों

भुगते?

बिजली – महाराज, अपनी मरजी से मैं कहीं नहीं आती–जाती। मेरा स्विच मेरे हाथ में नहीं है। अपने भंडार को भरना, उसमें वृद्धि करना भी मेरे हाथ में नहीं है। यदि एक जगह बिजली का ज़्यादा उपयोग होगा तो दूसरी जगह कमी होगी ही। इस कमी को ही बिजली का जाना कहते हैं।

महाराजा – तुम्हारी शक्ति भी अनियंत्रित रहती है। कभी तेज होकर फ्यूज उड़ा देती हो तो कभी तुम्हारा वोल्टेज इतना कम हो जाता है कि न मोटर चलती है न पंखा, न कूलर।

बिजली – महाराज, इसमें भी मेरा कुसूर नहीं है। मेरा उपयोग सही ढंग से नहीं होता है। आपके महल में सैकड़ों कक्ष हैं। कई कक्ष ऐसे हैं, जिनका हर समय उपयोग नहीं होता है, फिर भी उनमें बल्ब जलते रहते हैं, पंखे चलते रहते हैं। यहाँ जो लोग शिकायत करने आए हैं, उनके घरों में भी बिना जरूरत बिजली के उपकरण चलते रहते हैं। महाराज, आप नगर की सड़कों, गलियों में जाकर देखें। कहीं–कहीं आपको दिन में स्ट्रीट लाइट जलती हुई नजर आएगी। बिजली की कमी या वोल्टेज की कमी का कारण यही है।

महाराजा – इतनी शिकायतें हैं तुम्हारे पास?

बिजली – महाराज, मेरा दुरुपयोग, अनावश्यक उपयोग ही मेरे अभाव का सबसे बड़ा कारण है। मेरा उपयोग मैं स्वयं कभी नहीं करती।

आदमी – महाराज, सुनें? यह बिजली हत्यारिणी भी है। हम रोज देखते हैं कि कितने ही पक्षी इसके तारों से चिपक कर मर जाते हैं। पशु और मनुष्य बिजली के खंभों से करंट खाकर मर जाते हैं।

बिजली – माचिस से चूल्हें में आग जलाई जाए या दीपक जलाया जाए तो वह उपयोगी है। यदि उससे कोई अपना हाथ जलाएगा तो उसका दोष दियासलाई को जाएगा या जलाने वाले को? इन लोगों ने वृक्षों को काटकर पक्षियों के घर उजाड़ दिए हैं। उनके बैठने के स्थान छीन लिए हैं। उड़ते–उड़ते थककर विश्राम के लिए बिजली के तारों पर बैठ जाते हैं। कभी–कभी मौत के शिकार हो जाते हैं। इंसान स्वयं असावधानी बरतता है और अपने पशुओं को भी नियंत्रण में नहीं रखता, तभी दुर्घटना होती है। इसमें मेरा क्या कुसूर?

आदमी – महाराज, आँधी–वर्षा के आते ही बिजली लुप्त हो जाती है। उस वक्त तो इसकी आवश्यकता होती है। यह बिना चेतावनी के चली जाती है।

बिजली – महाराज, यह भी इस आदमी की कर्तव्यहीनता का प्रमाण है। इसका फ़र्ज़ बनता है कि मेरे

चलने के मार्ग का सही और नियमित रखरखाव करें। मेरा अवैध उपयोग होता है, मेरी चोरी होती है। वर्षा–आँधी से बचाव के लिए मेरे तार, खंभे ढंग से रखे जाएँ। महाराज, मैं लोगों के साथ ही रहना चाहती हूँ।

महाराजा – बिजली, तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है कि आज का मुकदमा तुम्हारे विरुद्ध नहीं है बल्कि तुम्हारा वाद इन लोगों के खिलाफ है।

बिजली – नहीं महाराज, मैं किसी को दंडित नहीं करवाना चाहती। मैं चाहती हूँ कि लोग महल से झोंपड़ी तक अपनी आदत बदलें। मेरी फिजूलखर्ची बंद हो, चोरी बंद हो। वितरण सही हो, फिर देखना किसी को मेरा वियोग नहीं सहना पड़ेगा।

महाराजा – मंत्री जी, जल, वायु और बिजली के आज के मुकदमों से यही सिद्ध होता है कि हम में से कोई निर्दोष नहीं है। अपनी आदतें बदलकर और अपने–अपने कर्तव्य पहचान कर, उसे पूरा कर हम सभी को न्याय करना है।

शब्दार्थ

समक्ष – सामने
वाद – मुकदमा
कुपित – क्रोधित
अवांछित – अनचाहा
जोहड़ – कच्चा तालाब
संवाहक – ले जाने वाला
प्राणहारी – प्राणों का हरण करने वाला

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पाठ के अनुसार किस–किस के विरुद्ध शिकायत की गई है?
2. बिजली, पानी व हवा के विरुद्ध शिकायत उचित है या अनुचित, तर्क सहित उत्तर दीजिए।
3. पाठ के आधार पर दोषी कौन है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. किस जगह की भूमि के आस–पास कोई भी जूते पहनकर नहीं जाते थे–

(क) राज दरबार (ख) जोहड़
(ग) बिजली घर (घ) विवाह–समारोह ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. यदि शिकायत सही नहीं हुई तो इन्हें .... भी करना होगा।
2. मैं जिन लोगों के काम आता हूँ वह मेरी .... नहीं करते।
3. लोगों को यही शिकायत है कि पानी अब .... नहीं रहा।
4. मैं जहरीली होकर रोगों की .... बन जाती हूँ।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

लिखिए, किसने किससे कहा–

1. 'लेकिन तुम अचानक चलकर हमारी आँखों में मिट्‌टी डाल देती हो।'
2. अपनी–अपनी आदतें बदलकर, अपने–अपने कर्तव्य पहचान कर, उसे पूरा कर, हम सभी को न्याय करना है।
3. यही कहा जा सकता है कि लोग अपने हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. वर्षा के कम होने के दो कारण लिखिए।
2. कूड़ा–करकट किन–किन को दूषित कर देता है और कैसे?
3. बिजली का उपयोग कहाँ–कहाँ किया जाता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'वायु प्रदूषण' पर लेख लिखिए।
2. बिजली बचाने के कई तरीके इस पाठ में आए हैं, उन्हें विस्तारपूर्वक लिखिए।

भाषा की बात

1. पाठ में 'खुद श्रीमान् बैंगन खाए, औरों को परहेज बताएँ।' कहावत आई है। ऐसी कहावतों को लोकोक्ति व जनश्रुति भी कहते हैं। ये मुहावरों की ही भाँति अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रस्तुत करती हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति का अर्थ है 'केवल दूसरों को सलाह देना, लेकिन उसे व्यवहार में न लाना।' आप भी अन्य लोकोक्तियाँ ढूँढ़कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. पाठ में 'मनोरंजन' शब्द आया है जिसका संधि विच्छेद, मनः+रंजन है। यहाँ विसर्ग (ः) के बाद 'र' आने पर विसर्ग (ः) का 'ओ' हो गया है।. यह विसर्ग संधि का उदाहरण है। अपने अध्यापक जी की मदद से निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए–

यशोगान	वयोवृद्ध	सरोज
मनोहर	पुरोहित	तपोबल

3. निम्नलिखित अनुच्छेद में उचित विराम–चिह्न लगाइए–

अरे आप लोगों को लड़ने–झगड़ने के अलावा कोई काम नहीं है क्या दादी बोली अनुराग तो चुप रह गया राधिका बोली मनीषा कहती है इस जमाने में लड़ना बुरी बात है और आप ही ने तो एक दिन कहा था सत्य की रक्षा के लिए लड़ना हमारा धर्म है

4. पाठ के आधार पर निम्नलिखित को पात्र मानकर एक पृष्ठ में संवाद लिखिए–

(क) पैन और कॉपी

(ख) चॉक और ब्लेक बोर्ड

पाठ से आगे

1. इस एकांकी में आया है ''पानी का पानी उतर गया है'' पानी का पानी उतरने से क्या आशय है?
2. यदि पानी नहीं हो, तो हमारा जीवन कैसा होगा? लिखिए।
3. जिस समय बिजली का आविष्कार भी नहीं हुआ था, उस समय भी लोग रोशनी करते थे। उन साधनों की सूची बनाइए।

चर्चा कीजिए

1. हम बिजली व पानी को कैसे बचा सकते हैं?
2. वायु प्रदूषण व जल प्रदूषण को रोकने के उपायों पर चर्चा कीजिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

सिद्ध, विरुद्ध, चिह्न, मैँ, नहीँ

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''जो मनुष्य सामर्थ्य के अनुसार प्रकृति, पर्यावरण और जीव मात्र की सेवा में जीवन खर्च करता है, वही सार्थक जीवन का सृजन करता है।'

पाठ 17

हूंकार की कलंगी

मेवाड़ रा सारा सरदारां रे नाम हुकम लिख्यो गियो।

''सारा सरदार आप री पूरी जमीत अर पूरा ससतराँ सूधी उदैपुर हुकम पोंचतां ही हाजर व्हे जावै। देर नीं करै।'' हुकम रे ऊपरै राणाजी आप दसगतां सूँ दो ओळाँ लिखी, ''जो हाजर नीं व्हेला वीं री जागीर एकदम जब्त करली जावैला। काँई तरै री रियायत कोनी होसी। देस री विपद री वेळा में हाजर नीं व्हेणों हरामखोरी मानी जासी।''

सवारां ने हुकम रा कागद दे दोड़ाय दीधा।

कोसीथळ रा कामदार रा हाथ में सवार जाय हुकम पकड़ायो, रसीद पाई कराई। बाँच्यो, बाँचतां ही कामदार रो मूंडो उतरग्यो। कोसीथळ चूंडावताँ री छोटी–सी जागीर ही। वठा रा ठाकर दो तीन बरस पै'ला एक झगड़ा में काम आयग्या। दो बरस रा टाबर ने छोड़ग्या। ठिकाणा में नैनपण! राणाजी रो यो करड़ो हुकम!! भगवान चोखी वणाई!!!

टाबर ठाकर, री माँ ई बाळक माथै आसा रा दीवा जोवती आपरी जूण काट री।

कामदार जनानी डोढ़ी पै जाय अरज कराई, ''माँजी साब ने अरज करो, जरूरी बात अरज करणी है।''

डावड़ी जाय कह्यो, ''ठिकाणै रा कामदार फोजदार ढ़ोढ़ी पै ऊभा है। आप सूँ मूंडामूंड बात करबा ने हाजर व्हेवा री कै है।''

माँजी री छाती धड़ धड़ करवा लागी, ''फेर कोई नवो दुख तो नीं आयग्यो।''

डावड़ी ने कह्यो, ''बारणा पै पड़दो बाँध दे, वाँने माँयने बुलाय ला।''

बेटा री आँगळीं पकड़, पड़दा रे सारै माँयने ऊभी व्हेयगी। कामदार फोजदार मुजरो कर पड़दा सूँ बारै ऊभा व्हेग्या। हाथ लांबो कर राणाजी रा हुकम रो कागद पड़दा में माँजी ने झलायो।

''अबै?'' बाँचतां ही माँजी रा मूंडा सूँ कोरा दो अक्खर हीज निकळया। ''अबै आप हुकम दो जो ही करां। ठाकरसा तो पूरा पाँच बरस रा ही कोयनी व्हीया, चाकरी में लेर जावां तो किस तरै ले जावां।'' माँजी री नजर आँगळी पकड़नै ऊभा बेटा री काळी काळी भोळी भोळी आँख्यां सूँ जाय टकराई। माँ री ममता जाग गी। रुं रुं ऊभो व्हेग्यो, छाती में दूध उतरवा रो सो सरणाटो आयग्यो। लारै रो लारै ''जो हाजर नीं व्हेला वींरी जागीर जब्त करली जासी।'' हुकम री ओळां बळबळता खीरा री नांई आंख्यां आगै चमकगी।

मन में एक साथै कतरा ही विचार आयग्या। ''जागीर जब्त हो जासी? म्हारो बेटो बाप दादां रा राज बाहिरो व्हे जावैलो। वीं री पाँच भायां में काँई इज्जत रैवेला? वीं रै बाप नीं रिया पण म्हूं तो हूँ। म्हारे जीवतां जीव बेटा रो हक छूटै, धिरकार है म्हारे मिनख जमारा पै। म्हूं असी खोड़ली हूँ काँई जो पीढ़याँ री भौम ने

गमाय दूँ। म्हारा वंस पै दाग नीं लागै?''

वींरी आँख्यां रे आगै एक तसबीर सी आयगी जाणै वीरो जवान बेटो ऊभो है, सगा परसंगी रोळ में मोसो मार रिया है, ''ये लड़ाई में नीं पधार्‌या सा जो कोसीथळ ने राणाजी खोस लीधी। हें हें हें! यां चूंडावतां ने आपरी वीरता रो घणों घमंड है।'' दूजे ही पल दाँतां री कट कट्यां भींचता बेटा रो नीचो माथो, नीची नजर व्हेती लगी दीखी।

माँजी रा माथा में चक्कर आयग्यो। जवान व्हीयां बेटो ई माँ ने जतरो धिक्कारे थोड़ो। वाँने याद आयगी आपरे बाप रा मूंडां सूँ सुणी जूनी का'ण्यां, लुगायां कसी कसी वीरता सूं झगड़ा कीधा। आँरे ईज खानदान में पत्ताजी चूण्डावत री ठुकराणी अकबर री फोज सूँ लड़ी, गोळियाँ री रीठ बजाय दीधी। पछै म्हूं नीं जावूं?

ई विचार सूँ वांरा हालता मन में थिरता आयगी। नेत्र चमकग्या। जीव सोरो व्हेग्यो। घणां ठिमरास सूँ पड़दा री आड में सूँ बोली, ''धणियाँ रो हुकम माथा पै। करो, जमीत री त्यारी करो। घोड़ां आदमियां ने त्यार होण रो हुकम दो।''

''वो तो ठीक है। पणी धणी बिना फोज कसी।''

''क्यूँ? म्हूं हूँ के धणी। म्हूं जावूँला।''

''आप।'' अचम्भा सूँ कामदार अर फोजदार दोवां रा मूंडा सूँ एक साथ ही निकळग्यो।

''हाँ म्हूं। अचम्भा री काँई बात है। थारै ईज घराणा में कतरी ठुकराणियाँ लड़ाई में झूंझी है के नीं? थाँ कस्या जांणो कोयनी? म्हूं कोई अणूती बात कर री हूँ के? पत्ताजी री माँ अर वांरी ठुकराणी अकबर सूँ लड़ता लड़ता मर्‌या कै नीं? म्हूं ही वांरा हीज घराणां में आई हूँ। म्हूं क्यूँ नीं जावूँ?''

जमीत सजगी। नगारा पै कूंच रो डंको पड़्यो। निसाण री फर्रियाँ खोल दीधी। पाखर घल्यो घोड़ो आय ऊभो व्हीयो। माथे टोप, जिरह बख्तर रा काळा लोह सूँ ढक्या हाथ बेटा री कंवळी कंवळी बाँहां ने पकड़ गोद में उठावा ने आगै व्हीया। टाबर सहमग्यो। बोली तो माँ सरीखी अर यो अजब भेख रो आदमी कुण। गालां रे होठ अड़ातां अड़ातां मां री पलकाँ आली व्हेगी, ''बेटा, यो सब थारे वास्तै, थारी इज्जत वास्ते।''

एक ठंडी साँस रे साथे वांरा होठ हाल्या।

आगै आगै घोड़ा पै भालो

भळकावतो फोज रो मांझी अर लारै लारै सारी जमीत उदैपुर आय हाजरी में नामो मंडायो, ''कोसीथळ रा फलाणा सिंघ चूंडावत मय जमीत रै हाजर।''

हमलो व्हीयो। हड़ोल चूंडावताँ री। हमलो करै तो पै'लां हड़ोल वाळा ही आगै बढै अर सत्रुवाँ रो हमलो झेलै तो ही हड़ोल पै ही जोर आवै। सिंधू राग गावण लाग्या। हड़ोल रै अधबीचै, चूंडावताँ रा पाटवी सळूबर रावजी ऊभा व्हे बोल्या, ''मरदाँ! दुसमणाँ पै घोड़ा ऊर दो। मर जाणो पण पग पाछो नीं देणो। या हड़ोल में रैवा री इज्जत, आपाँ पींढ्याँ सूँ निभाय रिया हां, आज ई आपणी जिम्मेदारी ने पूरी निभावजो, देस सारुं मरणो अमर व्हेणो है। हाँ, खैंचो लगामाँ।''

एक हाथ सू लगाम खैंची दूजा हाथ में तरवाराँ तुलगी।

हड़ोल वाळाँ रा घोड़ा उड्या जांरे भेळै माँजी घोड़ा ने उड़ायो। खचाखच सरु व्ही। तरवाराँ रा बटका व्हेण लाग्या अर माथाँ रा झटका।

माँजी री तरवार ही पळाका लेय री, एक जणा पै तरवार रो वार कीधो, वीं फुरती सूँ वार ने ढाल पै झेल पाछो भालो मार्‍यो जो पाँसळी ने पोवतो लगो बारै निकळग्यो। माँजी री रान छूटगी साथै रै साथै घोड़ा सूँ नीचै ढळकग्या।

साँझ पड़ी। झगड़ो बन्द हुयो। खेत संभाळवा लाग्या। घायलाँ ने उठाय उठाय पाटा पीड़ करवा लाग्या। लोह री टोप सूँ बारै केस लटक रिया। पाटो बाँधवा ने हाथ लगायो तो देखै लुगाई। वठै रा वठै ठबक्या रेयग्या।

''या कुण अर क्यूँ।''

राणाजी ने अरज व्ही,

''घायलाँ में एक लुगाई पूरा वीर भेस में मिली। नाम पतो पूछाँ तो बतावै नीं।''

राणाजी गिया। लोहा रो टोप नीचै गज गज लांबा केस लटक रिया, लोयाँ सूँ भर्‍या चिपक रिया।

''साँच साँच बतावो नाम ठिकाणो। छिपावो मत दुसमण व्होला तो ही म्हूँ थाँरो आदर करूँ। म्हारे बेन ज्यूँ हो।''

''कोसीथळ ठाकर री माँ हूँ अन्दाता'' माँजी बोल्या।

''हैं! राणाजी अचम्भा सूँ कूद्या। थाँ लड़ाई में क्यूँ आया?''

''अन्दाता रो हुकम हो। जो लड़ाई में हाजर नीं व्हे जींरी जागीर जब्त व्हे जावेला। म्हारे टाबर छोटो है। हाजर नीं व्हेणो मालकाँ री अर मेवाड़ री हरामखोरी व्हेती।''

करुणा अर गुमान रा आँसू राणाजी रे आँख्या में छलक गिया। ''धन्न है थाँ!'' राणाजी गदगद व्हेग्या। ''यो मेवाड़ बरसाँ सूँ आन राख रियो जो थाँ जसी देवियाँ रो

परताप है। थाँ देवियाँ म्हारो अर मेवाड़ रो माथो ऊँचो कर राख्यो है। जठा तक असी माँवां है जतरै आपाँ रो देस पराधीन कोनी व्हे।''

ई वीरता री एवज में, थाँने इज्जत देणों चावूँ, बोलो थाँ ही बतावो, जो थाँरी इच्छा व्हे।''

माँजी सोच में पड़ग्या, काँई माँगै, कोई इच्छा व्हे तो माँगै।

वाँरी आँख्या आगै बेटा री वे काळी काळी भोळी भोळी आँख्याँ फिरगी। माँ री ममता झटको खाय जागगी।

''अन्दाता राजी हो अर मरजी हीज है तो कोई असी चीज बगसावो जांसूँ म्हारो बेटो पाँचाँ में ऊँचो माथो करने बैठे।''

''हूंकार की कलंगी थाँने बगसी जो थाँरो बेटो ही नीं पींढ्याँ लग या कलंगी पै'र ऊँचो माथे कर थाँरी वीरता ने याद रखावैला।''

शब्दार्थ

हुकम	–	आदेश	हाजर	–	उपस्थित
दसगताँ	–	हस्ताक्षर	ओळाँ	–	पंक्तियाँ
रियायत	–	छूट	नैनपण	–	बचपन
ढ़ोढ़ी	–	ड्योढ़ी, द्वार	ऊभा	–	खड़ा
सरणाटो	–	सन्नाटा	बळबळता	–	धधकते
ठिमरास	–	धीरज	कूच	–	रवानगी
निसाण	–	ध्वजा	कँवळी	–	कोमल
मांझी	–	मल्लाह	पळाका	–	चमकना
रान	–	लगाम	आन	–	इज्जत
पराधीन	–	गुलाम	भेस	–	वेश / पहनावा
गुमान	–	गर्व	विपद	–	संकट
मूंडो	–	चेहरा	दीवा	–	दीपक
जूण	–	जिंदगी	अरज	–	निवेदन / आग्रह
खोस लीधी	–	छीन ली	हूंकार	–	ललकारने का भाव
परसंगी	–	रिश्तेदार	पै'र	–	पहन कर
कामदार	–	रियासत कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कोसीथळ के कामदार के पास कहाँ से संदेश आया?
2. कोसीथळ किस कुल की जागीर थी?
3. कोसीथळ की सेना किसके नेतृत्व में लड़ाई में शामिल हुई?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मेवाड़ महाराणा की ओर से संदेश आया था–
   (क) समस्त जागीरदार लगान जमा करें।
   (ख) उदयपुर में आयोजित उत्सव में शामिल हों।
   (ग) मेवाड़ दरबार में अपनी उपस्थिति दें।
   (घ) सैन्य बल सहित युद्ध में हाजिर हों। (   )
2. कोसीथळ जागीर में महाराणा के संदेश से चिंता पैदा हो गई क्योंकि–
   (क) कोसीथळ जागीर के ठाकुर अस्वस्थ थे।
   (ख) कोसीथळ जागीर के पास सैन्य शक्ति का अभाव था।
   (ग) कोसीथळ के ठाकुर की उम्र अभी पाँच वर्ष से भी कम थी।
   (घ) कोसीथळ के ठाकुर युद्ध में शामिल होना नहीं चाहते थे। (   )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सळूबरराव जी ने हमले से पहले हडोल वालों को क्या समझाया?
2. संदेश पढ़कर कोसीथळ ठाकुर की माँ ने क्या कहा?
3. युद्ध में घायल महिला को देखकर राणाजी ने क्या पूछा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राणाजी की आँखों में करुणा एवं गर्व के आँसू क्यों छलक पड़े?
2. राणाजी ने उस वीरांगना की सराहना कैसे की?
3. कोसीथळ की वीर माता को राणाजी ने क्या सम्मान दिया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मेवाड़ से आये संदेश को पढ़कर कोसीथळ कामदार का चेहरा क्यों उतर गया?
2. राणाजी के संदेश से माँजी चिंतित क्यों हो गईं?
3. युद्ध में शामिल होने के लिए कोसीथळ में क्या–क्या तैयारियाँ की गईं?

भाषा की बात

1. अग्रलिखित राजस्थानी शब्दों का सामने दिए हिंदी शब्दों से मिलान कीजिए–

ससतर	दुश्मन
पड़दा	शस्त्र
धिरकार	प्रताप
दुसमण	धिक्कार
परताप	पर्दा

2. निम्नलिखित राजस्थानी मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए–

(क) मूंडो उतरणो (ख) आसा रा दीवा

(ग) छाती धड़–धड़ करणो (घ) छाती में दूध उतरणो

(ङ) माथो नीचो व्हैणो (च) पग पाछा नीं देवणा

(छ) माथो ऊंचो व्हैणो

3. इस पाठ में 'रुं रुं ऊभा हुग्या' तथा 'लड़ता लड़ता मरग्या' जैसे वाक्यांश आए है, जिनमें किसी न किसी शब्द की आवृत्ति हुई है। पाठ पढ़कर ऐसे अन्य शब्द छाँटिए व उनके अर्थ लिखिए।

पाठ से आगे

1. अगर कोसीथळ की ओर से लड़ाई में कोई नहीं जाता तो क्या होता? कल्पना के आधार पर लिखिए।

यह भी करें–

1. इस पाठ की लेखिका लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ने लोक कथाओं को आधार बनाकर अनेक कहानियों की रचना की है। विद्यालय के पुस्तकालय से उनकी अन्य कहानियाँ तलाश कर पढ़िए।
2. हाड़ी रानी, पन्नाधाय जैसी महिलाओं ने अपने जीवन से वीरता की मिसाल पेश की है। अपने शिक्षक/शिक्षिका की मदद से ऐसे उदाहरणों का संकलन कर डायरी में लिखिए।

यह भी जानें–

पुस्तकालय से झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की कहानी प्राप्त कर पढ़िए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"दृढ़ता बड़ी प्रबल शक्ति है। मनुष्यों के सर्व गुणों की रानी है।
दृढ़ता वीरता का एक प्रधान अंग है।"

स्वच्छता की प्रतिज्ञा

मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा/रहूँगी और उसके लिए समय दूँगा/दूँगी।

हर वर्ष 100 घंटे यानि हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूँगा/करूँगी। मैं न गंदगी करूँगा/करूँगी और न किसी को करने दूँगा/दूँगी। सबसे पहले मैं, स्वयं से, मेरे परिवार से मेरे मोहल्ले से, मेरे गाँव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूँगा/करूँगी।

मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो देश साफ दिखते हैं उसका कारण है कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते हैं और न ही होने देते हैं। इस विचार के साथ मैं गाँव–गाँव एवं गली–गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूँगा/करूँगी।

मैं आज जो शपथ ले रहा/रही हूँ वो अन्य व्यक्तियों से भी करूँगा/करूँगी कि वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए सौ घंटे दें इसके लिए प्रयास करूँगा/करूँगी।

मुझे मालूम है कि स्वच्छता की ओर बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत को स्वच्छ करने में मदद करेगा।

।। जयहिंद।।

केवल पढ़ने के लिए

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?
कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियो ंमें
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों–हज़ार हाथ?
क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?
सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढ़ाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?
इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?
कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथोड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख?
खून की उल्टियाँ करते
छेदे है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?
थोडा–सा वक्त चुराकर बतिया या है कभी
कभी शिकायत न करनेवाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर सन्देह है!!

निर्मला पुतुल